

लेखक सारू प्रकाशक :
ललित प्रकाशन, जोधपुर-७
पैली छापी : वि०सं० २०३१
कोरणी : गोविन्द कल्ला

मोल : दस रुपिया
Price : Rs. 10/-

कंवल् पूजा

(राजस्थानी भासा)

सत्येन जोशी

(सारा अधिकार लेखक रा)

KANWAL POOJA

(Rajasthani Novel)

Satyen Joshi

Lalit Prakashan
JODHPUR-7

दगर्द :
हिमावय प्रिण्टर्स, जोधपुर

सन् १९६१ में पँलड़ी बार जँसलमेर गया। भर तय पू जगजग जुलाई १९६८ तक उठई रँयो। जँसलमेर री घोगा घरती री हवा भर पाणी मे जाणँ काई जादू हो कै म्हारो मन उठई रमग्यो। जँसलमेर म्हागे रग-रग मे अजू रमे, भर ता-बमर म्हारै रूँ रूँ मे जँसलमेर री सोरंम घावनी रँवेली। मोनै जँई पोळँ भाटँ री हवेलियां, मिन्दर, मूरतियां भर रँवासियां री निरमळ भर साचो सनेह, गडसीमर री पांणी, गोवा चौक भर मोटा-मोटा घोरां री घुड, म्हारै मन नै मोय लियो। लागै कै म्हे जलम-जलम सूनँ जँसलमेर री ई रँवाकी हूँ। छोटै सूनँ मोटो, हर जात-धरम री, दूकानदार सूनँ लेय सरकारी मुलाजिम भर सामाजिक कार्यकर्तावा सूनँ भोळखाण; मोद भर मुळक भरी बाता, भर लाड कोड री मनचारा, कद भून सकूँ? नी भूछू।

राजस्थानी भासा मे लिखण री प्रेरणा मनै भइसा (जन कवि 'उस्ताद') सूनँ मिळी; वारै ई घड़ियोड़ी माटी हूँ।

सन् १९६३ में जँसलमेर हाई स्कूल मे, इतियास रा अध्यापक सरगवासी श्री भभूतिमलजी परमार सूनँ भोळल व्ही। वे ई साच पूछै तो मनै इतियास री अलेकां कथावां मे रम घोळर पायो। वे ई मनै ई उपन्यास लिखण री प्रेरणा दी। ई बिच्चै मास्टर सा'ब अबाणचक देखलीक व्हेगा पण वांगी दियोडी भभूत भजू म्हारै कनै सम्भालियोड़ी ही।

ई उपन्यास नै अकर लिखियो, वेलिया नै मुणायो। वा री समझावण भर भोळावण सूनँ केई कुमिया पूरी व्ही भर उपन्यास री काया पलटगी। कुमियां भजूं वो व्हे सकै भर व्हेला, पण ओ भागै बघण मे मददगार व्हेला, ओ ई विस्वास है।

उपन्यास री भाव भोम भावे सरुपांत में, की कँवणी अबखो रँवेली, पण इतियास री आधार लेय नै उपन्यास लिखणँ रँ कारणी, इतियास री चरवा करण में भगुताई निजर नी आवै।

भूँ तो इतियास री साच, नुंवी-नुवी खोजा सूनँ बदळती रँवँ, ई वास्तं इतियास री आधार कूड़ी पड जावै, पण ई कथा मे, जित्ती बी कूड निजर भा सकै वो कल्पना री साच है। इतियास नै कूड़ी बतावण री हठ नी।

गजनवी री सुलतान मँमूद, ईसवी सन १००४ मे माटी राजा विजयराज माथे हमलो कियो। इतियासकार, माटी राजा विजयराज नै माटिया, मोटा भीरा

अर भाटियानगर री राजा बतायो है । मैमूद रै समै रै भाटी राजा री राजधानी 'तम्रोटे' हो । ई बात री प्रमाण जैमलमे री तवारीख, जेम्स टॉड अर मुंहता नैणसी री ख्यात इत्याद सूँ मिलै । ई सारू म्हागी भी कोल है के भी हमलो तम्रोटे मार्घ दिह्यो ।

प्रो० मोहम्मद हबीब (मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ में इतिहास अर राजनीति शास्त्र रा प्रोफेसर) आपरी पोथी 'सुलतान महमूद अफ गजनी' मे, ई हमलै रा कारण दरसाया है ।

अलजलो अर प्रो० हबीब री कैंवणो है के राजा, हारग्यो अर दुसमण रै हाथे पड़ण री जागा कटार साय भरख्यो । जलो घागै कैंवै, के सुलतान जद पाछो जावण लागो तद बी नै बोत फोडा पड़िया, बी री सारी फौजा मष्ट ब्हेगी अर केकलै सुलतान रा प्राण बचिया । जैसलमेर री तवारीख अर मुंहता नैणसी री ख्यात में लिखियो है, 'राव विजयराम मार्घ सिन्ध कानो सूँ मोटी फौज भाई । राव बडो बलाहा-सिद् ही । बी ऊपर देवीजी री पूरण किरपा हो । वो मन में संकल्प कियो के फौज पाछो जावै तो कंबलपूजा करूँ । बात कियो नै जताई नी । देवीजी रम घाया । बेठ हई । विजयराम जीतो, मुमल भाया । जद राव कंबल-पूजा करण सारू तलवार काधेनू माण्डो तो देवीजी बोलिया, माँ.....माँ..... । म्हे पूजा मानी । अर देवी आपरी चूड़ दी । राव चूड़ासा कहाया ।'

या सारी बातों नै सोचिया-समझियां, जकी नतीजो मिलियो, वो ई उपन्यास नै पड़िया सूँ ई हाथे लाग सकै ।

कथा मे राव अर मैमूद रै इलाका ठूजा नाव, घटनावां अर बलाण, उपन्यास री जरूरत सूँ पैदा दिह्या, बयूँ के इतिहास, अपणें आप मे बोत ई रूखो बिपै है, अर जद तक ई नै चीकणो नी कियो जावै, तद तक भी रुचै कोनी ।

बिश्वास करूँ के भी उपन्यास राजस्थानी भासा रै पढाकड़ा, इतिहासकारां, भासोवकां अर भायेतां नै दाय भा सकेला ।

जोशिया री सटकल'

ओधपुर १०

सत्येन जोशी

कान खड़ा रहेगा । नैण कानों में घुमगा । सुरता, थवण रँ सरणी पड़गी ।

पग, कानां रँ हलाया हलण लाग । भीणी-भीणी चाँदणी बादलां
सागँ घाँल मिचूणी रमण मे मस्त ब्हियोड़ी । काळजँ मे भेक सजब तिरस री तूठणी
रहेगी । मिनखा रा कान, पूरँ सरीर भर मन नँ मिनतर सकँ, आ बात भाज बी नँ
पँलपोत समझ मे भाई ।

नैनी सुई रँ नाकँ मे सूँ निकळतोई पतळें डोरें ज्यूँ, भीणी राग मे गावणे
री सुर, जाणे किए दिसा सूँ भाय'र काना नँ बाध नियो । बावळा कान, बी सुरीली
राग री पीछी करण सारु पगा नँ हुकम हलायो । पग भागँ घपणा सरु धिया ।
रात री पँलो पोर है ।

सबासी तर सबासी । दो दिन रँ भोजकें री घाड़ण । वो दोग्यूँ हाथां नँ ऊँवा
उठाय, सरीर नँ ताणियो, भेक भटकी दिमी भर पाछी संमळियो । पाकेल' नँ बाधियां
भावतो जाण, वो भेक घोरें माथे बैठग्यो । च्याहँ कानी मोठ दोड़ाई भर घोरां री
मुखमली गादी माथे पसरग्यो । मुठियां मे रेत भरनँ, बांसूँ पाछी रेत नँ रळकावण
लागो । सूँ-सूँ करतो बायरियें री भेक झोली भायो । रमत में घान्दी पड़ग्यो । सरीर
में थोड़ी सी पूजणी छूटी । वो ठठ'र घालस मोड़्यो । सबासी, घाणळ खुइकाई,
कपड़ां नँ भटक'र वो ऊनी ब्हियो । भेक छिन मारु नैण मून्दिपा । भांस्या खोली ती
बीं कनँ भेक दूजो ऊमो हो ।

‘बील माऊ !’

‘ठाकरां ! सूट री मास यूँ कीनी पचं ।’

‘हूँ ?’

‘ही ।’

‘मा तलवार देखी ?’

‘सोँ....सोँ....सोँ....!’

‘पणो दाँठा सूँ तोड़ दी ।’

‘हे ?’

‘ही ।’

‘मा तोड़'र बताव, जे जवान री पाकी रहे ।’

‘तट-तट ।’

बीं नँ थँतो भायो जद बी रँ हाथ में तलवार रा दो टुकड़ा हा । वो माव
पेरुसी हो । वो दूजोई नँ जोषण री धरज सूँ मठी-जडी निबरां दोड़ाई, पण कटई

सूँ बास नो भाई । नीचें भुक'र, बी पंजा रा सैनाण हेरण लागी । बी न ऊँघी दिसा में पगरखियां रा सैनाण निजर धापा, पण अँ सैनाण तो बीं रो खुदरी पगरखिया रा हा ।

इँ पैला के, बी कीं सोचें, बीं रे काना न कोई सुर बेघापी । बी बावळें बतूळियें दाई बी उवाज री दिसा मे नाठण लागी । जी दिसा में बी दोइयो जावतो, सांपली दिसा सूँ बादळा रा भुण्ड, चन्दरमां नै डाक'र सपाटें दौड़ रेंया हा । बीं रे सरीर माथे घारी-बारी सर चानणो भर छिया रें-रें नै व्हेती । अँक छिन साह बीं नै धावरी असवारो री चेतो धायी ।

भाज बी घणकरी माल लूट'र लायी है । साण्ड मार्य सोनै रा धाभूसण, चान्दो री टिकलियां भर मोतियां री वेमपार जकीरी । दो मोटा बोरा में लादियोडी । भाज बी अँक चवदे बरस रें खोरें री गरदन उढाई, अँक मन्द री टांगां तोड़ी, दो मिनलां नै सलवार सूँ घामल किया । अँक बीस बरसा री विधवा नै राण्डायें री जूण सूँ मुगती दिराई । सिङ्गा पङ्गा पैला बी सीव में धुसग्यो । अँघ मुलतान रा सिपाई राज रें परधाणे बिना नो भा सकें । बी हमें बेफिकर है ।

हा, म्हं बीस बरसां री जवान हूँ, पूरो साड़ी छै फुट रो, सोनी भ्रमसी घाणळ, हाथ गोडां तक डीगा, रग रातो, डोल लौठो । दकणे मे बीढियोई काच में मूणडी देल मुळकियो । दब्बी खोल, अँक किरचो बाकें मे घातिवी, मूँछां माथे हाथ फेर, बट लगावण साह घाणळो भर भगोठेरें बिचन मूँछां रा नैना बालां नै सेय'र भगोठें री अँक रगड़की लगायो ।

गावणे री भीणो भर मदरी सुर ठेठ कानां कर्न धाय पुगी । हमें बीं रा कान घण उतावळा व्हेगा । बी नै लागो, हमें जे बी इँ सुर नै बन्द नो कियो तो बी री काळजी फाट जासी । बी री अँक हाथ काळजे री जाया जा पुगी । बीं री काळजी जोर-जोर सूँ धक-धक करतो हो । बीं नै पसरियोडा, डीगा घोग रें लारसैं पास सूँ माय री लपटां उठनी सी दीखी । लाय रें मांय सूँ बिणुगारियां फूटती भर बीं रें फूटण रें समवे ई बीसाळया निकळती । बी दोड़ नै घोरें रें हूंगर माथे बढायी । छठें हमे माय री लपटां कोनी हो । बी बीजोई पास री डाळ उतरण लागो । बीं नै मखायो, बी समन्दर रें मांय उतर धायो है । बी री कण्ट मूख रेंवी है । बी दोनूँ हाथ नीचा सेजा'र घोबो भरियो । घोबो भर मूण्डें मे सबइओ लियो । रेत सूँ जीम भरगी । धू-धू कर बी रेत नै धूकण लागी । इनरें मे बी रें काना मे कोई मंथी धुनी मुलीओ ।

'पूनम !'

'है !'

‘भाव, म्हारै लारै बाजा ।’

वी रै भागै कोई नी ही, पण वी नै लागती कै वो कियो रो पीछी करती
वाल रैयो है ।

भागली अंक मन्दर रा किवाड़ खटखटाया । भाप सून भव-भूम भाभरियां रा
बोल सुणीज्या । वो किवाड़ खुलता ई अकार रो पीछी करती भागै बघण
लागी ।

मोजड़ियां बारै खोल, वो पग उबराणो व्हेगी ।

‘पाणी ।’

‘भटै पाणी रो काई काम ? दाह पीवो ।’

वो सुप-सुर सात-घाठ चुल्ला चसोड़ लिया । हमे की मांस में सांस घायी ।
नैणां मे श्रेक चमक वापरगी । हमै सै की ऊजळीं भर साफ दीसण लागी । दस-वन्दरा
अपसरावां रो अक भूलरी भाय, वो नै चेर लियो । वो भागै बघण लागी । घेरी बीं
रै सागै-सागै भागै बघण लागी । सामे सिधासण भाय अंक बीत ई फूटरी अपसरा
बीणां-बजा रैयो है । वो सुर नै मोल्लस लियो । वो अपसरा रो राग खीरै दाई बीं
कानी लपकी । वो नै लागी कै वो बल रैयो है । वो, वो अपसरा कानी दोन्यू हाथ
पसार्या । भूलरी मदीठग्यो । अपसरा वो रै बाधा मे भूलगी । वो नै लागी, वो रै
सरीर मे लाम मुल्लगी है । वो पाछी भूलरै सून धिरग्यो । केर भागै पावण्डा घर्या ।
अक अपसरा मोछी व्हेगी । भीत मायै अक पूतळी मडगी, हाथ मे बीणा लियोड़ी,
भांगळियां तारा नै अम्होड़ रैयो है । नैण भावा मून्दियोड़ा, बा नीची धुन कियोड़ी
मगत है । वो हाथ लगायो । भांगळिया हेम सून ठरगी ।

‘मा तो भाटै रो मूरत है ?’

ही-ही कर भूलरै माय सून अक अपसरा हेनी भर मूरत रै बाजू जाय चिरगी ।
अक पग रै अक अंगोठे मायै पूरै सरीर रो भार समाळ, बीजै पण नै लारली कानी
बोडो ऊँचो कियोड़ी, ई पग रो पजो बीजोई पग रै मोडै रै लारलै हिमै सून घड़ियोड़ी,
अक हाथ सारस रै पंत दाई फैलियोड़ी, हवाळी, ब्लाई सून ऊपर उठियोड़ी । अंगोठे
भर वो रै पासती री भागळी रै मेळ सून अक छल्लो बणायोड़ी । बीजोई हाथ रो अक
भांगळी नीचलै हांठ नै टूँब बाकी भांगळियां अंगोठे मायै अक बीजो सून चिरियोड़ी ।
चितवन बोडो बांगी । कमर मे घोड़ी सी घांट, नैणां मे उम्माद, होटां मायै मोठा सी
मुळरुण । गू यियोड़ा केसां रो चोटी सार गू घांटा लायोड़ी, कमरबन्द सून घोड़ी
नीची । पेट मे दो सळ । सूंटी, फांक रो सकल धारण रियोड़ी ।

अक अपसरा पगां मे भाभरिया बांधण लागी । अक दोन्यू पगां

छोटा कर सारे सून ओढ़ियां नै ऊँची उठाय आपस में चिपोली । हाथ दोनूँ, माथे सून थोड़ा ऊपर जावे । अंगोठा आपस में भिड़ियोड़ा । पूरी छेती माथे घांगलियां आप रो जोड़ागत सून नुक्का घड़ायोड़ी ।

‘ई नै खुद रै रूप रो कीं घणौ गुमान है ? कै पछै घा खुद ऊपर हूळै है ? कद सून दरपण मे मूण्डो देख रैयी है । ओक हाथ सून माँग भरे । भजूँ माँग नो मरीजी ? आ मरीर नै यूँ क्यां कर मोड़ ऊमी है ?’

वो घंटळ सून काच निकाल खुद रो मूण्डो वो मे देखियो । डब्बो खोल’र ओक किरची बाकें में पती । की सवाद लागी । ओक किरची बिसरकी । सीरी धाययो । वो नै ललायो वो हळकी व्हेगी है । जीव में सोराई धाययो ।

ठीक ! तो ई रै गळें मे मूदंग लटकायोड़ी है ? बी रो हाथ मूदंग माथे घाप देवण साह लपकियो । घांगलियो मे ओक भन्नाटो चालायो । भाटै रो भूँडी लागी । वो घांगलियां नै बाकें में घत, चूस ली । बारें काड, दो-चार झटका दिपा । भजूँ भन्नाटो चालती हो । वो घांगलियां पाछो बाकें मे पतली ।

वो गिलानी करी, पूरी सोळा घपसरावां ही । सोळा रो सोळा जाणे भौता में बीड़ियोड़ी । ओक ओढ़िया ऊँची कर, पंजा रै बट, गोडा भुकाय नीची व्हेगी ही । हाथ जोड़’र किलो रै ध्यान मे मगन । ओक री ओक टांग पूठ कानी ऊँची उठायोड़ी । वो टांग रै अंगोठें नै बीं रो ओक हाथ धक्क राखी । बीजो हाथ, माथे ऊपर हवाळी नै मुगट बलायोड़ी । ओक केहँ ओक टांग ऊँची उठाय गोड़े माथे टेक राखी । हाँ, आ बंसरी बजा रैयी है । भरे ? आ ई रो ओक माथण कमर ऊपरले सरीर नै खाँगी कर दोन्हूँ हाथ ऊपर उठाय, मजोरा बजाय रैयी है । ओक गवड़ री मुदा बलायोड़ी, तो ओक ओर नाच में मगन । ओक रै हाथा में सारती रो माळ । हाँ, धो पूजा निरत है ।

वो चमकयो । आ कुण ? सोमी माँ-जायो ऊँची है । घर देखो, हमें तरम कर नैणां नै हाथां सून डाँप लिया है । वो आपरै ओक हाथ सून खुद रा नैणां डाँप लिया । भारी बधयो । बी रो हाथ नैणां सून रिंगस सोनें माथे धाययो । वो खुद रै नीने नै मुठ्ठी में अगल री मसखरी करी । बी रै मुण्डें सून ओक सिमकारी निबळगी । वो दोन्हूँ होटां नै घापमरी मे दबाय वा ऊपर जीभ फेरी । बीं मे लागी बी रै होटां सून संत भूवे ।

हमें वो माँपती चेर् में जाय पुगी । वो सोचियो—सोवां बाने कित्ती घन हो ? कित्ती पुरमत हो ? कंठो चरही हो ? वो मन में मरुद्धर निथो ‘वो ओक मिन्दर पुणवासी ।’

परकपा में बी ओक-ओक भाटै माघो छूटरी गटत कियोड़ी, भान-माँत रा देव

बूँटा । श्रेक-श्रेक भाँटे ऊपर श्रेक-श्रेक जोड़ो लुगाई मरद री, मदगीलाई में भल्लूभियोड़ी । वो निरणै कियो — भागसा लोग कितरा बेसरम हा । मिन्दरां में झँड़ी मूरतियां लगावण री काँई काम ? वो गिणती करो, कोई चार बीसी ऊँर धार मूरतियां री, मुतलब श्रेक ई निकलतो । वो धमल री श्रेक किरची बाकें में पती । हब्बो रै काच सूँ श्रेक मूरत माथे पलकी करण लागी । इतरै में दो लूँठा सरीर वीं री दोनू हाथां री काठा कस'र पकड़ लिया । वीं री घोस'र श्रेक कोटड़ी में लेगया, भर जोर सूँ धकौ देय घांगणे पटक दियो । सरीर मदीठया ।

ई कोटड़ी में सामोसाम देवी री श्रेक मूरत । जगती दो जीतां । धूप पर केसर री घोरम-घोर मंक । थोड़ी सी धूँभी कजलीजती । श्रेक मड़द काळी भंसे जेही डोल, डरावण गेण, मोटी-मोटी काळा केसां री लटा, लिलाड़ माथे तेल चोपड़ियोड़ी । होट झँड़ा राता जाणे रगत येयडियो । उमर घघगावली । पेंतीस-चाळीस रै नैड़ी । सामी श्रेक सोळा-सतरां घरसां री काची कोमल नार उघाड़ै डोल ऊभी है । ई नै कोई लाज-सरम भी कोनो ? वो मरद दाह री श्रेक तासळी धीं री धामियो । वा गट-गट पीयगी । गेणां में उजब उगाव भर, वा ई नु'वोड़ै पुरंस री हचरज सूँ निरलियो ।

‘...तूँ...तूँ...!’

‘हूँ ! भर तूँ...पू...न...म ।’

‘तूँ...भ्यारळो नाँव क्यान जाणे ?’

‘नाँव काँई, म्है त्यारळी पूरै खाँनदान ने जाणूँ ।’

‘पण, तूँ थोई कुण ?’

‘क्यूँ ? तूँ मने उठावण री सोमन नी खादी ? ली, उठाली, हमे ।’

‘पण भी मिनख...?’

इतरै मे पाखती बैठी मिनख श्रेक तलवार वां दोनू रै बिची ताँणली ।

‘बल सूँ जीतो भोगी, उठावो । पण याद राख, भेय धायोड़ी जीवती पाछी कोनी जावे !’

‘मौमजी तलवार...?’

‘नामरद ।’

‘पूँ ।’

‘पूनम !’ वो घाँहियां बारै काह तलवार पूनम सामी ताँणी । पूनम श्रेक सात री मारी घर तलवार नीचे पड़गी । पूनम तलवार माथे पग पर बोली, ‘नामरद ! बल रहे तो उठा पग, घर से मैं तलवार’ ।

वो पूरी तागत लगाई पण पूनम री पग टस सूँ मम नी भिड़यो ।

'ठीक, म्हे क़ैसली करूँ ।' नारी मुर बोल्थी ।

'मन्ज़ूर ?'

'हाँ ।' दोन्हीं हँकारो दियो ।

'कंवळपूजा करे सो मनो पावै ।'

'कंवळपूजा ? म्हे की नी जाणूँ । पूजा म्हे किणी रो नी करूँ । पूजा तो सोग करे म्यारळी ।' पूनम बोल्थी ।

'म्हे करूँ कंवळपूजा । मनै भौई पूरो विसवास ।'

'सून्दी नेण !'

'सून्दिआ ।'

पलक झपकता ई बी भौसे री भूषणकी आगणे खिरगी । नारी बी रै ठोकर मारी ।

पूनम रो हाथ पकड़ नारी बी नै बारै स्वाई । अन्धारै मे जागे कितरा पागो-
लिया खड़ी, उतरी, फेर खड़ी । अन्धारो अण्णवाग, सूम्मे नी, हाथ नै हाथ । पूनम भै
लागी, कोई बी नै काठो भीच लियो है । बी नै कठई सूँ निवास मिळ रैयो है । बी
रो पूरो सरीर अक उजब तण्णोव में टूटण जागो । वो बाबळी ग्हे ज्यूँ जोर-जोर सूँ
बकण लागी, 'यसोघरा...यसोघरा' ।

'पूनम !' नारी कड़क'र बोली ।

'काई ?'

'है यसोघरा नी, चम्पा भौई चम्पा ।'

'तो यसोघरा ?'

'मुळतान रो राजकंवरी ? बापड़ी हमे देवदासी बणगी भौई ।'

'पण म्हे तो सुणी कँ बा...?'

'हाँ, म्हे बी बी रै बारै मे सुण राकी भौई भर काल नै सोग म्यारळी बारै मे
बी चणकरी बात करैला । खैर ! तूँ मिळबो चाधे यसोघरा सूँ ?'

'हाँ, काई बा...?'

'हाँ, भौई । पण तूँ देख नै बीके तो नी ?'

'म्हे काळ सूँ बी डरूँ कीनी ।'

'काला, काळ सूँ तो मे कोई डरै ।'

'है कीनी बीबा !'

'तो पछे आव घाज तने मिळाय दूँ काळ सूँ ।'

चम्पा, पूनम नै नागा घोरां माथे ले घाई । बा घजूँ उघाड़ी ई ही । पूनम
रो आनखो मे बी नै निरख, पूनम रो आख्या फाटी रैगी । बीर-बीर वो चम्पा रै
का नै नेणी सूँ पीवण लागी ।

‘तैनें सायत परमातमा खुद बैठेर घड़ी हंती?’

चम्पा खुद री सोभा सुण सरमायगी भर नैण नीचा कर सिया । नैण नीचां करता ई, धीं नै चेतो आयो के वा.....साज छिपावण सार कीं कोतो हो । वा पूनम रै सरीर सूं डांप लीवो खुद री लघाड़ो देही ।

धीमै-धीमै पिघळण लागी हेम । अचाणचक बतूळियो बावड़ियो ।

(२)

तनोट, धूड़ रै समन्दर में बसियोड़ी है ।

घटै सूं बीस-पच्चीस कोस दक्खण-पूरब मे मगरा भर छोटा-मोटा जंगर हण बात री साख भरै कै कोई जुग मे घटै अघाग समन्दर हवोळा सेतो हो ।

भाटी राजपूता रै हण दुरगम गढ तनोट नै पास-पाडोस रा रेंवासी ‘नगर’ भर सुलतान मीमूद गजनवी भर उल्बी भाटिया नगर रै नांव सूं घोळलै । तन्नोट गढ री निरमाण, राजा केहर, आपरी कुळ देवी तन्नोराय रै नांव मार्य सख करायो पण गढ री निरमाण पूरो भ्रिया पैला ई वो देवलोक भ्हेनी । धीं रै सारै धीं री बेटी राव तन्नो, ई गढ री निरमाण पूरो कियो । तन्नो री पाटवी बेटी राव विजयराज हो । तनोट रै पच्छिम में सिन्धु नंदी बौवती, भर उठै ई सिन्ध प्रदेश हो जठै वाराहा री राज हो । दक्खण-पूरब मे मुल्तान री राज हो । वाराह राजरी सीवा, तनोट राज सूं मिलती हो, ई वास्ते छोटी-मोटी खटपट रात-दिन भ्हेनी ई रैती । वाराह, भाटिया री बाहुरी भर चुतराई सूं भन ई मन मे बळता । वे भाटियां रा दुसमै भ्हेगा । वाराहां री भी कील हो कै तनोट री जमीं वारी है भर भाटी लठै मांडाणी कग्गी कर राखियो है । ईं सार वाराह, मीमूद री पूरो इमदाद देवण री वचन दियो ।

मुल्तान में लंगा राजपूता री राज हो । लंगा री बी तनोट माघे आंस भळतो । वां री बी भी ई कंवणी हो कै भाटी राजा वां रै राज री अणकरो जमीं दाबसी है । विजयराज रै बाप तन्नो रै जीवतां यकां बी वाराह भर लंगा मिल’र मुल्तान कांती सूं तनोट माघे हमलो कियो हो । च्यार दिन तक घमसाण लड़ाई चाली । लंगां साथै म्लेछ, यवन, खिची, खोर, जोड़्या, जुद भर सम्यद इत्याद भी पोहां माघे बैठ, तकरीबन दस हजार री फौज लेय ने घावी कियो । ईं में वे खास रूप सूं हुरीन शाह री इमदाद लो भर बी ने अगाडी कर दियो । चौथे दिन राव तन्नो आपरै बेटे विजयराज रै सारी दुरग सूं बारै घाय जुह कियो । बाप-बेटा मिल नै दुममणा ने भूषडा रगदोलिया । सबसूं पैला वाराह भागिया । वां पछे सेंग यवन,

भलेछ, लगा इत्याद जान बचाय उल्टा पगो भागा । ईं जुहू मे भाटियां री जीत सू डरने, झूटा (बूटा) राजपूत, विजयराज साह नारेळ भेजियो घर भावरी बेटी परणाय बेलीयो कियो ।

तन्नो पाछे, राव विजयराज सिधामण सम्भाळियो । की बरसां पाछे मुल्तान माथे घरब रा करमाती मुसलमान चढ भाया घर लगां री जड़ा छोद दी । राजा मारघो गयो ।

तनोट रें उत्तर मे शाहीबंस री राजा जयपाल राज करती । बीं री राज पंच-रथ [पजाब] नांव सूं भोळखीजती । अठे री राजा अनंगपाल मीमूद गजनवी री बीत बीरतां सू मुकाबलो कियो पण जीतण साह बीं कने फौज घर साधनां री कमी हो, ईं वास्ते दुखी होय'र वो बळने मरग्यो । बी रें लारें बी री बेटी जयपाल गादी माथे गेठी । वो भापरें भापरी बदेळी लेवण साह बीत मोटी फौज खड़ी करी घर हिन्दू राजावा सू मदद मांगी पण मीमूद री फौज रें मुकाबलो वो बी नी टिक सकियो क्यूं के हिन्दू राजा बी री मदद करी कोनी । वो गजनवी मे चौध देवणी कबूल कर, पिंड छुडायो । भाटी राजा, ईं जयपाल रा मातेत हा ईं वास्ते वानें बी गजनवी मे चौध चुकावणी ही पण वे चौध देवण सू नटग्या । ईं वास्ते गजनवी, भाटिया माथे हमलो करण री सेवकी ।

तनोट रें दक्खण मे लोद्र वंस रें परमार राजावा री राज ही । ईं री राज-धानी लोद्रवा ही, जठे सूं होय'र काक नदी गेवती । भी इलाकी मगर री है घर सदाळ रें लागती ई है ।

पूरब दिस कानी भाटियां री राज झूब फैलियोही हौं घर मळगी मळगी जाम मण्डावर [मण्डोर] राज री सीवा तक पूणती । मण्डावर राज फळोदी तक भायोही हौं ।

भारत सूं अरब घर मध्य एसिया सूं जुगा पुराणी बीपार री खाती ही । यां देसां री भारत सू बीपार, काबुल, कन्धार, अफगानिस्तान, सिन्ध मुल्तान घर भाटी राज रें मारग रें जरिमे ब्हेती । अरब देसा रा केई मोटा-मोटा सोदागर भारत में बीपार यातर भावता-भावता रेंत । मध्यभारत मे जावण री सुभीती री मारग सिन्ध, भाटिया घर अठे सूं बाहुड री ही । बाहुड, पुण्यां पछे अक मारग गुजरात कानी जावती तो दूसी पूरब घर उत्तर दिस कानी । ईं मारग मे तनोट री साम गेतब हो । धोरां रें अवाग दरियाव मे घो म्हांन अक टापू दोई हो । जातरा सूं धाकिघोड़ा, मूला-तिरसा सोदागरी ने अठे आय मुस्तावण री पुरमत मिळती । अठे री जळ इम-रत दाई हौं घर ईं घरती री नेह वारी सारी धाकेली मिटा देती । ये मोंग अठे दो-चार दिन धारांस करने पछे भागे जावता । राजा सूं इजाजत लेय घे सोय दो-तीन रेंग बतेरा अठे बलुवाया ।

राजा की इण सहूलियत भर दरियादिली रै बढलै अँ योग राजा ने नेग चुकावता भर भरब री केई कीमती चीजा, गलीचा, फानुस, मेवा, मुखमल, जरी इत्याद राजा रै भेट घरता । हरेक भेट रै साथे अँक असफिया सँ भर्गोड़ी चान्दी री घाळ बी व्हेती । या री बोली भर बरताब बीत भीठी अर अपणायत भर्गो हो, ई वास्ती यां लोगां सँ परजा री बी बीन मेळ-जोळ बघायो । यां लोगां रै परताप सँ ई भाटी राज इत्ती बीमघसाळो हो । रैतां-रैतां कीं सोदागर भठे ई बसग्या । वे लोग भठे बडा-बडा गोदाम बणाया, बगीचा लगाया भर केई कुवा भर तळाव खुदाया । ताने ई घरती सँ झँडी लगाव स्थियो कँ वे भठे टाळ खुदरे मुलक मे बी पाछा जावण साह राजी कीती हा ।

(३)

बूटा राणी, लाळसा भरी निजरां सँ पापरी मानेनण डारंडी गुलाब कानी देल मुळक दी ।

“गुलाब ! आज तो तने देलिया ई नसी चढ़े ई ।”

पछे एक ऊण्डी सांस खंचना यकां महाराणी केरुं बोली—

“जे तू मड़द व्हेती ?”

“इत्या करी महाराणी सा ।”

गुलाब, राता मदमाता नैया यार्य पळकां री सांधी पेड़ो करेता थिकां बोली ।

“आज समस घली भौई, गुलाब ।”

गुलाब लिडकियां रा किवाड़ खोल दिया भर चंवरें हुंसावण लागी ।

“गुलाब ! तिस लागी ।”

भारी मांय सँ केवड़े जळ री गिलास भर, गुलाब महाराणी नै निजर केरी ।

“तू, मजू काली भौई ।”

गुलाब सकै सँ मुकडगी ।

“तू नाड भौई, घणसमझ, डोकी ।”

गुलाब रै नैयां री रातड़ भर चैर री गोरी रंग, पल भर मे उडायी ।

“लिडकियां बन्द करदी ।”

गुलाब लिडकियां बन्द करदी ।

“अंध घा, म्हांजे नैडी ।”

महाराणी गुलाब नै खुद रै नजीक खांच, वो रै गोल ऊपर तक लया र मेक

साब्यी सास खांची ।

“है, गुलाब ! तू साच-माच गुलाब भौई यो ई रंग, यो ई रूप, यो ई सुगन ।”

मुरझायोडी गुलाब री कळी केरुं खिसगी ।

“भ्यारळी कांचळी रा बघणा दोसा कर, जीव घबरीजे ।”

दो हाथ महारांणी री बसर कांनो बघिया, घांगळियां रें परस मूँ महारांणी
रें सरीर मे भरणाटो चानख्यो ।

“गुलाब ! तयारळो घांगळियां सून ती लाय सिल्लयें ।

घांगळियां वाकें मे घत गुलाब वांनं ठण्डो करणु री कूडी कोसिस करी ।

“उमिया !” दुजो हावडी कोनी देख महारांणी बोली ।

“मधदाता !”

“तूं म्यारळी मूण्डो काई देखें ? जा चमेली री चोटी पकड़ स्याव ।”

उमिया चंवर घागएँ मेल भोय सून मदीठगी ।

“किस्तूरी !”

“इया व्हे तो पलकां निछाळें ।”

“वी, म्यारली नुंवी मोदणी में तारा ऋङ्ग्या कें नीं ?”

“चन्दरमा री कसर भोंई ।”

‘जा स्याव, देखो’

किस्तूरी चढयो ।

“दाखू !”

“मधदाता, कोई कसूर व्हेयो काई ?

“मवें केसां मे मणुतो तेल मत सपोळ, जा श्हावण री सार कर ।”

दाखू दांत काढती दडबडीमगी ।

“सुन्दर !”

“माई-बाप, हयाळियां में थुकी ।”

“इवें पग भारणी घणी व्हेगी । देख ! हें हावें पग नें मणी दाब दिया ।

खैर, जा, दाता रें मैलां मे भीठ नाख ।

सारें रेंगी गुलाब हावडी, महारांणी री खास मानेतण ।

“गुलाब ! भेष भा म्यारली नैडी । भरे ! घाज तू कुम्भटापोडी मयूँ
भोंई ?

“ती केत ? ऊ हूँ, कोनी ।”

“गुलाब ! तयारळें सरीर में काई बेप भोंई जीव नी व्हे कें तेंन छोडूँ ।”

“छोड़ दी, महारांणी सा, व्हे, व्हे.....”

“तूँ मनै तोड दे गुलाब ! भाग दे, मनै मरोड नाख ।”

“महारांणी सा ।”

“गुलाब ! जाणें मयूँ मनै मसावें, तूँ सुगाई नी मइद भोंई”

“महा.....”

“गुलाब ! तयारळें सरीर में उजब सुवन भोंई नैणां मे उजब मस्तो, परस
भरणाटो ।”

“है, है—”

“हां, गुलाब ! जाणू वयूं त्पारळें परस सूं है बावळी व्हे जावूं ? म्यारळी कांचळी

“कसदू ?”

“नी खोलदें भर हा, म्यारळी मोढणी ?”

“डील ऊपर—”

“नी, बीत तपत मोई, डील उघाडो ई सवावें ।”

“महाराणी सा”

“हू”

“साथळां ती—”

“है, काली किणी री देखी मोई माणळा मंडी ? वेळें री पम्ब देखी ?”

“है ।”

“हां, देख, से की देख” ।

जाणू वयूं गुलाब नें ललायी कें वा लुगाई नी मडद मोई, बी रें सरीर मे भेक भरणाटी, सरीर मे भेक सुगन, नैणां मे मस्ती, परस में चिणगारी मोई । वा, महाराणी नें काठी पकड'र बी सूं कुस्ती करण री लेवडली । महाराणी मुखमल रा नरम गिईं मायें सुटण लागी । गुलाब री पांखडिया बिलरणी । पचाणवक भेर बाजण सूं रामत मे घान्दी पडग्यी । संग डावडियां दडबडावती भाय पूगी । डील उघाडो महाराणी नरम सूं भाख्यां भीचली ।

(४)

घरां में घुसियोडा गैला, दिन ऊगता ई धाडूं दितारवां मे निकळायो । रात री ठस्योडी मून, बंतळ री गेडियां रें सारें पाळो चालण सागो । डांगर, दुवार्च्या हुन्दा पाण छोड, गळियां सूं बजार भर बजार सूं रोई रें मारण चराई भर पेट भराई री जुगाड मे जुडग्या । बामण, मोळी लटकाय, पेटियो पकावण री पुन मे घळू ऋग्यो । घट्टियां सूं घमोडा साय, घरवाळियां, पिणयारियां री पलटन बणाई । बेरें ऊपर खाली पडा री घरणाट, टेकली री ढोठाई नें फटकारण लागे । बाणियो, बोवणी री बिळिया सूं बन्धियोडो, कलेवी सार्य घात त्यायो । बाळद, बजार में पगत जमाय बिकण री बारी बांधण सागो । डेरें रा ढोडोदार, घमलवांणी कर, हधाळी री रंग पाकी कियो । मिस्त्री रें घरम सूं घापियोडो, मडकल मुकनी; माडोणी मन नें मार, बजार री नाड पकड, माया रें भंवरजाळ में भंवायो । बीने बेंठोडो बनडो मूँछां छंटावय, दरपण मायें दोरी व्हेण लागी । रूवाळो, मदगेल में भांक्रियां रा भिणकारां सूं मर्योडा कानां, पिचडियोडा नासां भर खुंझी घालियो

नं मोणी देवतो, रमत मे लागो । हळधर, नुबे नारां री जोडू री पूछां मरोडू, हळ हांकण लागो ।

रेण भर ठागी सूं सुकडीजता चूलां रें नख सूं, निवास घर नाक सूं, घूबो कडण लागी । छोरिया, गोबर री उडीक मे गळी गळी री परकमा में पाद सूं पण री मोयना तोडण लागी । फूसियो छांभा नै हाकल करो । साण्डां री टोळी लेव फोसियो घोरां मे घमा चौकडी माण्डो ।

सं की बो ई है । रात नै जकी काम मधुरो छोड्यो हो वो भाज पूरण करणी है । काल रें उधार की भाज भुगतवाणो है । भावण वालै काम री जुगत, भाज रें सवाल सूं सैधी है; भगडा-भगटा, पूजा-पाठ, लेण-देण, व्याव-सगपण, सिरावण-व्याणू, भमल-दाकू, गेर-गोठ, भगडा-सम्प, सुख-दुख, डोर-मिनल दिवस-रेण, लुगाई-मडव, छोरा-छोरिया, जड-चेतन, राजा-रंक, सर्गा री भेक पढ़पंच । घकै, बी नै घकावो की चुलावो, की घुडावो । कौं पड़ी, कौं मांगी । मरो-मारो । जलमो-मरो । परणी, भेक सूं दीय, दीय सूं चार घर भागै जितरी सरधा उतरी समा । उमाव, पोमाव, न्याव, इन्माव, बणाव, देखाव, लाह-प्यार, भगडा घर सम्प संग वे ई खेल । कीड़ियां रमती भाई, भापां रमां, भावण वाला रमती । श्री ई रासी, श्री ई पासो । डाढो-डाढ बँवतें पाणी रें रेलें वाई है जीवण ई नगरी री । संग भावर हाल मे मस्त; काम मे कळीजता । घालल उडावण सारू भमल, दुल बिसरावण, मदगल उपजावण दाकू, जूण सुपारण सारू दान, पुत्र भजन, भाव, पूजा-पाठ । बस्ती काई है, नरसिंगां री न्यात जूझारां री स्वात, मिनल जूण री भाट, श्रीजो रा ठाठ ।

इतिमास घणी पुराणी कीनी, पुण पांणी परलियोडी तसबारां री पळकी, भजूं भांलियां मे बिलकी करे । बसतां ई तनोट नै जूझणो पड्यो पाडोसियां मू । पाडोसी, जका, धीत पाळण री जाणा, ईडे बांधी, समर री जाणा साकी भाण्ड्यो । श्री ई कारण है कं तिलवार रें जेक कीनी लागी । बांधां मे बांधां सातर दोम नो रेयो ।

बोलती गांठी रें घवाणुजेंक भेक घंघकी लागी । पडई मे बळे पडंगी, बळेंदां रा नधूण। कुनमा, पिण्डलियां मे मछियां चड्यो । शींगडा जमों मे घुमोड, वे जोर मू हांक मारी । ऊपर बँठी संग सवारियो दिघकें सूं हडबडामो । गीत री सार रेंपोही कडियां, सटकमी । मूछां रें बट देवता, तिरछी निबेरा सूं गोरंध्यां नै निरसता मतवाळा मोठपारा रें मूछा रें बासां मे ताण घाययो । नेणां मे मदरी जाणां, श्री, घचुम्बो घर सोई उतरयेथी । बेर रें टेठ मूडें भागै भांयोडी देकतो । गिड-गिडी रें गणुण-गणुण भूमण रें सागै ई पांछी गंटी बीड्यो । हायां सूं रास घूटयो ।

जे मिहकर भाग्यो । बावण रें हाय मू पेटियो वड्यो । दो गूलरिया, चीऊ एक दुबै भागै टूट पड्या । बांधे बिसरियोडी बावरी नै पासनी ऊमो भेक

गाय घाटगी । एक बी रें सींगां सूं भिदरए लागी तो बीजोही बी री पूछ माँवण
रें सोम मे जबाहं मायें सात साय गानदानी गुर मे घनायए लागी । पिणमारयां रें
मायें रा घटा घड़ाघड़ घूड मायें दुट्ठया । हड़बड़ाट मे घायी मूती कर, भागए री
फिहर मे, भूरियो भोबो घोनिये री साग देवली भून्गयो । बोघी, बाणियो ऊकचूक
ह्मे, दो रा पार घड़ा गिणया । लिया बी मू दूणा रिपिया गिरायक नै पाछा
पकड़ा दिया । चोमां रें हाथ मूं सीजियोही पाट री हाँहो छूटगी । गुरमनी तोगरें
री जागा, बल्लनी ऊगळो भास लियो । बड़ियो तिणयतां री जागा खुदरी पार
घांगळियां बाडली । रमभूही केंका भरियोहें टाबर नै साक मे दाब, सेंग गावा, गोबर
मू लपोळ लिया ।

इम, इम, इम, इम, घड़, घड़, घड़, घड़, घड़, घड़ाघड़, घड़ाघड़ गम, घड़,
घड़ाघड़, घड़घड़, घम । पूं पूं घं, पूं, पूं पूं पूं घं, घड़ घम, घड़ घम हक
रकर बोही बोही ताळ मू च्यारूं मेर गुंजयी । बस्ती रा सेंग सोण हाथ रा काम
छोड़, घड़बड़ाप घरां रें बारणं घाय ऊमा । सेंगां री निजरां गढ़ रें बीं घुरज मायें
घटकगी जठं सूं घामं नै गुंजावए वाळा ततीड़ा ऊडता हा । सें कोई बमना भिप्योडा
भेक बीजें नै पूरणे लागे । उजब मी घबरा'ट सूं काळमी थक थक करए लागी ।
गूधी बैयती गंगा मे बिना कोई हड़बड़ाटें रें अचाणवक मायें हें तोफाण सूं च्यारूं
मेर गार-गेर मचगी । जीवण अनिश्च मे भूतगी । घावण वाळं काल रें भी सू
उजब घणघणावणी घावण लागी । समझारां री जुम्मी बघयी । घण-समझा
सातर घाडी ग्हेगी, टाबरां रें रांमत एण माइतां सारू भाफन भा पड़ी । लुगायां
चूई मायें घड़ी घड़ी हाथ फेर, ऊँची चढ़ावण लागी । तीर, तलवार, भाला, खाण्डां
री साळ सभ्माळ ग्हेगी । देखतां देखता चौबटे मे लोक घणमावती भेळी ग्हेगी । पलक
भयतां च्यारूं मेर ऊँटां मायें मागी तलवारां लियोडा घसवारां री ताती लागरयो ।
सेंग भेक दूजें रें सामो जोवण लागे । "भा भेर बयूं बाजी भाऊ ?" भेक प्रधगावळी
उमर री मोट्यार, पाखती ऊभे भेक दूजें मोट्यार मे पूछयी ।

"कोव घौई ?"

"कौ री ?"

"जुट री ।"

"साकी ?"

"है ।"

"घांवी ग्हेगी" भेक तीजी मिनख बिच्चें बील पड़यी ।

"कुण घौई घाडवी ?" पैलोही मिनख पूछी ।

"ग्वै कुण ? भापां रा पाडोसी, कं लगा, कं वाराह ।" तीजोही मिनख पाछो

उपेली दिया ।

"है । वां री बापड़ा री बाई हीमत ? घामलो बी लायोही कोनी खूटी"

दूजोही मिनख बड़की दिया ।

“हाँ, सो तो भौई । पण घापणी तो वां सूं ई दुसमणी भौई” तीजोड़ी मिनल घापरे कथण रे सबूत मे तरक दियो ।

“दुसमणी रो काई ? आ तो करी घर वही ।” दूजोड़ी मिनल बात घागे बघाई ।

“पण ‘राब’ तो खुद चला’र की सूं ई बैंग कोनी घालियो ।” पैतडी मिनल डरती डरती बोल्पो ।

“तूँ केरूँ नाड ग्हे ययूँ बात करे ।” दूजोड़ी मिनल थोड़ी थोड़ी चढ़ा’र बोल्पो ।

“अरे, घां ययूँ घापसरी मे झळूभा ?” श्रेक होकरो बीच मे पड्यो ।

“झळूभां कोनी, ई नाड रो बात भौई । समझे ई कोनी ।

“समझो तो घा तीनूँ जणां ई, पण ऊण्डो जाता नै समझण सारू मोःघा जोडजै” बूढी खुद रो मूछां मर धोळी दाढी माथे हाथ केरता यकां बोल्पो ।

“हाँ, ग्हे तो घान खाकां ई कोनी” दूजोड़ी मिनल थोड़ी मूण्डी मचकोळ’र बोल्पो ।

“हाँ, समझ रो ठेकी ती या रे नावै ई गिहयो भौई ।” तीजोड़ी मिनल पैतडी रे टिहली देवता यकां श्रेक भालि दबाई ।

“मला घरां रा दीसो घां दोम्बू” बूढी थोड़ी दुखी गिहयोड़ी बोल्पो ।

“सो ती भौई” दूजोड़ी घर तीजोड़ी, दोम्बू येके लागे बोल्पा ।

बूढी बिराजी होय’र बीजी कानी मूण्डी केर लियो । तीनूँ जणां हसण लागे ।

तड़ तड़ तिड़ धिम, तड़ तड़ तिड़ धिम ।

“नगरवासी हुसियार । बेनियां, बूढ़ा, मोठ्यार । जीवणी ग्हे ती द्यो तसवारी रे घर, के मर, के मार, जलमभीम रो भार उतार, सुरगा सिघार, दुसमण नै फटकार, हाथां सूं नीसरयोड़ी भगत, कोनी घावै बार बार । जे मां तन्नी रो, जे राव विजय राज रो । तनोट रा सेग मढ़द-मोठ्यार, बूढ़ा, जूझार, लुगायां, टाबर पावणां-पाई, सेग मुण्णी भाई । अपरंच राव विजयराम भाटी रे राज रा लुगायां-मढ़द । बाँव मुणाळें पांनडी, इग्या दरबार रो । सगळा सुण्णी कान छोल, सीवाई चढ़ घायो दुसमण, बीं नै द्यो रगदोळ ।

मरदां मूछां देवी बट्ट,

दुसमण हाकें जायें नट्ट,

तसवारां रो परतो पांणी,

भाटी मूळ रो साज बचाणी ।

मरदां जुद्द री करो तेंग्यारो,
जलममोम प्राणां सूं प्यारो ।
घण, घन, टाबर नै समझावो,
ठीक ठिकांणी, बैंग पुगावो ।
मोसर-मियां घाज सूं टोटें,
नगदो-गेणा द्यो भाखोटें,
जमा राज मे करदयो सारा,
घान, घास, घी रा भण्डारा ।
माथमते गढ मे व्हो भेळा,
राव घोष, हग्या देवैला ।
इण हग्या नै जो नी मानें,
उणरो वण्ड राज दे जांणें ।

तड तड, तड धम, तड धम, तड धम,
तड तड तड धम, तड धम, तड धम..... ।

(५)

ओढियो लवार, रैवती राइको, वीरमो मांवी, सांवती सोनार, नैवली नाई,
भूरियो भाट, घुनियो चारण, बिरदियो बाणियो, कोढियो कुमार, बादरी बढियो,
खोमडो खाती, भोमो भील, मुकनो मीणो, पेमियो पंवार, रुधियो रावत, कितनो
कलाळ, देवो दरजो, करणो करसो, किरपू किराड, मंगलू मांगणुवार, घामजी
घाचारज, भोमजी भाटी, सोमजी सिसोदिया, रुघजी राठोड, लाखणजी लक्ष्करिमा,
तेजाजी तोमर, परठापजी परमार, बरजागजी बूटा, लूंकजी लंगा, जवारजी जैन,
बालूजी बुघ, सुरजोजी साकळदोषी घर घीगडजी घाडेत, सैंग गढ में भेळा व्हिया ।

राज दरबार साखो । राव विजयराज पयार्धा । सैंग सोप ऊप्रा व्हे, खम्मा-
घणी भरज करो । निघरावळ व्हो । राव सिंघासण माथे विराजमान व्हिया । पुलजी
प्रोहत, राव ॥ हग्या लेय, नगरवासियां नै तेडावण री मत्तो समझायो । जलममोम
री रुलाळी खातर तन, मन, घन भरपण करण री सीगना व्याखूं मेर गू जी । जें
तप्तो देवो भर जें राव विजयराज री घुनियां सूं घामो गूजण लागो । राव घेक घेक
मानखे सामो निजर फेकी । जी सूं धी राव री निजर मिळो, वो घनमाण व्हेगो ।
राव साखु जीवण भरपण करण री हूस खोवडी व्हेगी । जोस री उजव समो
बंधायो । बाभा फडकावता सैंग गढ सूं नीचे उतरिया । नैणां सूं नीन्द रेण भर
भाखमिचूणी रमती रैयो । सुपनां मे केई साका मंडग्या । केई गमग्या, केई रमग्या,
केई जुभार व्हिया, केई बेमार व्हिया, केई मुळनिया, केई भुळसिया । स

राण्डोली व्हेगी पून रा लीरा, सूना भांगणां सूं ममखगियां करण लागी । गूलरिया, पाणी साहू विलखण लागी । पिरुघट रें पोचो फिरगी । डाळा मूना व्हेगी । नागा रुंख, मूलर हूँठ व्हेगी । अक रात भर जाग रेयो, बीजी रात, बायो बातां गी बंतळ, तीजी रात, बारियां वन्धगी, चौथी रात, हुई अणमन्वी, पाचमी रात कंवारी, बीतगी । छठी रात, सातमी रात, आठमी रात भर नवी रात.....भर गिणती भूलियोही अक रात ।

(६)

राय विजयराज रा दस हजार सिपाई अस्तर-सस्तर सू तीस, तयार हा । गढ रें माय छः खण्ड बलियोडा हा । गढ रें परकोटे सूं बिपती पठियाळां ऊपर पठियाळां बलियोडी हो । नीचें सू यां पठियाळा मे ऊपर वींचण री मारण परकोटे रें मायली कानी दो अरू तयार कियोडा परकोटा रें दिक्कें हो । ऊपर नीचें रा पागोतिया, चीत मे अक मोटें भाटें नै अळगी सरकायां सूं ई सादता । अक अक पठियाळा कम मू कम बीस हाथ लाव्चो, सात हाथ खवडो भर पाच हाथ ऊंचो हो । ग्रामें सूं अ पठियाळा कडूतरां रा खाना व्हे ज्यूं निजर भावती । पण ये सारी पठियाळां अक ई माय री कोनी ही । सबां री न्यारो न्यारो माय भर काम ही कोई कोई पठियाळा मे ती हजार सिपाई जडा व्हे सकी, जितरी जाणा ही । सबसूं ऊंची पठियाळा, घरती सूं तीस हाथ ऊंची ही भर सबसूं ऊपरली भागणे सूं कोई तीन ती हाथ ऊपर । गढ री घेरी कम सूं कम डेढ दो मील रें मांय हो । या पठियाळा मे जाणा जाणा मोटा मोटा बगारा कियोडा हा भर वारें पावती अक भेंत रें बरोबर रा बीजा बगारा मांय सूं लीपियोडा हा । पांरी डाळ, बारली कानी हो । यां बगारा में गढ री मांयली कानी सूं कोई चीज मेळता ई वा सीधी गढ रें वारें जाय पडती । पांरा मूणडा, मायली कानी खवडा पण बारली कानी सांकडा हा । या रें नेडा केवें तीणा, वारें दुसमण भायें मोठ राकण साह हा । यां पठियाळां में मोटी मोटी चार-पांच भट्टियां खुदियोही हो भर पावती लकडियां रा डेर लागोडा हा । भट्टियां भायें पाणी भर तेल रा कडाव चढामोडा हा । पावती रा बगारा, गरम तेल भर पांलो मूडण साह हा । ई भांत कोई चार ती कडाव भर कुडियां घाहूँ दिसावां मे राखियोही हो ।

अक-अक कडाव सारें तीन-तीन रें दिसाव सूं भाटियांलियां तयार ही । यां रें मार्गे ई अक अक मड्ड सिपाई मदद मे हो । मार्गे ई छोटी मोटी केई होलियां घर होला पडिया हा ज्यांसूं तेल भर पांणी वारें ऊंथायो जाता । ई काम साह दो मोटा तिरदार, दस उपतिरदार भर केई मर्जनी जुगायां मुकर हो । भट्टियां, ई डंग सूं खुदियोही हो कें काम पडिया अे जोडर रें काम में बी घा सकें हो ।

तंस री पठियाळां सूं ऊपरमी पठियाळां मे तीरन्दाज हा । या तीरन्दाजां रा

तीर कम सूं कम पांच सौ हाथ री मार करण वालो सगती रा हा । अठै बी निचली पठियाळा दाई भीता मे सीखा कियोड़ा हा ज्या में सूं तीर, बारै कानी छूटता । अठै तीणां ई दग सूं कियोड़ा हा कै या में सूं छोड़्योड़ा तीर गड सूं ढाई तीन सौ हाथ भागै ऊमी फौज रै सिपाइया रै सीनां नै बीच देता । पण नीचै सूं चलायोड़ा तीर यां तीणां माय सूं गड माय नी भूग सकता क्यूं कै ढाई तीन सौ हाथ भागै सू या मे तीर पुगावण बाळा तीरन्दाज सुलतान री फौज मे गिणती रा ई हा । पठियाळा मे हजारों बाण भर तरकसां रा ढेर लायोड़ा हा । यां में अग्निबाण बी भेळा हा । त्रिसूल रै आकार रा, अरघन्दराकार, भर काटीला नुका बाळा नांत भांत रा बाणां रा ऊपरा ऊपरी दिगला लागोड़ा हा । तीरन्दाजां री फौज रा पांच सौ सिपाई, दो सिरदार भर पांच टोळी रूखाळ अठै तैनात हा ।

सबसूं ऊपरली पठियाळ माथै डगळ भर गोळा रां ढेर हा । अँ गोळा ऊपर सूं गुढायो जाता, जका कै सीधा दुखमणा माथै पड़ता ई बाँरी भगनाळ खोल देता । पण यां नै घरकावण री घडी तद आती जद दुसमण खाई नै पाट गड री भीतां ऊपर चढ़ण री मती करती । गोळां रै अँकानी खाण्डां रा दिगला लागोड़ा हा । गळवान हाथा सूं फेंक्योड़ी खाण्डो अँक बार मे कम सूं कम पांच दुसमणा री माथो काटण री खिमता राकती । खाण्डा फेंकण सारू अँक हजार सिपाइया नै खास रूप सूं सिखावण दी गई । सिखावण मे यां लोगां सूं भँसा कटवाया । भँसा नै काट, जद खाण्डो जमी मे धुस जाती तद सिपाई नै प्रवीण मानियो जाती । सौ काम अँक ई हाथ सूं भर अँक ई बार में करणी पड़ती । खाण्डाधारियां रा सरीर लोबे रा बणियोड़ा हा । अँक खाण्डाघारी री खुराक, कम सूं कम चार बकरां री मांस ही । या री तोल, चार सूं छः मण रै बिचै ही । फेरू बी यां मे इनी फुरती ही कै अँ लोग घोडां री लगाम पकड़्योड़ा कम सूं कम दम कोस दौड़ सकता । खाण्डा फेंकण री जागा मोटी सुरंगां दाई बगारा हा ज्यां में अँक सागै चार भादमी खड्या रै सकता । पण इता मोटा बगारा राकण री धेय अँ ई ही कै अँक सिपाई अठै सूं आराम सूं खाण्डो फेंक सकै । गोळां री भार बी चार मण सू लेर दंस मण रै बिचै ही । बगरां ताई याने पुगावण सारू घाटियां बणायोड़ी हो । कम लागत सू ई यां नै ऊपर खिसकाण री जरूरत ही । बारली ढाल सख् रूतों ई गोळो प्रवण भाव बारली कानी लपकती । घड़्की दिवा सू वेग बध जातो भर बार खाली जावण री कम गुंजाइस रैती ।

अो गड इतो मोटी ही कै कम सूं कम पच्चीस हजार मिसख अँकें सागै समो सकता । गड में भीत सारा मेल, सभां भवन, राजनिवासण साँमे फेलियोड़ी घांगणी, सिपाइयां भर चाकरां रै रैवण खातर घर-बी बणियोड़ा हा । बीबोबीच में देवी

तमो गे जकी के राजा गे कुलदेवी हो,। विताल, फूटरी कारीगरी रो बेजोड़ नमूनी, मिन्दर हो । मिन्दर र माय सू ई मुग्ध रो मारग हो । मुग्ध तमोड सूं पणी घामो जाय डेट राटाळ माय पुगती । देखी रो घी मिन्दर की जमीन र माय पुसियोड़ी वई ज्यूं सलायोड़ी हो । गरमग्रह ती वीं सूं नीबी घायोड़ी हो ।

राव विजयराव जुद्ध साकू पूरो स्थारी कर चुका हा । साकू गे तेड़ी जार्ता ई जागा जागा सूं राव रा मिरदार धार धापरि मरदा साकू घोड़ा, जैट, घन-घान, सस्तर इत्याद लैंग कदका ई तमोड पुग चुका हा । छत्तीस भांतरा घोड़ा भेळा भिह्या? प्रवीह, जका निरभे हा । बिना कोई हिवक र घे घोड़ा भिहणो जाणता २ प्रहराव, जका सापा रा राजा दाई घाल चलता । ३ घाफू जका तितराचार पांच तोला असल लाय जाता; घोड़ी खुद मर जावती पण सवार नै रणखेत सूं काड़ भल्लगी ने जायने ई प्रण रयाजती । ४ अजोका, ज्यानें घेक क्षिन रो चैन नी पड़तो । घे भट्टपीर जीण कसियोड़ा असवार नै उबायां रणखेत में घड़िया रैता । घोरकिया सास करनें जुद्ध साकू स्थार कर्पोड़ा हा । ६ किरणाळा, पण्डा फूटरा घर किराणळ दाई दिव दिव करण वाळा । ७ कोडीधर, जका रो घेक घेक रो मोल करोड़ा रिपिया । ८ सेवर, जका जद दीडता ती भेड़ी लसावती के घोड़ी जमीं माय नी, असमान में उठ रैयी है । ९ चललला, ज्यास नैण गता जाणें लोई वारें नैणें में अस्तपीर उतर्योड़ी ई रैवे । १० चवळ घोड़ा ११ तोलार, १२ पर्यंग १३ मुसकण इत्याद घणों ई घोड़ा भेळा भिह्या । १४ फणवर, ज्यांरी घाटकी घर किलज्जी शेपनाग दाई, १५ वपसकबहाळा, ज्यां सूं भूमाकड़जी बी भेभीत वई जावे । १६ मलफाणी घोड़ा, सेर दाई उछळ नै दुसमण मायें दूट पड़ता १७ मुसकणजात रा मुस्की छोड़ा, १८ हेर, जका दुसमण ने हेरनें बार करता, १९ सपतास जका सूरज रै सात घोड़ां रो सगती वाळा । बीजी भांत रा घोड़ा मे २० बिडगा, २१ हेवर, २२ साकुर, २३ खंगा, २४ भासग, २५ उरिया, २६ मालाणी, २७ सिम्बवळ २८ मुलतानी, २९ चितकवरी रो ती कोई छे ही न पार । भात भात रै गुणां वाळां घोड़ां रो, जमघट साम्योड़ी हो । ३० पाखीपया, जका पांखी मे निरता हुया असवार, नै जेनाया मोरवी लेना । ३१ गंगेटिया, गंगापार रो तळेंटी रा, ३२ हंतजादर, ३३ उडणभ्रमर, ३४ ऊपरम्भा फोरणा (ऊंचा फिरनें बार करणवाळा) ३५ चपल-चरण-विम्तोणें घर गालिढोत्रि प्रतिष्ठा सिद्धा घोड़ा बी विजयराज रो फौज मे सामल हा ।

यां घोड़ा नै गया मितान कराया । गीठ ऊपर चन्दन रो सेप कियो घर पांच वर्ण वाळी जीणा या ऊपर कसी । जीणां मे रणभर, जीण पयर, गुडिपयर, मोहपयर घर कातलीपाली पापर भणगिणत ।

नोट : घोड़ा, जीणा घर पस्ताणा रो बलाण काग्हड दे प्रबन्ध सूं लिपो गयो है ।

ऊंटी भर साण्डो ऊपर पल्हाण कसियोडा हा। पल्हाण भी पांव मोत रा। कुली कुंकूरोल, बोडोयामागपण, बाजती वज्जातली, बेसरा बहिरणां भर पलपळोरा गूछा।

चार हजार सिपाई गढ रो दखाली भर बचाव साह मांय तैनात कर दिया गया। गढ़ रै परकोटे सू चिपती बारली कानी कोई सी हाथ चवड़ी खाई ही। भा खाई चाळोस-पचास हाथ ऊण्डो ही। खाई मे उत्तरण साह भर तळ सू ऊपर चढण साह कोई मासार कोनी हो। खाई रै भेक कानी गढ रो परकोटी हो तो बीज किनारै मोटी-मोटी घम्बळियां गाडियोडी हो ज्यासू सगता ई घोरा रा डूगर छाती फुलायोडा ऊवा हा। यां रै नैडाई खेजडां भर बावळियां रा गुच्छा हा। ई खाई मे भेक खासियत भा बी ही कै ई मे धूड भेली नी व्हेतो। बी नै बतूळिया उडाय नै पाछो किनारो माथे लाय जमा कर देता। खाई मे बेई जिनावरा रा तडियोडा हाडका वासता। भठे गिद्दां रो भेक-छन राज हो। जोवतो कोई मिनख मांय पड़ जावतो तो घे गिद्दा कागला बी नै चूट-चूटनै खा जाता। भजाण पडिया मिनखा नै रसा रो निसरण्यां किले रै परकोटा मे डिगोडा तिणा माय सून सटकायनै बडो मुमकल सू बचामो जातो पण जिनावरा नै बचावण रो तो सवाल ई कोनी हो। भेकर ई मे भेक माथो ऊट पड्यो। बी रो दुरगत देलने लोगां रो काळबो घणो ई बळवियो पण संग लाचार हा। दुसमण साह भा खाई मोन रै कुर्व सरखी हो।

गढ़ में दो बरस लग लावण-रीवण रो माममी रो भरपूर भण्डार हो। सूरसद मगादण साह गढ रो सुरंग रो मारग बी आपत रो हो। ई सुरंग मे बळदागाडी माराम सून भा जा सकती। सुरंग भेक पळी नैर समोन बणियोडी ही घर मारग में जागा-जागा हवा भर चांणो साह बिलां दाई छोटा-छोटा सीणा कर, वां मे भूंगळियां घालदी। सुरंग मे घोडा दौड सगा सकै इतो खुलासी हो। सून भा ई सुरंग बिरत्वा रत मे नैर रो काम देती। सुरंग रो, मारग मे भावण बाळै हरेक गांव मे भेक द्वार हो। पण लोगां नै भा ई ठा ही कै तळा मे पाणी भरण साह नैर बणायोडी है, क्यूं कै घं द्वार, तळा रै किनारै ई व्हेता भर जे कोई भजाण घादमी ई द्वार में घुस बी जातो तो डूगर ऊपर जायने पाछो धारै निकळ जातो। क्यूं कै मुख्य द्वार तो ई नैर में भाजू-बाजू मे व्हेता। यां द्वारां रो फाटकां उणो रंग रै भाट रो व्हेती भर ई दंग सून धरियोडी व्हेती कै भेक-दो मिनख यां नै हिलाय बी नी मकता। सबसू मोटी बात तो भा कै किणी नै वैम व्हे ई क्यूं कै नैर रै मांय भरुं कोई नैर कै सुरंग है। ई सुरंग रो निरमाण केई बरसां में पूरी व्हियो हो भर राज रा खास घादमिया रै सिवाय ई रो किणी नै बेरी ई कोनी। धूड भरी घराविया रै मोमम मे सुरंग रै मारग ई घमीर-उमरावां रो भाणी-जाणी रैतो। बिस्वा रत मे भा नैर रो काम देती भर जुद् रो बिळियां रसद इत्याद पांचावण मे मुपत मारग रो काम देती।

(७)

यसोधरा घर रुकगयो, देवी नै सागटांग दण्डोत की । पछै स्वामी श्री रा चरण परस नै थापरा हाथ धाखियां घर मायै ऊपर लगाया । संगीत रा सुर मूज उठिया । स्वामी श्री सुद सकरा री खयाव, जूजै काळै मूं धीमी लय मे घलाप रै सागे छेडियो । घलाप री मूंज सू बतल घर चांचू बन्द धेगी । व्याहं मेर साज घर संगीत री घमर फेलायो । स्वामी श्री रै कंठ में भोज, मिठाम, दरद घर पकाव हो । सुएण बाळा री प्रातमा संगीत रै ममदर मे हिलोरा लेवणी सह कर देवती । त्रिताळ रा बोल मृदंग मायै ताक ताक तिरकिट घिन ला, ता मुणोजता । ओकर नौ यसोधरा अचम्बे मे पड़ियोड़ी घरय भरी निजरां सूं स्वामी श्री नै निहारण लागगी । संगीत रै सुरां सू ई निरत री ताळमेल हो । निरत मे बिरकण, मुदावा, भाव, घमिनय घर भग सचाळन, संगीत री लय घर ताळ सू जुड़ियोड़ा व्हे । सो मृदंग मायै पड़ती थाप रै सागे ई जाभरिया री भणकार बां बोलां नै प्रगटावती । सहनाई घर तुरई सूं निकलियोड़ा, सुद कोमल घर मोड़ नै बवण कर आतमा आनन्द बिभोर व्हे जातो । बिचै-बिचै मुरकियां, सुरग जेई सुख री अनुभव करावती ।

मुद सिवा निरत चालै हो । सिवजी, समाधी में लीन हा । बां रै सान्त रूप सू मैग मुगध हा । निरत री लय रै साथै ई सिवजी री रूप बदलियो । साक्ष घडस्या नै त्याग सिवजी प्रलयकारी ताण्डव सह कर दियो । संगीत री लय दूणी धेगी । ताना रा पलटा, मृदंग मे ताळ रा तोड़ा घर निरत में सिवजी री संहारक रूप निरख नै घड्योड़ी छूटण लागगी । यसोधरा ऊपर मारी सभा सण्डह मुगध घर आसक्त धेगी । घर यसोधरा.....? राव विजयराज भाज घणा समाव भरियोड़ा हा । वे अेकचित धे, स्वामी श्री रै संगीत घर यसोधरा रै निरत री रम चाखै हा । संगीत री लय दूणी सू चौगुणी धेगी घर ई रै सागे ई निरत री गत बी बघगी । लय चौगुणी सू छःगुणी तक बघगी । जाभरियां री भणकार भजूं बी साफ-साफ मृदंग रै बोला रै परवाणै मुणीजती । ई साह सगळा रा कान, नैण घर बित रै सागे ई सांत बी अेक जागा ठेगी । यसोधरा री देही घर-घर पूजती भी दोमण लागी । मृदंग रै बोलां री ततकार हमे साफ-साफ कोनी सुणीजती । सहनाई तारघतह मायै गूंजण लागगी । स्वामी श्री री कंठ हमै रकियो हमै रकियो, ई घडस्या तक पूग चुकी हो । बा री कंठ बारि नीसर चुकी हो घर गळै री जमां भुजंग ज्यूं फेलायी । यसोधरा री देही पसीनै सूं सिनान कर चुकी हो । बी री सारी परवास भोज चुकी हो घर बी रै मांय सूं बी री काको बिटक ज्यूं भांकती देही मायै बोवा री हलकी सो उलाड़ साफ निजर भावगी । गावा सरीर सूं चिप चुका हा । रगत जेई बी रै रातें मुख घर संहार री मुदा नै निरख धेदी लगावती के मिथजी । सेरूप घरती मायै उतर नै हमै

सिन्धी री नास करणु बाळा है। यसोधरा मां सेंग बातां सूं घणुजाण, बरोबर जांभरियां सूं भणुकार निकालती। वीरा पग पवन सूं बी तेज भर लगोनग चालता हा। मृदंग बजावण बाळी कद सूं ई मम लावण सार तडफा तोड रेंयो ही। घचा-एचक यसोधरा री देहो घरती माथे लुडकती-लुडकती बची। जाणे अेक दम कठे ई सूं बिजळी बडकी के तागे दूगे। जाणे घजाण नोन्द मे सूना लोगा माथे घाभी छिटक पड्यो, जाणे सितार री तार, ससर मे घावता ही दूट पड्यो। घणुचेत लोग घाणुचक चमक पड्य; बयू के ठोक बी बिळिंग अेक खुणे सूं नवाज घाई 'सुभान प्रह्लाह'।

'सुभान प्रह्लाह' री गूँज सूं स्वामी श्री री ध्यान बूकग्यो, मृदंग बजावणियें रा हाथ रुक्यो। संगीत रुक्यो घर यसोधरा री देही घरती माथे लोथ दाई पडगी। हाहाकार मघायो। 'जय देवी तन्नो', 'जय स्वामी श्री', 'जय देवी यसोधरा' सूं मण्डप गुंजाप्रमान व्हेगे। यसोधरा री देही माथे अेके सागे चार-चार पक्षां सूं हवा करी-जणो सर व्हेगी। गगाजळ रा छांटा देय बी नें चेतें मे लाया। वीरा सारा गाबा पमीन सूं घाला तड्ढा व्हियोडा हा। मुस मण्डळ माथे पतीन रा टोपा घेंडा घोपता जाणे मोती झडियोडा है। जाणे करुणारस साक्षात प्रगट व्हियो है। राव विजयरज; स्वामी श्री घर यसोधरा ने बघाई दी। यसोधरा नीचो नाड कियो मन ई मन जोणे की रस री सवाद लेती रेंयो। बी रा नेंगु आधा निन्दाळका सा लागता। स्वामी श्री यसोधरा रें बारें मे राव विजयरज नें देवणु जीग जाणकारी दी।

दूजी कानी पयू ई लोगां री निजरां बी उवाज समचें घूमी घर वे फाटी री फाटी रेंयगी। चठे ती दूजी ई लेल ही। अेक बीस-इक्कीस बरसां री मोट्यार अेक हाथ मे रगत सूं भरियोडी तलवार घर दर्ज हाथ मे अेक कटियोडी माथो लियोडी ही। अेक लोथ पागती पडी ही। जाणु घाणुचक काळो नाग सभा रें बिछां घाद-ग्यो व्हे। लोग डर नें आमा व्हेगा। बी लोथ घर मोट्यार रें चवार कानी मण्डळ बणुग्यो। मण्डळ रें बिचवें श्री घादमी ई भात ऊभी हो जाणे की व्हियो ई नी। बी रें चेरें ऊपर कियो तरें रा भाव निजर नी भावता। पण बी री मूण्डो दिप-दिप करती। नेंगां मे उजब चमक ही, डोल भरियो पूरो। कद, हाई-नीन पूजता हाथ। रग गोरी घर वेस सिरदारा बाळी। काना मे मुरकिया, गळें मे मोतियां री कण्ठो घर ऊजळा बुराक गाबा।

घोडी ताळ, वो, यू ई ऊपो रेंयो। पछें वो आपरें दोळें मण्ड्ये मण्डळ कानी निजरां घुमाई घर बी जाया ई घूम'र पाछो सागें दिया कानी मूण्डो कर लियो। बी रें घूमणें रें सागें ई लोग लारें खिसकणु सागा। हमें वो मुळकियो। हांथ मांयलें कटियोडें माथे नें, वो जमी माथे फेंक दियो घर रगत सूं भरियोडी तलवार नें धोतियें

(७)

यसोधरा घर रुकमणी, देवी नै मागटां दण्डोत की । पछै स्वामी श्री रा चरण पस नै घाघरा हाथ मोलियां घर मार्थे ऊपर लगावा । संगीत रा मुर गूज उठिया । स्वामी श्री मुद्द सकरा रो खयाप, 'जूँ काळ' मूँ चीमी लय मे घनाप रै सागे छेड़ियो । खयाप रो गूँज सू बतल घर चो-चू बन्द रहेगी । क्याहं मेर साज घर संगीत रो घमर फँकग्यो । स्वामी श्री रै कंठ मे घोज, मिठास, दरद घर पकाव हो । सुणए काळा री घातमा संगीत रै समदर मे हिलीरां लेवणी सह कर देवती । त्रिताळ रा बोल मृदंग मार्थे ताक ताक तिरकिट धित ता, ता सुणीजता । घेर'र तो यसोधरा प्रचम्बे मे पडियोड़ी घरथ भरी निजगं सूँ स्वामी श्री नै निहारण मागगी । संगीत रै मुरा सू ई निरत रो ताळमेल हो । निरत मे बिरकण, मुद्रावां, भाव, घमि-नय घर घग सचाळन, संगीत री लय घर साळ सूँ जुड़ियोड़ा रहे । सो मृदंग मार्थे पडती याप रै सागे ई जाभरियां री भणकार बां बोला नै प्रगटावती । सहनाई घर तुरेई सू निकलियोडा, मुद्द कीमल घर मीड़ नै थवण कर घातमा घानन्द बिभोर रहे जातो । बिष्णै-बिष्णै भुगकियां, सुरग जई सुख री अनुभव करावतो ।

मुद्द सिवा निरत बाले हो । सिवजी, समाधी में लीन हा । बां रै साप्त रूप सूँ सँग भुगध हा । निरत री लय रै साथै ई सिवजी री रूप बदलियो । साप्त अवस्था मे स्थान सिवजी प्रसवकारी ताण्डव सह कर दियो । संगीत री लय दूणो रहेगी । ताना रा पलटा, मृदंग में ताळ रा तोड़ी घर निरत मे सिवजी री संहारक रूप निरल नै घड़घड़ी छूटण लागगी । यसोधरा ऊपर सारी सभा मण्डव भुगध घर प्राप्त रहेगी । घर यसोधरा.....? राव विजयराज आज घणा समाव भरियोड़ा हा । वे भेकचित रहे, स्वामी श्री रै संगीत घर यसोधरा रै निरत री रस बाले हा । संगीत री लय दूणो सूँ चौगुणी रहेगी घर ई रै सागे ई निरत री गत बी बघगी । लय चौगुणी मूँ छःगुणी तक बघगी । जाभरिया री भणकार भजूं बी साफ-साफ मृदंग रै बोला रै परवाणें सुणीजती । ई साह लगळां रा कान, नैण घर कित रै सागे ई सात बी भेक जागा ठेरणी । यसोधरा री देही घर-घर धूजती गो दोमण लागी । मृदंग रै बोला री सतकार हमे साफ-नाफ कोनी सुणीजती । सहनाई तारसप्तक मार्थे गूँजण लागगी । स्वामी श्री री कंठ हमे रुकियो हमे रुकियो, ई अवस्था तक पूग चुकी हो । बां री कंठ बारै नीसर चुकी हो घर गळे री नसां भुजंग जमूँ फँकनी । यसोधरा री देही पसीनै सूँ सिनान कर चुकी हो । बी री सारो पेरवास भोज चुकी हो घर बी रै माथ सूँ बी री काचो चिटक जमूँ भंरुती देही मार्थे बोबां री हलकी सो उलाह साफ निजर घावनी । गावा सरीर मूँ चिप चुहा हा । रगत जई बी रै रात मुख घर संहार री मुद्रा नै निरल भेड़ी लगावती के सिवजी सेरु घरती माथे उतर नै हमे

सिन्धी री नास करण वाळा है। यसोधरा यां सैग बातां सूं ग्रणजाण, बरोबर जांभरियां सूं भरणकार निकाळती। वीरा पग पवन सूं बी तेज अर लगोलग चालता हा। मृदग बजावण वाळो कद सूं ई सम लावण सार तडफा तोड़ रेंयी ही। ग्रचाणचक यसोधरा री देही घरती माथे लुडकती-लुडकती बची। जाणे अेक दम कठे ई सूं बिजळी कडकी कें तारी ह्मी। जाणे ग्रजाण नोम्ह में सूना लोगां माथे भापी छिटक पड्यो, जाणे सितार री तार, सतक मे भावता ही दूट पड्यो। ग्रणचेत लोग चाणचक चमक पड्यो; क्यू कें ठोक बी बिळिंग अेक खुणे सूं उवाज भाई 'सुभान भल्लाह'।

'सुभान भल्लाह' री गूँज सूं स्वामी श्री री ध्यान चूक्यो, मृदग बजावणिये रा हाथ रुक्यो। संगीत रुक्यो घर यसोधरा री देही घरती माथे लोथ दाई पड्यो। हाहाकार मच्यो। 'जय देवी तन्त्री', 'जय स्वामी श्री', 'जय देवी यसोधरा' सूं मण्डप गुंजायमात व्हेगी। यसोधरा री देही माथे अेकें सागें चार-चार पक्षां सूं हवा करी-जणी सरु व्हेगी। गगाजळ रा छांटा देय बी ने चेतें मे लाभा। वीरा मारा गाबा पसीनें सूं भाला तडवा न्हियोडा हा। मुख मण्डळ माथे पसीनें रा टोपा घेंडा भोपता जाणे मोती न्हियोडा है। जाणे करणारस साक्षात प्रगट न्हियो है। राव विजयराज; स्वामी श्री घर यसोधरा ने बघाई दी। यसोधरा नीची नाड कियां मन ई मन जाणे कीं रस री सवाद लेती रेंयी। बी रा नैरा भाधा निन्दाळका सा लागता। स्वामी श्री यसोधरा री बारें मे राव विजयराज ने देवण जोग जाणकारी दी।

दूजी कांती ज्यू ई लोगां री निजरां बी उवाज समचें घूमी घर वे फाटी री फाटी रेंयी। सठें ती दूजी ई लेल ही। अेक बोस-इक्कीस बरसा री मोठ्यार अेक हाथ मे रगत सूं भरियोडी तलवार अर दर्ज हाथ मे अेक कटियोडी माथो लियोडी है। अेक लोथ पागती पडो ही। जाणें चाणचक काळो नाथ सभा री बिचणें भाय-ग्यो व्हे। लोग हर ने भागा व्हेगा। बी लोथ अर मोठ्यार री क्वाह कांती मण्डळ बण्यो। मण्डळ रें बिचवें श्री भादमी ई मांत ऊभी ही जाणे की न्हियो ई नी। बी रें चेरें ऊपर किली तरें रा भाव निजर नी भावता। पण बी री मूण्डो दिप-दिप करती। नैणां मे उज्ज्व चमक ही, डील भरियो पूरी। कद, दाई-नीन पूजता हाथ। रग गोरो अर वेस सिरदारा वाळो। काना मे मुगकिया, गळें मे मोतियां री कण्ठो घर ऊजळा बुराक गाबा।

बोही ताळ, बो, यू ई ऊभी रेंयो। पछें बो भांवरें दोळे मण्ड्ये मण्डळ कांती निजरां घुमाई अर बी जागा ई घूम'र पाळो सागें दिमा कानो मूण्डो कर लियो। बी रें घूमणें रें सागें ई लोथ लारें खिसकण सागा। हमें बो मूळकियो। हाथ मांयलें कटियोडे माथे ने, बो जमी माथे फेंक दियो अर रगत सूं भरियोडी तलवार ने धोतिये

माथे पूंछ'र ग्यान में धुमेड़दी । हमें वो उठे सूनं शहीर रहेण लागी । सोण भा'गा सिसक'र वों सारु मारण कियो । वो चार पावण्डा ई भागै बधियो भुला के दो सिपाई वीं सूनं थोड़ा भळगा सामे घाव'र ऊमग्या ।

"ठैरजा !"

वो ठैरग्यो ।

"राव रो हग्या सूनं तू' बन्दी मोई । सेय सूनं भागण रो उवाव सोवणो विरथा मोई" ।

वो बिना की कैया, बां सामी ओयो घर मुळक दिथो । सिपाई भापसरी में सेक पूजे सामी देखण लागः । वे थोड़ा सारें सिसकग्या घर हाथ सूनं सेक दिसा में इसारो कियो । वो वों दिसा कानो मुहग्यो । सिपाई की रें सारे रहेथा । ज्यूनं ज्यु भागै बधतो गयो, झीड़ की रो मारण छोडती गई । हमें वो झंडी जागा पूगग्यो जठे राव भर स्वामी थी ऊमा, वीं कानो ई देखता हा । वो दोन्यु हाथ जोड़'र गरदन झुकाई । वो मूण्डे सूनं की बोलणो चावती पण वो रा होट फुरक'र रैगया । वो दोन्यु हाथ कमर रें लारमी कानो ले जाय'र बांध लिया घर गरदन नीचे सटकाय'र ऊमा रहेथो ।

सिपाई राव नै मरज की के मो मिनख घरार सेय, सेठ मानखें रो घांटकी उतारली है ।

"काई नांव है रमारळी ?" राव थोड़ा कड़क'र बोल्पा ।

"पूतम !"

"कुण सालियो ?"

"भाटी"

"भाटी ! की रो ?"

"जेतसी रो"

"काई शिद्दो ? बसू....."

"वो भेडू हंतो"

"भेडू ?"

"हां" वो हया उवा निजरो दीडाय हाथ सूनं इसारा कियो । वो उवा कानो इसारा किया वे मिनख उठे सूनं सिसकण लागः, पण बां रें पासतो ऊमा मिनख वारा हाथ भास'र बां ने पकड़ लिया । पण सेक मिनख थणो भळगो कमर झुकाया जयीं माथे कीं सोधती हो । वो सगळा सूनं निजर बचाय मिन्दर सूनं बारें निकळायो ।

राव रें इसारें ऊपर सिपाई यां भालियोड़ा मिनखा नै राव रें सामा लाय पेत किया । बां सोणों रा मूण्डा धबळ्ळा पड़ग्या ।

वो यां सैयां कांनी निजर घुमाव देखियो, अर ओह हाथ अटकतां पकां बोल्यो
‘भागयो’

“कुण ?” राव सवाल कियो ।

“सिरदार यारी”

“बात खोलने साफ-साफ बताव, भणूतो भाफन बणणु री हुसियारी मत
जता”

“मन्नदाता ! मै दसूं माणस म्हेछ भौई । गजनी भौई मन्नदाता...”

“हौ”

“वी गजनी मे ओक मोटो धावैत बसै”

“मैमूद”

“हौ मन्नदाता वी रा भेदू भौई” ।

“काई प्रमाण ?”

“पूछ’र देखली मन्नदाता ! जे नट जावै..

वो बात पूरी करे वी पैला ई वे दसूं मानिस मायो ककारे हासल भैरली ।
राव हुकम दियो ‘यां मै रोक लिया जावै । मिनदर सून कोई बार नो निकळै, जव
तक म्हे इग्या नी दू” ।

हुनै राव वी कांनी घूम’र बोल्यो “तू देवी रे मिनदर मे ओक माणस री वध
कियो भौई अर वध करणु री दण्ड काई म्हे ?”

“मन्नदाता जाणूँ । प्राणां रे वदळै प्राण” ।

“तेनै सकाई मे की कैवणो भौई ?”

“नी मन्नदाता ! हू बळी बदणु नै त्यार भौई ।

यसोधरा पुळक’र वी कांनी देखियो । ओक छिन साव दोन्यां री निजरां
मिळी । यसोधरा साज सून दबगी । वो अवधे मे पडगयो । कोई जाण पैचाण नी ।
कईई पैला देखी नी पण जाणो वयूँ भेड़ी लागे, जाणो बरसां री ओळख व्हे ।

ओक छिन साव च्यांव मेर सभ्राटो छायग्यो । राव स्वामी थी सून हवळी सै
बातचीत करी अर इग्या सुणाई ।

“पुनम भाटी जेतलो गे, तं देवी रे मिनदर मे यां सेंग लोगां सामे ओक माणस
री वध करणु गे चूक करी भौई अर तू खुद वो ईनै हांकर चुको भौई । ई
वातें मां तसो री इग्या सून ताअजै वध री इग्या दी जावै । बोल तेनै की कैवणो
भौई ?”

वो मायो धुण’र नटग्यो । “हू मरख नै त्यार हौ”

भीड़ में सूँ घणकरी भेल्ली धुनियाँ भावण लागी "नी, नी, नी !"

यसोधरा री आँख्या आडी अन्धारी भावणी । वा रुकमणी री बाँप पकड़'र माथो बी रँ खान्धे माथे टिकाय दियो अर नैण मून्द लिया । लोग भापस री मे फुसफुसावण लागी ।

सिपाई राव सांभी देखण लागी । हमै राव अक'र चौकेठ' निजर घुमाई । यसोधरा कानी देख'र वे ठीमर व्हेया । स्वामी थी रँ सामी देख वे नैण भुकाया अर घोड़ा मुळकिया । राव बोल्या "भाटी राज री परम्परा परबाणी वध रँ बढळ' वध री दण्ड ई ब्हिया करै । परण स्वामी थी री इया अर परजा री मसा देखतां थकां ई घड़ी पूनम जैड' बीर रा प्राण लेवणा ठीक कोनी । ई वास्त' साकी ब्हेणे तक पूनम नै भुगत किथी जावै । परण साको निमटियां पाछै पूनम खुद, देवी रँ मिन्दर मे हाजर होय दण्ड री भुगताण करैसा । ई बात री जुम्मी....." । "है, है, है.....!" भीड़ मे सूँ भणगिएत बोल सुणीजण लागी । यां मे अक उवाज यसोधरा री बी ही । पूनम नै दूजै दिन मिलण री इया देय, राय अर स्वामी थी उठै सूँ ब्हीर व्हेया । सिपाई पूनम नै भुगत कर बां दसू मिनखां नै बन्दी बणाय लेय्या । भीड़ पूनम नै हाथा ऊपर उठाय लोन्ही । जै तम्रो मां रो, जै राज विजैराज री अर जै पूनम बीर री, धुनियां सूँ भाभी भूँजग्यो । यसोधरा देर ताई मुळरता नैणा सूँ पूनम नै देखती रैयो । बीं री नस-नस धिरकण लागी ।

★

(८)

राव विजयराज देवी रँ मिन्दर सूँ पाछा मोलां कानी भाया तो रात पड चुकी हो । राखी रँ मोल मे आज अन्धारी हो । राव रँ वधारता ई हाजरिया बीडणा सह व्हेया । राव, राखी रँ मोल मे अन्धारी व्हेणे रो म्यानी पूछियी तो उमिया अरज करी—

'अन्नदाता! आज महाराणी सा खुद रँ हाथी सूँ पकवान बणायो तो पाक्या मोई । सिनान करण पयार्या.....'

'ठीक मोई, अद तो है आज महाराणी सा रँ हाथ सूँ जरोसियोडी ई पाळ धरोगी ला ।'

'अन्नदाता ! हुही बह' ।'

'नी, उतावळ कोनी ।'

इरी मे महाराणी खुद हाजर व्हेणे ।

'जीवण पन ! आज तो.....!'

‘हाँ अन्नदाता ! पाछै मिलणी व्हे नीं व्हे । खुदरे हाथां सूं.....?’

‘चिन्ता व्हेणे रो कारण ?’

‘राजपूतणियां भवें असल रेंयो केठ अन्नदाता! अब तो गोलणियां रेंयो भोंई ।’

‘म्हे, समझ्या कोनो?’

‘भाटी राज रो महाराणी खुदरे प्राणां रे मोह लारे राव नै छोड़, पीयर जावे, ई सूं, अधिक लाज रो कांई बात व्हे सकई ?’

‘राजा रो हुकम तो सगळां सारु सरखो व्हे । आप ऊपर बी लागू व्हे ।’

‘जदैई ती घरज करूं अन्नदाता कै.....’

‘आपनै तो म्हे, राजकवार देवराजरो रम्हाळ सारु.....’

‘हाँ, मी मिस तो बीत मोटो भोंई’

‘आप ई नै मिस मानो ।’

‘आपरै सांमी बीलूं आ ती सुपनै ई नी सोच सकूं । पण आप आ बसूं भूलौई हजर कै म्है मातर अेक मां इज नी पिए अेक घरनार बी होंई ।’

‘राजा रो घरम व्हेई प्रजा रो रखाळी रो । घर प्रजा में आप बी भेळा । राजकवार देवराज, प्रजा रे पेटे भोंई, ईं सारु वां रो रखाळ रो मोघजे ऊपर खाम जुम्मी भोंई ।’

‘राजकवार देवराज रो रखाळ करण रो आपरो धरम भोंई, ई नै म्हे बी मानूं, पण राजकवार रो आड मे, म्हे आपनै छोड अेष सूं पीयर जावूं परी, ई नै भोगजी मन नी मानै ।’

‘अब आपनै क्यांन समझावा ?’

‘हूं सब समझिमोडी भोंई महागज ! महाराणी रे नार्त भोगजी बी की घरम भोंई ।’

‘बो हूं समझां प्राणघन !’

‘तो भोगजी कैमनो सुणावण रो हथ्या मिलै महाराज ?’

‘देला ! सुणा’

‘राजकवार देवराज रो रखाळ रो जुम्मी भोगजी भोंई । हूं वां नै भोगजें पीयर भेजण रो ठावो प्रबन्ध कर लियोई । दासी अेष ई रेंवेलो । महाराज जीत नै पधारसी बी दिन बघावैला घर नो तर जोहर रो जवाळा में भेंट चढ़ण रे घ म सूं बन्धी रेंवैला ।’

‘अेकर फेरु सोचलो ।’

‘बीत सोच-समझेर मत्तो कियो भोंई, अन्नदाता ।’

‘हूं आज राजकवार नै खोळें मे लेय नै याळ अरोगांवा ।’

‘राजन ! आपने श्री मोह त्याग देवणी जोड़ने ।’

‘मत भूलो महाराणी सा, के हूँ मेक बाप बी हूँ ।’

महाराणी रे मेक इसारे ऊपर दो हावड़ियां राजकंवार देवराज ने लावण साव दोड़ी । महाराणी खुद रे हाथां सूं मखमल रा भासण बिछाया । चांदी सूं झड़ियोड़े पाटिये ऊपर सोने रे घाल में पकवान पुरस रे महाराणी जतन सूं घाल धरियो । पालती चांदी री फरी घर चांदी री गिलामां पड़ी ही । पलक भरतां हावड़ियां राजकंवार देवराज ने गोदी मे उठाव त्याई ।

महाराज बीत प्यार सूं राजकंवार ने छाती सूं चिसायी । राजकंवार देवराज री उमर चार-पांच बरसां रे बिज्वे ही । उलियायी मां-बाप रे दोनू रे मेळ री ही । हाथ लगाया मैली बूँ जेडो सरीर री रंग, नाक, तोखी, नैण मोटा, होठ पतळा, भर राता चिट । भणजाण मिनस बी मूण्डे री तेज देख रे मोळस लै के श्री ई राज-कंदार भोई ।

‘मावो बेटा जी !’

‘ऊँ हूँ’

‘मावो ! मोघजे पास मावो ।’

‘नी, पुल—...’

‘लाल बनासा मावो, आप मोघजे गोदयां मावो !’

महाराणी दोनू हाथ पसारता हूयां बोली । ई रे समय ई राजकंवार, महाराणी रे हाथां ऊपर उलड़ायो । महाराणी बी ने चूम रे छाती सूं चिसाय लियो । राव रा नैण गळगळा रहेग ।

‘लाल बनासा भाज मोघजे हाथ सूं घाल भरोनेला’ राव बोल्या ।

‘घोसवा’

‘हाँ, हाँ घोटमा भरोवो बनासा ।’ महाराणी घाल मांय सूं घोटने री मेक टुकड़ी तोड़ राजकंवार रे मूण्डे मे दियो । राव, राजकंवार ने पुटाय खुद रे खोळ मे लियो । महाराणी पालतो वेठी ही । बीं री छाती भरयो ही । राव रसोई री पणी सरावण की, पण महाराणी तो मविस रे मदीठ मे मविमोड़ी ही ।

राव महाराणी री चिन्ता समझया हा । ‘जीवण धन’ रे सम्बोधण सूं महाराणी रे विचार री तार टूटयो ।

‘आप कीं हुकम दियो भजदाता ?’

‘भाज मोल मे धन्यारी भोई ?’

‘भजे ती खं की धन्यारे रे ठसियोड़ी ई भोई राजन् !’

‘आपने, मोघजे बळ ऊपर भरोसो कोनी ?’

“भरोसी नो व्हेतो तो कदकी घातमहित्या कर लेती, पण खाली भरोसं—”

“कोई कुमी-कसर व्हे तो बतावो”

“अन्नदाता रे राज में कुमी किली बातरी कोनी । प्रिजा आप माथे प्राण निधरावळ करे ।”

“पछे ओ अन्धारो क्यूं ?”

“चानलो अन्नदाता सांभी लाजा भरें”

“परखणी पडती”

“पलका बिछावू”

राव सजब निजर सूनू बूटारांणी कोनी देखी । महाराणी साज सूनू घरती में गडण लागी, पण उमाव रे सफाणी भावण लागी ।

डावडिया रे नैणां मे चमक वापणी । दो बरसां सूनू साज बारी बारी भाई, मौल सजावण री । महाराणी सात बरस छोटी व्हेणी । साकळें मौल री खुणी-खुणी सोरम सूनू भरियोडी ही । मौल रे अेक अेक भाटें माथे चमक ही । आंगणी पुळकती ही ।

(६)

राव री इश्या पाळण मे दुर्जे दिन साकळेंई पुनम, राव रे सामें हाजर व्हियो ।

“खम्माधखी अन्नदाता !”

“है । पूनम जेतसी री ?”

“मापरी किरपा सूनू है मुगत ओई महाराज”

“मुगत नी, तूं भीमजी बन्दी ओई”

“हूं । म्हे तैनूं यूं ई मुगत नी कियो ओई”

“इश्या करी अन्नदाता, माथो भेंट धरूं”

“हो । माथो ई जोइजे भीमजी”

पूनम सडाके सूनू म्यान मांय सूनू तलवार खांची अर ज्यूं ई तलवार गरदन कोनी उठाई अर राव बोल्या “पूनम ! तूं साचाणी वीर ओई । ईं सारु ईं हूं तैनूं मुगत कियो ओई । तूं, भाटी राज री ख्वाळ सारु बीत मोटो काम कियो ओई वां भेदुवां नै भोळसरें”

“म्हे तो आपरे पर्णा हेटली घूड—”

“नी, पूनम ! हूं तैनूं भाटी राज री भड किवाड मानां हां, अर ईं सारु साम्राजा प्राण संकट मे घातलो चावां ”

“इय्या करो अन्नदाता ? ओ मोयजी सोमाम ओई”

“दुसमण रो भेद लेवण सारू माथी जोइजै पूनम ! दुसमण बी छोटी मोठी नी, गजनी रो सुलतान ओई।”

पूनम, तलवार पाछी म्यांन मे घती, अर माथी भुकाय बोल्या “अन्नदाता रो ई किरपा सारू.....”

“माय ! मोल ।”

“घासरीवाद”

“अेक बात ओई”

“सिर नैणां ऊपर”

“गुलाब त्यारळें सागें रेंवैली” गुलाब कांभी सकेत करता हुयां राव धोल्या ।

“जव ती काम बौत सोरो व्हे जासी अन्नदाता, पण.....”

“पण काई ?”

“परख किया दिनां.....”

“सोनें भूं खरी । फेहूं बी परख करले त्यारळें ढग डाळें सू”

“नी, बस भरोसे रो ई बात ओई दाता ! क्यूं कै लुगाई जात.....”

“महाराणी रा भंवांरा थोड़ा तणग्या पण पूनम रें चिलकले चैरे सांभी निजर पडता ई गुस्सो गळग्या ।

“खरबी, अणखूट ले जावो । सात दिनां में पाछां घावो”

दो नोळी सोनें रा टका पूनम रें हाथा सूय, राव मोसां मे पधारग्या । गुलाब रो डडीक में बी नै रणवास रें बारें ठरणी पड्यो । वो बारें ऊभी भावी रें सुपनां मे सुष बुध भूलग्या । अेक हाथ, बीरो बाहुडी पकड़ मांय खांव लियो ।

“पूनम !”

“हूं । कुण...?”

“है !” बी रें नैणां मे नैण गढाय महाराणी मुळकी ।

“इय्या करो अन्नदाता !”

“इय्या नी, मोळावण ओई”

“ज्यूं घापनें सोवें”

“गुलाब, म्यारळो राम दावडो ओई”

“व्हेली”

“ओई । म्है दो तन, धेक मन हां”

“म्है मेकली ई....”

“नी, गुलाब त्यारळें सागें घालेली । रें रो घावें ज्यूं परख कर सनें, पण...”

“नी, मीसजे परख बीजी नी करणी भन्नदाता,”

“भो हो ! काई दाता घर भन्नदाता, लगाय राखी भोई ?”

“भन्नदाता !”

“केहूं बाई रट, सुण ! गुलाब जे त्पारळीं रुखे बरताव सून कुम्भळायणी तो समझ लीजे कं महाराणी.....”

“माप.....”

“पूतम ! कितरी प्यारी नांव भोई ? जंडी नाव बंडी ई रूप, रङ्ग, डोल घर.....”

“मीडो व्हेई भन्नदाता”

“हूँ। लै मा भ्यारळीं भसल हीरां-पद्मां घर मोतिपां सून भंडी मून्दडी, संव-विचाण री”

मा कैर महाराणी छुदर हाथां सून मावरी मून्दडी खोल, पूतम री भांगळी में पंरायदी ।

“हसूर, भो काई ?”

“बसू कम भोई ?”

“नी । मा.....”

“हूँ, गुलाब सागै भोई, सेग समझा देसी”

“पण भ्हे.....”

“जादा बकणी नी । बहोर रहे जावी । जावी, जावी भेष सून । मीडो मत करो । गुलाब ! ओ गुलाब !”

“भन्नदाता !”

“जा, ई नै लेजा । नार्यो खुल्यो चर्यो दीसेई । नाथ घात, कायू कर लीजे”

गुलाब, पूतम री हाथ पकड़र बीनें बारी लांघ ल्याई । महाराणी मुळकती, देखती रैयो । पूतम दासै सून ठोकर लाय खिरती खिरती बचिमी । मून्दडी, पूतम री भांगळी मे फँसयो । महाराणी नै श्रेक भांगळो सूनी सूनी सांगण लागी । रे रे नै भेर केहूं बाजण लागो । दो साण्डां कसियोही, दो भसवारा नै रोय, डोंगा जग भरण लागो । महाराणी श्रेक लाचो सांस नांखी ।

(१०)

मुनसान रें दवाण पुरब मे गिम्बू भर सूनी हाकड़ा नशे रें बिन्व पड़िया मुनसान घोरां मे भेक नुबो नगर बगम्पी । भन्दाजन चार पांच मोल रें घेरें मे मोटा मोटा तम्बुघां री कतारां लागोड़ी ही, ज्या ऊपर हरा भण्डा फेरावता हा । हवा रा भबकां सूं पंदा दिह्योड़ी लेंरा रें कारणें फट-फट री उवाजा, रें रें नै कानां में भावती । रात रें बरावले कालस मे ससमान री दीवड़ां भिगमिग करती । घडीनै या तम्बुघा रें ऊपर भिगमिगावती मसालां भपकियां खावती । दिन रें चानेणें में भै ऊजळा घुराक तम्बू खंडा सागता जाणें बरफ रा टीबा लड्या व्हे । सिङ्ग्या री रातड जद घेरा जावती भर पां री रङ्ग सोई ज्यूं व्हे जातो चीं बिछिया भसमान मे छापोड़ा भसमानो, बाळा भर राता वादलां री लेंरियो, फागणिया रङ्ग बिघेरती । ईं बिछिया या तम्बुघा रें मूँवें री रङ्ग फीको पड़ जावतो, काया कंवळीज जाती । पण रात व्हेता ई नदी रें घी किनारें सूं दोठ दोड़ायां, भेडो लधावती जाणें हजारों किस्तिया समदर री छीळां नै चीन्ती सकी आपरी मस्ती मे घीम-घीमै घावें बघ रैयी है । निजर घुनी रें वेग सूं बी तेज भठी ठठी सपाटा लगावती, भेकें आगा पिर नो रें सकती । भेडो ई चारती बी लधावती कें पवन रें वेग रें कारण भिण्डा लेंरावता भर मसालां टिम-टिमावती । ईं वास्तै घांरी भसलो भौं री भन्दाज टीपणी बीत खोरो व्हे जातो । कदेई भै किस्तिया नैडी रिमसती मलावती तो कदेई चल्ती बैवती । भसमान सूं जिगमिग करती भसमान री चीकड़ियां भर मड़द री भुजमेनस भर मगज री उपज या दीवड़ां में जाणें होड लागोड़ी ही । पवन रें भबकें साथे ईं भै मसालां बुभ्कती, लगती, केरूं लगती । निजर दिवकोळा खावण कूक जाती पण दिवकोळा खावती तो दीसण बाळी भै भरम री किस्तियां तो साथे आगा ईं मानलै नै भरम में बगनी कर नासती ।

बीस हजार सिपाइयां रें रैवास सारू तकरीबन चार हजार तम्बू, तीनों कानी सूं भरघचन्दर दाई लाम्बी लाम्बी बराबरी रें घांतरें सूं जमायोड़ी कतारां में गाडियोड़ा हा । चार रङ्गां री कनातां बारोबर ऊभी हो । भेक तो तम्बुघां लारें भेक रें हिसाब सूं भटियारखाने री तम्बू खड़ा किया गया । ईं में सिपाइयां सारू भोजन पकाईजतो । ईं रें बाजू मे ईं भेक तम्बू दरजो रा कायम कियो गयो, लगोलग बीस बीस रें बराबर रें घांतरें सूं भै कतारां लागोड़ी ही ।

सबसूं आगली कतार बाळा तम्बू, खड़ाकू बादुरां रा हा । भै लाम्बी दाढ़ी बाळा यवन सिपाई हा, जका कें हमलो भर ख्वाळी दोन्यू री बिद्या में पारंगत हा । हरेक तम्बू रें मांयने ईं दो छोटा तम्बू कमरां दाई जुदा-जुदा हा, पां में सूं

श्रेक में सस्तर शर बीज में दीगद जरूरी समान राखियो जाती । बीचली घांगणी मिपाइयां रं सोवण बैठण रं काम मे भावती । सौ तम्बुवां लारं श्रेक रं हिसाब सूं श्रेक मोटी पण्डाळ श्रेक कोनी घोडा बान्बण सारू तयार कियोड़ी ही । यां सूं ई चिपती सस्तर रं मण्डार री पण्डाळ ही जी मे तीर, भाला, बरछियां, तलवारां, ढालां बीजा पड्या रंवता । श्रेक पञ्जत सूं दूजी पञ्जत रं बिच्चं सौ हाथ री देखी जरूर व्हेसी । पचास पग पाछे श्रेक कोनी हट नै हरेक तम्बू रं सारं टटो, गुमल री मायूल इगतजाम ही । पांच सौ तम्बुवां लारं श्रेक पसारो री गोदाम, तम्बोळी री चार दुकानां, पच्चीस लघीर, बीस मोची, दस दरजी, शर पाच सत फुटकार तम्बाकू, दारू तेल, काच इत्याद री दुकानां ही । श्री बजार एक चन्द्रमा रं गोळं दाई सजियोड़ी ही । ई मात रा तकरोबन दस बजार उठे लागोड़ा हा । या सबसूं, मलादा, दांच मोटा तम्बू गुलामां रा हा, ज्यां मे कोई दो हजार गुलाम भद्व कंद हा ।

पाच तम्बुवां सारु भेक बल्लादागाडी, भर दो ऊँट, पाणी री पल्लव बर्बोदा
 स्थार रैता । पाणी री पूरी इन्तजाम राकण सारु पाव भी भीरी बर्बोदा की
 सुसतान भापरै सागै लायी हौ । यानि बी काणदे सर भेड़ी जावा भेरी ई पाणी
 सारु घणी भागी जावण री जरूरत भी पड़े । खावण पीवण री बल्लादागाडी
 सेजावण सारु भेक हजार बल्लादागाडियो या ऊँट गाड़िया हौ । इन्तजाम री
 गजनवी कने दस हजार ऊँट, छ हजार घोड़ा, भेक हजार बल्लादागाडी, बर्बोदा,
 देठ हजार खबर गधा, भर घनापसनाप बकरां री भेवट हौ ।

बिचली दो पङ्क्तों में मोटा मोटा फीजी घपपण का कण्डा लटका हुआ है।
या सूं लगता है तथाइकाँ रा तम्बू हा । ज्यामें कोई चीज हाई के अन्तर्गत में
ही । बिद्या हरेक टुकड़ी सागं बी रो कतान भेक खाइ कण्ड के ऊपर देई के अन्तर्गत
राकतो । ऊपर बसायोड़ी कुमुद भर रसद रे इलाहा श्रुति के अन्तर्गत में
भेक हजार लवार, एक हजार परजी, भेक इलाहा श्रुति के अन्तर्गत में
कारीगर, इत्यादि बी हा । यारै रेशास रो बी इलाहा श्रुति के अन्तर्गत में
हकीम रे इलावा दीगर दो सौ हकीम बी मारि कण्ड

(मिडकल) इत्याद सूं भरियोड़ा हा, वे यां पण्डाळां में पाकड़ पोरें में पड़्या रवता । यां पण्डाळां रें च्याहूँ मेर मांय भर बार दस-दस पगां री छेती मायें श्रेक श्रेक सिपाही नागो तलवार हाथ में लियां पोरो देवतो । बारी-बारी भर सिपाई श्रेक दूज रें बिच्च कदमताळ करतो रेंतो । यां सन्दूकां में पंजाब, भुलतान, सिन्ध भर केई छोटा-मोटा राजावा रें इलाकां री छुटियोड़ी सम्पत हो । ई देस री गैलसफाई सूं बिलरियोड़ी पडो सम्पत नें श्रेक सुलतान री तैश भर तिजोरी आपरी पासवान बणा रें बीन कंद कर राखी हो । पासवान बणावण सारु सुलतान रा केई सिपाई, मारग सूं घणकरी लुगार्या नें पकड़ लाया हा, जकी तवाइफा भेली भिलयो ही ।

यां सगळा तम्बुवां रें बीचोबीच में श्रेक मोटी च्यू पण्डाळ लागोड़ी हो । पण्डाळ रें च्याहूँ मेर दस-दस गज री छेती सूं कनाता बाडियोड़ी हो । कनाता रें बारली कानी दस-दस गजरी छेती मायें तोरन्नाज येरी घालियोड़ा हा । कनाता रें मांयली कानी पण पण्डाळ रें बारली कानी बीं हिसाब सूं ई यवन सिपाई नागो तलवारा हाथ में लियां पोरो देवता । यां सिपाइयां रा सरीर तो रें सांचे ठाडियोड़ा हा, भर सिकनां भली डरावली झी । मागो तलवारा हाथ में लियोड़ा श्री साक्षात जम री रूप निजर आवता । यां रें हाथां में पकड़ियोड़ी नागो तलवार मायें जीरी बी निजर पडती बी घर-घर भूजण लाव जावती कें बस बीरी गरदन भा कटी भा कटी । ई वास्तै २५ कानी पग बघावणा छोड़ निजर फँकण री मुनळर हो मोत नें नूतणी ।

ई पण्डाळ रें मांय श्रेक छोटी पण्डाळ भरूँ हौ, जी में कम सूं कम पचास भरवां रें बँदण जोम खुलास री जागा ही । ओ पण्डाळ रें श्रेक भ्रममांती भर हर रंग रें रैसम री बुणियोड़ी हो । ई में जागा जागा जरी री काम कियोड़ी हो । घाशती पाकली मसीत रें गुम्बदां दाई गुम्बद बणियोड़ा हा । तम्बू मायें जागा जागा जरी सूं कुरान री भाइतां रा कसीदा काडियोड़ा हा । यां रें बिच्च जागा जागा तलमा सितारा जडियोड़ा हा । जिकी जागा खासी रेंवतो बी जागा सेर, चीता, रोछ, हिरण, खिरगोम इत्यादि री सालां टंग सूं टाकियोड़ी हो । ऊपर छत में सवावणा झाड जडियोड़ा हा ज्यां में खुमबूदार तेल रा दिया बळना हा । यां में सूं निकलियोई घानण री उभास सात गुणा जादा निजर आवतो । श्रेक दीये रा पांच दिया निजर आवता । ई रें इलावा पण्डाळ रें मांय भर बार दोन्यू जागा चांदी री मसाळां जुदा घेनन ही । पण्डाळ रें ऊपरली भाग ई टंग सूं जाळोदार बायोड़ी हो कें मायपो घुंघो भाराम सूं बार निकळ सकें भर हवा बी बरोबर ताजो आवती रेंवे ।

घांणणें ऊपर कीमती कासीन बिछियोड़ा हा ज्यां ऊपर कीमती गलीचा सुबभूगरी बघावना । सिरे दरवाजें रें दावी कानी बाय घर चीतां री फूटरी खालां

बिछापोड़ी ही, उठे अक मोटी अर मोळ तकियो बी तरतीव सू सजापोड़ी ही । ओ तकियो भीत जादा कीमती अर कळागिरी री बेमिसाल नमूनी ही । ई तकिये रें सारे अक भव्य मूरत साक्षात रूप मे बिराजियोड़ी ही । पचवीस बरसा री अक मोठ्यार, बीत मोटे अर लम्बे पण ओपत डोल री, डरावण पण मदरा प्याला व्हे ज्यू नण जरूरत सू जादा लाम्बा हाथ, बीटलीदार काळा कंस अर छोटी सांक पण भरियोडो दाडो । खोफनाक आवाज घाली ओ मोठ्यार ई गजनी री सुलतान 'यामिनूदीला महमूद निजामुद्दीन कासिम महमूद' ही । ई रें चरें सू सूरता अर क्रूरता बरोबर टपकती । चवदा बरस री उमर मे ई ओ जुद्ध करणी सरू कर दियो ही । खुद रें पराक्रम, बुद्धि, हीमत्त अर जुगत सू ई बी खुदरें आई सू राज खोसनै राज री मालक बणायो । आपरें आपरी परम्परा निभावतां थका ई बी भारत री बेसुमार सम्पत्त, लूट-लूट नै गजनी ले जावणी सरू कर दी । बी माया री लोभी हो, अर माया बी रें पगां पड़ती ।

खूबसूरती अर कळा सारू बी री नेह अर उमाव सायत बी नै आपरी ईरानी नसल री मां री देण ही । ईं वास्तै ईं बी सायराना मिजाज री ही । बी सायरां री इरजत करती । बी री निजू सुपना री अक संसार ही जी नै बी आपरी मर्दानगी सू साकार करण री सामर्थ्य राकती । कारीगरी री प्रेमी व्हेतां थकां बी बी मूरती पूजा रें खिलाफ क्यूं हो, के मूरतियां क्यूं तोड़ती ? ओ सोचण जोग सवास हे । सायत बी री यथार्थ मे आस्था ही । बी मूरती पूजा में आर्थे विस्वास री बास देखी । घरम अर परमातमा रें नांव माथे पळतै पाप सूं बी री साबकी पड़ियो । विण्डां अर विण्डतां रें पाखण्ड नै बी भलीभाँत परखियो । देवतावां री जकी दुरगत पुजारी लोग बणाय नाखी अर परमातमा री भगती रें नांव माथे जकी शसलीला री साग अर बीभीचार इराद व्हेता बी सूं बी पणी नाराज ही । व्हे सके के अं बातां कूडो बी व्हे पण बारण तो कोई न कोई ही जरूर, जो ईं आदमी नै मूरतियां अर मन्दर तोड़ण मारू सकसावो ।

मैमूद, हिन्दुवां री आपसी फूट री फायदी सथायो, मूरतियां तोड़ी, मन्दर धुआय अर विण्डतां नै गुलाम बणाय वांनै बेचनै टका बाटिया । बी पाखण्ड रा पाटिया ऊधा मार दिया, अर खुदरें मुलक पाछो गयो परो । व्हे सके आपरें या क्रूर कामा रें कारण बी री आत्म कदेई पछताई बी व्हे ।

मुलमल रें मिहं माथे तकिये री सारी लियोड़ी बी सेर व्हे ज्यूं दहाइती । बीरा गाथा भीत कीमती अर अजबूत खाल रा बणियोड़ा हा । अक हाथ बीरो थकसर तलवार री मूँठ माथे ई पड़ियो रेंवती, जी मूँ बी री भांगळियां रमती रेंती । बी रें माथे ऊपर अक उजब सी पण आला पाग ही, जीं मे जागा जागा चेदियोड़ा नीनम...

घर होरां रो घाघा चकाचून्घ कर देती । बी री पगरखियां में जड़ियोडा लाल घर
पघां सूं किरणां फूटती । सूरज रो किरणां दाईं थीं किरणां बी घादमी री निजरां न
मैन कोनी द्हे सकती । बी रें सामो जोवण री हीमत आछा आछा में बी नो हो ।
बी रें प्राप्तो पाखनी ऊमा उमराव, बकरे जून् घूजता घर चांरा कान हर बिलिया
बस सुलतान री हुकम सुणण पातर ऊठियोडा ई रैवता । भेक भादमी हमेस बी रें
साथे रेंतो घर मो हो 'भनउस्वी' । मैमूद गजनबी रें जोवण काळ री हरेक घटना
ने बी साहित री रूप देण नै माघा वणा देतो । मो ई बी री खास गुण हो ।

(११)

'हा, काई नांव मोई त्पारळी ?'

'गुलाब'

'बीत मोठी नांव मोई'

'चाल देह्यो काई ?'

'बाखण री छूट मिळियोई मोई, महारांणी सा सू'

'भ्याळ' मन री महारांणी हूँ घाप मोई'

'पांणी री छागळ, स्वाई मार्ग ?'

'बा, काई द्हे ?'

'हूँ, द्हे तो सम्माळ ही नो की'

'जोव तो सम्माळ राकियो ? कै नी ?'

'को तो सावकी जागा मोई'

छागळ निकाल, पूनम, डगळ-डगळ पांणी पियो ।

'घापन भूख बी तो लागी द्हेली ?'

'भूख ? कस्ती ?'

'भूख बळ' कस्ती ? दुकर री ?'

'बसू' बीजी भूख नी द्हे ?'

'बीजी भूख तो हूँ कोई जाणू' कोनी'

'काई उमर मोई ता'मजी ?'

'तंयाळीस री जसम मोई'

'तंयाळीस ?'

'हूँ, भेक हजार तंयाळीस'

'समझायो ! सोळा-सतरा बरमां री मोई ।'

'द्हे सक'

'व्हे कोई, भळ ? पण तू दोमण में तो बीस-बाइस री दीस'ई'
 'दीवई हाड री हो'
 'जदैई तो भूख सूं भणजाण घोंई'
 'क्यांरी भूख ?'
 'भूख सरीर री, भगज री, मान री, मनवार री, घर...?'
 'अब इयाली-उवाली बातां ई करणी कै की काम री बात बी.....?'
 'कोई बात ? बोस सूं ।'
 'बोसू' काई ? जो काम सारू थां रे पल्ल पडो थोई'
 'हूँ ! कितरा कोस भायग्या हा भापा ?'
 'अई बीस-तीस'
 'अद ती थोडो भी ई कटी अजूं ती'
 'गप्पा मार्या ती भी थोडो ई कटमी'
 'कृण मारी गप्पा ?'
 'घाप'
 'म्हे ?'
 'हा, घाप !'
 'ठीक, बतळाई घर गळ पडो ?'
 'गळ पडै म्यारळी....?'
 'हां, हां, हां, काई ? त्यारळी काई ? बोली कोनी ?'
 'साण्ड उतावळी थोई'
 'खातो ती भा बी पडै । माडै ई मोरी वीली राक छोडी हों ।'
 'दोन्यू बैनां थोई'
 'जदै ई'
 'कयू ?'
 'उणिपारो मिळै, ई री, थां सूं'
 'म्यारळी कयू ? हूँ साण्ड रे उणिपारे हों ?'
 'हवै !'

गुलाब गुरुसे में साण्ड रे तडो दी । साण्ड पाछी सपाटे दोइण लागी । पूनम बी
 घापरी साण्ड री मोरी नै खांची घर वा बी पवन वेग सूं भागण लागी । कोस भर री
 भी माथे पूनम री साण्ड, गुलाब सूं भागे नीसरगी । पूनम, गुलाब रे सोमी जीभ काड़,
 मुळकियो । गुलाब, घापरी साण्ड रे अरे कामडो सगई घर पलक भरता, वा, पूनम सूं
 भागे नीसरगी । सूरज निजरा रे सोमी भायग्यो हो । बीं री उत्रास हमे मंदी पडण लागी ।
 घोरो रे अघाग समदर री सुनियाड में दो साण्डो री सांसा बीत बरावणो हांक भरती ।

मांढां री परासायां तर-तर साग्यो बघण सांगी । वृद्धनं तावई री चमक मे गुलाब रं मूर्त
 रो भाई गुलाबी लागण सांगी । वो रं वोत्रियं रा पेच कीला पड चुका हा । पूनम घेरु
 दूजे घोरं नं पार कर, साण्ड नं घादी केरी । टोग्युं री निजरा मिळो । मुहने में मरि-
 योही गुलाब री भंगी, चमचमावण सांगी । पूनम, मुदरी माण्ड नं वो रं नंही लो, घर
 वो रं ऊरर ऊमो व्हेगो । गुलाब, साण्ड नं फेरुं तहो दो । पूनम री साण्ड, वो रं
 लगोलग दोहती रंथी । हयें पूनम घावरी घेरुं टांग, गुलाब री साण्ड मायें मेत, घड
 करगी जाय, गुलाब रं पुठें येठायो । वो री मुदरी माण्ड री मोरी, वो रं हाथ सूं
 दूटगी । साण्ड घाक चुको ही बी नं चैन मिळियो । गुलाब, घावरी साण्ड री मोरी नं
 हाथें हाथ कांनो लेय सांच मारी । साण्ड भागला टोग्यु पगां रा गोडा जमी माथें टेक
 दिया । अचाणचक लागें हिचकें सूं पूनम नोचें तिरायो, वो रा पंजा, पागडां मे घट-
 कायोडा कोनी हा । नोचें पडता ई, पूनम, हाथ पगा नं छीडा कर जमी माथें चित्ता
 पमरग्यो । घाहयो रा डोळा बारें काड, वो घांटकी नं कीली छोडदी । वो सांभा रोक,
 घिर व्हेगो । ओ ठाळी देख, गुलाब घेक'र लो पवराययो । वा, धीनं जमेइए लागी,
 पण पूनम, टस सू मस नी व्हियो । गुलाब रं पसोनी सूटण लागी । वा घावरी कांन,
 पूनम रं सीनं ऊवर लगाय, काळजें री धडकण सुणणी आवती । काळगी घड-घक
 करती हो । गुलाब, पूनम री हाथ पकड जंमेडियो । पण पूनम अडोळी घर अडोळी ई
 रंथी । वा छागळ लाय, पूनम रं मूण्डें माथें ऊंवायदी । हमें पूनम, माथें नं झटकी देय,
 ऊठियो ।

‘म्है केत हों ?’

‘घाव भेय हो’

‘है कुण ? तूं कुण ? मगें कीं निजरा नो भावै ।’

‘म्है, म्है, गुलाब हों’

‘गुलाब ? कुण गुलाब ? कांटाळी ।’

‘लुगाई, डावडी, भावरी.....?’

‘कुण है ? म्है केत हों ?’

‘पूनमसिंगजी ! थोडा होस मे भावो । देखो, म्है गुलाब ही । तां'घजें साथ
 घाळी ।’

‘मोग्रजें साथ घाळी ? मोग्रजें साथं री कोई कोनी । म्है तो बाण्डो हों ।’

‘हमं म्है क्यांन समझावू ? क्यू ममखरी करो ? थोडा होस मे भावो नी ।’

‘होस ! हूँ, भावो’

गुलाब, पूनम री अन्टल सूं सटकती पोटली निकाळ, पूनम रं हाथ में थमाई।
 पूनम पोटली मांय सूं अक किरची निकाळ, गुलाब रं सांभी करो ।

‘हूँ तो होस में ई हौं पई । आप भरोगी मोघजा.....?’

‘मन धोरा किया बिना कोनी ऊय’

‘तो ल्याबी’

‘ऊँ, है ! बाकें में’

‘म्है आपे ई घर लेसू’

‘नी, जीभ ऊपर म्है ई भेल सू’

‘म्है, मर जासू । म्है भमल नी—...?’

पूनम, गुलाब रें चंरें मायें हाथ फेरती फेरती, बाँ रें बाकें तक लेयायी भर भमल री किरची बी री जीभ मायें धरदी । गुलाब सारलें पासं मूण्डी ले जाय, पाछी थूकदी ।

हमें पूनम खुदरें बाकें मे भमल री डळो घतण सारु गुलाब रें सांभी करी ।

‘ठाकरा ! मोघजा धोरा करो’

‘ह्यो भरोगी भगदाता !’

‘ऊँ, है ! आप ह्यो’

‘म्है लियो, आप भरोगी’

आ कैर गुलाब भमल री थोड़ी सी किरची, पूनम री जीभ मायें धरी । पूनम, दांता सू गुलाब री आंगळियां दबाय दी । बी रें मूण्डें सू हलकी सीक चील निकळगी ।

‘रोळ’ गुलाब मूण्डी बिगाड़र बोलो ।

‘काई कैयो ?’

‘रोळ’

‘देख ! मूण्डी सम्माळ’र बोल’

‘कोई होस में म्है तो बाँ सू बात करो । आपनै कोई होस तो.....?’

‘म्है होस में हौं’

‘तो पछे अं लुगाया बाळा छिनाळपणा बयूं करो ?’

‘लुगाई री दाब, लुगाई ऊपर अजमावण खातर’

‘म्है लुगाई नी, मड़द हो मड़द’

‘सबूत ?’

‘सड़ाली पंजा’

‘लुगाई सू कोई पंजा सहायू ?’

पूनम री आंगळी मे महारांणी री भूदड़ी देखर गुलाब चमकी ।

“आ बीटी तो महारांणीसा री आई”

“क्यूँ ? बाळा-बाळा तेंग बाप रा ताळा ई म्है ?”

“नी, म्है मलीमात घोळ्मू”

“बाई घोळ्मै ?”

“म्है महाराणीसा री घग घग घर रुं रुं घोळ्मू”

“पण घा ती बोटी मोई, नी ती घग मोई नी रु”

“घर घग घग नै तूँ के तूँ घोळ्मै”

“म्है वारी मरजोदान टायदी हों । म्यारलै तूँ बी छानी कोनी”

“म्है तो रुद रै ई पूरा घगा नै मो घोळ्मू”

“जई ई तो कैयूँ के नाड हो, नाड”

“बाई मुलळव ?”

“मुलळव साफ मोई”

“म्है समरयो नी”

“मो ई ली रोवणी मोई”

“घाडिया मत उलझा”

“घाही तो महाराणीसा घाती मोई । उलझिया घाप, म्है तो दोन्गू रै बिच्चै.....”

“है, तो दोन्गूँ रै बिच्चै मोई तूँ”

“मोई”

“ती लै भा मोमजी कानी तूँ तैने”

“नी, नी । म्यारळी मोत थोड़ी भाई.....”

“बाई मुलळव ?”

“बस, हरेक घात रो मुलळव याने समझावती रैवूँ । म्है क्यूँ कैयूँ म्यारळी मूण्डे तूँ के मून्दड़ी के रो संनाण मोई ?”

“मून्दड़ी ?”

“हयै, बोटी; छल्लो”

“लै छोट छमक छल्लो । पंजा लडाय फैसली करला । तूँ जीवी तो म्यारळी घात साधी, म्है म्यारळी चाकर । नी तो पछै.....”

“म्है हारुं ई कोनी”

“तो व्हे जावै”

“व्हे जावै”

“बस । उरग्या ? बाहर गिलीजी”

“रुं तो काई ? हाँ, सोचूँ के भांगळियां उतरगी ती.....”

“भरै वा, देखी तागत । हार सू बचण खातर छोला लेवी”

“या बात हवै तो बहे जावै”

“बहे जावै”

दोन्नों जोवणो हाथ रा पजा आपसरो मे जोड़, छूगिया छूड़ माय जमादी ।
पूनम बोत्यो “पैला त्थारळो दान”

गुलाब पूरी जोर लगाय लीन्ही पण पूनम री हाथ, बी सू नी डिग्यो । उल्टी
बी री भांगलियां काठी भीचोजयो ।

“हमै आप जोर भजमावी”

पूनम, गुलाब रै पंजा नै थोड़ा काठा दबाया ती वा सिसकारा करण लागी ।

“काई बिहयो ?”

“अई, मोमजी मां*****

इतरै जोर सूं भांगलियां दबाय नाखी है”

“जोर ती भजूं लगायी ई केत ?”

“ई सूं जादा जोर लगावनै काई भांगलिया तोड़ीना ?”

“बस । मानली हार ?”

“हार नी मानी ।”

पूनम हमै थोड़ी केरूं दबाव देव, बीरी भांगलियां नै काठी दवाई । हमै
गुलाब थोड़े जोर सूं सिसकारी कर, खुणी नमी सूं ऊपर उठाय ली न्हो, बी री भांगया
माय सूं मांसूं आमग्या ।

“काई बिहयो ? पणो गरब होई”

“वा कोई मडद होई ?”

“बयूं ?”

“इतरी जोर जुगाई सूं सहीज ?

“पैला ललकारै ई बयूं ?”

“मडद नै जोस दिरावण सारूं”

“कै री जोस ?”

“मडद मे थोक मोटी आमी व्हेई । जद बी मे जोस बहे तद बी नै होम नी
रैव भर जद बी नै होम व्हे तद जोस दोरी आवैई”

“मानग्यो । इवै आपा रो पट सकई ?

“काई भुतलब ?”

“भुतलब ओ, कै जो काम सारूं हूं जाय रैयो हो, बी काम में त्थारळो मदद
मने मिल सकई”

“पैला नी मांनता !”

“नी, पैला ती म्है समझ्यो कै मनै रीझावण सारु, म्यारळें सागै मेक रामतियो भेजियो भोंई ?

“तो काई रमण रो मतो भोंई ?”

“नी”

“क्यूं ?”

ई वास्तै कै म्है वां रामतियां सून ई रमत करूं, जका म्यारळें खुदरे वित्त चढ़ियोड़ा व्हैई”

“हैं फूटरी भोंई”

“भोंई”

“म्है जवान हौं”

“हवै”

“पछै काई कसर भोंई म्यारळें में ?”

“पूतम नै रीझावणरी”

“कै सून रीझी ?”

“व्याणू सून”

“पूख लागी काई ?”

“हवै”

“कीरी ?”

“पेट मांय”

“बीजी ?”

“बीजी, सोजी, काई नी, टुकर निकाल”

“टुकर तो नी पचदारी भोंई, महाराणीसा खास कर पताई”

“वे सून ला, मनै तो सोगरी व्है तो दे दे”

“पाप सारु तो पचदारी भोंई”

“क्यूं ? सोगरी नी ?”

“वो म्यारळें सीर रो भोंई”

“तो सीर पसटना”

“सीर में तो पणो बातां पावई चपटदाता !”

“सोचूं तो !”

“म्है, मोमजा महाराणी सा, मीमजी....”

“मुमाव !” पूतम गुस्से में कड़कियो ।

“काई ?”

"घोड़ी जोम सम्माळ'र बोल । तूँ डावड़ी घौई अर डावही ने भापरो सोंव
रेवणी सीमा देवई"

"सीवां उलाधण री मोघजो भादत कोनो" गुलाब बी तडक'र बोली

"घो पछे काई बके हो?"

"भाप अरोगो अन्नदाता, गुस्से नै अळगो धरी, मोघजो सीर अरोगो"

"म्है नी खावूँ, म्है...हूँ भूखी सूय सकूँ । भूख सूँ मर्रा कोनो ।"

"म्है पना पड़ूँ अन्नदाता ? कतूर बिसरावो । घाल अरोगो ।"

पूनम, गुलाब रै हाथ मांय सूँ सोगरी खोस'र लावण लागी । गुलाब पचदारी
पाछी भेलो कर, बांधी । कान्दे री पुळी पूनम नै भिलाम वा खुद बी सोगरी लावण
लागी । साण्डा रै भूण्डाने पाली घर दियो ।

रात, भाभे सूँ उतरण लागी । अन्धारी, पग पसारण लागी । दोनू साण्डा
रै बिचै गुलाब री राली टाळोजी । पूनम, खुदरी साण्ड रै पच्छम पासे, राली नांख
सूययो । पूनम नै जद बेतो भायो, अन्दरमा भाभे सूँ मुळरण लागी । वो गुलाब
नै नींद सूँ जगाई । साण्डा नै पाली चराय, पल्लाण रा कसणा काठा किया । रालिया
परोट पाछी ठिकासैसर बांधी । एक हाकळ करता ई साण्ड ऊमी ग्ही । लारली
टांगा छीदी कर, मूती री धार छोडी । मीगणा किया अर पावण्डा भागै बधाय ।
मीठी, मदरी बायरियो गावण लागी । नींद री गंठा मनवारा लागी । पूनम मलाप
छेड़ियो अर मस्त रहे गावण लागी ।

"घाल चकोरी, अन्दरमा रै देस ।

घो संसारी लोक निकामी,

करे दोवड़ा भेस ।

जुगत जोड़णी, भांग-सोड़णी,

पग पग पीड़ कळेस ।

रोई ज्यूँ रीत जीवण मे,

बतूळ्या हरमेस ।

घाल चकोरी.....

हुड़ी...हुड़ी...हवै...हुरैर...हुरैर..."

(१२)

पोगायतां री गरदनां आवण वाळं रें सांमी भुकमी । यासीन मैमूद नांव री
घो घादमी फोज रें खुफिया मेकमै री मुखियो ही । सुलतान रें सांमी भुकनं, वो
'आदाब भजे' कियो । पळूतर मे सुलतान वो माथें श्रेक निजर फंकी घर बीजें ई पल,
वोरी निजर तलवार री झूठ सून रमती खुद री आंगळियां माथें जा पूगी ।

यासीन मैमूद कंवणी सारू कियो "सुलतान आलमपनाह ! म्हे भाटिया नगर
म्हे घायी ह्हे । घठे सून दक्खण-पच्छिम मे तकरीवन सी मील माथें घी सुन्दर घर
मध्य नगर बसियोडो हे । विजयराज माटी घठे री राजा हे । राजा बडो ही बोर,
पराक्रमी, बुद्धिमान घर दयालू हे । नगर में सम्पत्त री छलखूट खजानी हे । किसी
बोत ई मजबूत घर मोटी हे । किसी री भोंतां घसमान सून घडें । किसी ऊपर ऊनी
घादमी चांद घर तारा हाथ सून ई तोड़ सकें । इतो ऊनी तो गड्ड बी कोनी उड़
सकें । किसी री श्रेक ई सिर-पीळ हे । घर किसी रें क्वाहू मेर साम्बी, गंरी घर
चवडी खाई खोदियोडो हे । उठे रा मोठ्यारा रा होसला बोत बुलन्द हे । राजा री
फोज मे दस हजार बांका घर टणकें सून टणका सिपाई हे, जका राजा रें श्रेक इतारें
माथें आपरा प्राण निछरावळ करदें । फोज कने बारा बरस लडें जितो जिनस जमा
हे । घापाने उठे सबसून बडो मुमकिल पांणी री व्हेला । बिना पांणी पियां भापांरा
सिपाई नी लड सकेला । पूरे मारण में धोरा रा झंगर ऊपा हे । रस्ती ऊबडू-खाबड
हे । जागा-जागा भवियां हे, ज्यां मे श्रेक सार्गे दस हाथी बी झूब जावें ती फूल-पान
बी नी लावें । घठे सून रसद पोवावण सारू दूजो कोई मारण कोनी । या सारी बाता
रें मद्देनजर घठे सून ई पाछी मुदणी ठीक रेंती घरार मोमम बी बीन बिगडियोडो
हे । रात-दिन आंधियां चालें । रेत इत्ती उडें कें आंधियां घुरोज जावें । आंधी, आपरें
सार्गे मिगळ छोड़ सांडो न उडा से जावें । म्हे पाछी घठे कियो पूगी ह्हे ? ई री बत्ताण
करण रें बिचार सून ही धडधडी छूटें । उरकी मारुयो यथी घर बाकी सब बन्दो
बणायो हे । म्हे श्रेकली भाग रें घायी ह्हे ।

यां दिनां मे, जद कें घापां लोग रोजा कर रेंवा हां, बिनां पांणी तो मांस
सेवणी बी भारी पड जासी । उठे जावणो मोत रें मामां-यगां जावण रें इलाशा बी
नी हे । किसी में अणगिणिया परकोटा हे घर हरेक परकोटे माथें बुरज । यां परकोटां
मे नेना-नैना निणा हे ज्यां में सून दुमरण घापां न अभीमांत देत सकें घर
घापां ऊपर पूगी निजर राख सकें जद कें घापां सारू बी बाम बीन दोरी हे । येही
हालत में घापां वार बी कियो कर सकांवा ? किसी मे श्रेक देवी री मन्दर हे । ई
मन्दर रें चुन में सारा काकिरां घर राजा री जबरदस्त घास्वा हे । मन्दर री लमीको

श्वामो श्री, सारी परजा नै अक सूत्र में पिरो नाखी है। सैग बी रो बरोसी करै, राजा बी रो हुकम मानै। ई मन्दर मे हसीनावां रो नाच देखती बिछिया उरफी सूं नी रैयी गयी। वो दाद दो घर भेद खुलगी।

उठै घटना सूं घटना घादमी रो मकान सोनै-चांदी सूं ऋद्धियोड़ी है। मोती किवाड़ी माथे ई माफक नक्कासी सारु काम मे लियो गयी है, जाएँ वो सोनो नी पीतळ है। बेसुमार दोलत बिखरियोड़ी पड़ी है। घापा रे हमसे रो सुगग उठै लाग चुकी है घर नगर रा सैग वासिन्दा घापरी सगळो दोलत राजा कर्न जमा करादो है। राजा पांच हजार रो अक नुं दी फौज खड़ी करली है। नगर मे भाटी राजपूत भीत बादर है। ग्रामण ऊंचा राजनीतिक घर वैश्य चानाक। सगळा अक ई घरम नै मानै।”

इत्ती देर चुपचाप सुणतो सुलतान हळकी सो खकारी कियो घर सब लोग भाटै रा बहेग्या। भीत रे पैला रो सघाटो छायगी। सुलतान गरज नै बोल्पी “तूँ घा कंबली बाबै कै जयपाल रै जामीरदारां नै नी कोई भीत सकियो, नी जीत सकेला ? जे हां, तो घा कैयनै तूँ म्हारो तोहीन कर रैयो है। मँमूद नी किणी सूं हाग्यो है नी किणी सूं हारैला। दुनिया रो कोई ताकत बी रै पाक इरादा नै घमेली जामी पैरावण सूं नी रोक सकै। सुलतान भुकावणी सीखियो है, भुकाणी नी, मारणी सीखियो है, मरणी नी, जीतणी सीखियो है, हाग्यो नी। खुदाबन्द मर्न पैदा ई, ई सारु कियो है कै म्हे बुतपरस्ती मिटावूँ घर इस्लाम रो घमल करावूँ। म्हे अक काफर री इत्ती तारीफ बरदास्त नी कर सकूँ। जे घाइन्दा सूं थारी जवान कोई काफर रै हक मे खुली तो जवान लिबवा खूँला।”

सुलतान सोनै रो साकळ सूं लटकत घटै माथे चांदी रै बशियोड़े डंडे रो चोट करी घर गुलाम हाजिर बहेगा, सैग दिसावां सूं जाएँ कोई खुलगा समसम रा जाहूगर रो डण्डी घूमगी बहे। सेनापति नै बुलावण रो हुकम हुयी। घलउत्बी, सुलतान रो गुस्ती देखनै डरगी पण सुलतान बी रै डर नै ताडगी। वो घापरी अक हाथ बी रो गरदन रै सारै कर, बी री बीटलीदार जुलफा मे आंगळिया सूं कांगसी, करणी सरु करदी। उत्बी रै गालां सूं लोई टपकणी सरु बहेगो, सुलतान अक हळकी सीक चुंटियो बरियो हो।

सेनापति रै घातां ई बिना बी रै मामो जीयां ई सुलतान हुकम दियो “आगली जुम्मेरात सूं पैला माटिया नगद माथे सुलतान रो भण्डो फेरावणो लाजिमी है। सठेरा बुत तोड़नै मसीत चुणदी जावै। जुम्म री नमाज उठै ई मदा कर, रोगा खोलिया जासी।” सेनापति बोले, बी पैला ई सुलतान थोड़ी जोर देपर बोल्पी “म्हारे हुकम रो हर कीमत माथे तामील बहे। फजर सूं पैला-कूच करो, फौजां माथे बधावो।”

सेनापति इस्तदुवा की 'हुज़ूर जहांपनाह ! वाराह, लंगर घर बूटा बी भाटियां रें खिलाफ इमदाद करण री कोल कियो है । हुकम छै ती अक दिन वारी बाट देखली जाय ?"

मुसतान उणी लेंज मे बोल्यो "नी.....बानि खबर कर दी कं वे सोया भाटिया नगर पोंच जावे । म्हे फजर में ई कूच कर दूला । घबे घां लोग जाबी, म्हे धाराम करूला । उतबी रें इलावा संग लोग खिसकग्या । मुसतान उतबी री जुल्फां सू रमण लाग्यो ।

(१३)

"कुरजी"

"कुण हरू ? की घोंई ?

"तू' ती रेंगी कबारी"

"तू' पछै कुणसी परणीज जासी ?"

"भरे, हूँ ती त्वाण्डे सू' केरा खा लेसू', पण मुसकल घोंई तामजी । घणी बाव करती ।"

"भर ती कुण भी साकी जलम भर री घोंई ? घणा सू' घणा दस दिन, मीनी दो मीना "

"हूँ, साकी ती उमर भर री कोनी, पण कीं भरोसी ? मां नी करे....."

"बाद कर मूण्डी । राण्ड रें बाकें मे मिरचां बसू म्यारळी....."

"हूँ, तामजी राणी जुग जुग जीवे । पण जाणें क्यूं म्हेने रें रें नें लखावे कौं—"

"कौं, की ? बोले क्यूं नी ? चुप बघान व्हेगी ?"

"म्हेने लागे कौं हमकें ई सार्के री कोई मन्त कोनी?"

"क्यूं ?"

"बस यूँ ई लखावे । मांय सू' जीव जाणें क्यांन ई व्हे रेंयो ई पयो"

"भाऊ दादो ! यूँ की करे तू' ? तेने मोमजी सुख सवावे कोनी ?"

"म्हे ती त्पारळी सौगन, सार्च मन सू' चावू' कौं राणी तेने डोल-याळो रें समचे केरा साय से जावे, भर म्हे नाचू त्पारळें बिया मे"

"हरू !"

"बाई ?"

"तू' म्यारळी साची सर्द घोंई ?"

"वा ती म्हे हूँ ई, कोई दूजी राण्ड तामजे मांमै मूण्डी छोजे तो जीम

कतरलू”

“तू केत जाइस हमें ?”

“देख, म्यारळी अेक मामू भौई पूंगळ में, पण दो बरसां सूं वो दिसावर मे ई बस ई । सुणी भौई, कोई नुंवी मामी रो स्यापो घातियो पो । म्यारळी हमें कोई ठिकाणी कोनी । सोचूं, म्है बी देवी रै चरणा चढ़ जावूं, पण.....”

“पण की ?”

“पण, सिरदारां रो मरजी घामै तो अेक पावण्डो बी कोनी धर सकू”

“सिरदार काई तैनै मोल लायाई कं घर मे घाती भौई सो भंडो बी बई पई ।”

“तू सांघ सुणणी चावै काई ?”

“भूठ बोलणी सूं काई मिळली तैनै ?”

“जावण द्यै, की करसो सुणनै? म्यारळी पीड़ मनै ई भुगतणी भौई ।”

“म्यारळी सौगन घतू”

“कुरजा ! सौगन मत घत म्यारळो भैण । देख, म्है तै सूं कद कोई बात छिपाई ?”

“सांपड़तै लुकावई पई घर फेरूं पूछै कद लुकाई ?”

“भैनै घा मोमज नैड़ी”

कुरजा, हरू रै नजीक गई । हरू बी रै कान कनै भूण्डो ले जाय, हवळ सूं सारी बात बतावो । सुणेर कुरजा रो आस्था थचम्बै में फाटोड़ी रेनी । दोभू जवान ही । हरू, उमर मे कुरजा सूं दो बरस छोटी ही, पण संसार नै परलण मे चार बरस मोटी ।

“इव काई व्हेसी ?” कुरजा भूण्डो उतार बोली ।

“व्हेणी की भौई ? सिरदारां सूं तो छांनो कोनी । लाण्डे सूं फेरा खवाप देसी । बाई व्ही तो रेत रो पोटली, घर बीरो विहमी तो सिरदारा रा पूत तो सिरदार ई रैसी । घर म्है ? म्है भखण्ड कंवारी ।”

“हरू !”

“काई ?”

“जोव मे घावै के सारा बन्वणा तुड़ाव कठे ई ना'स जावूं ।”

“बी सूं काई व्हेसी ?”

“भुगती”

“भुगती ना'सण में कं मरण में कीनी सई । भुगती जीवण मे, दूभल में भौई”

“म्यारळी होमत म्हां मे कोनी”

"घोंई तूं कद घजमाई ?"

"म्यारळें घजमावणो बी कोनी"

"काळो घोंई तूं । ससार तो यूं ई चालतो रंसो । भेर ती घाज वाजो घोंई । म्है राखें सू मिळ'र सेंग ठोक कर देखूं । साकळें पैला तूं घर राखो दोन्यु भेय सूं धुरव कोनी...."

"पण...."

"पण वण कोई कोनी, जीवण री जुगाड करणो हवें तो हीमत सूं काम लेणो पडसी ।"

"म्हैनें डर लागई ?"

"की री"

"घरकां री, ग्वाड री, जात री घर राजरी" ।

"अं सेंग फूड्डा बन्धण घोंई"

"तूं बी तो बन्धण मे बन्धियोडी घोंई", तूं क्यूं नी....?"

"मोघजें कोई राखो कोनी, म्यारळें माय रीमण बाळो"

"तूं म्यारळें सागें...."

"म्है तज्ज माई त्यारळें सूं । की समझें बी कोनी । म्हैनें कैरी डर घोंई घर कुण मां री मोटी म्यारळें सारु सेंग सजाय उडोकई पयो ?"

कुरजा री नेणां सूं दळक दळक घासूं दुळण सागा । हरू घापरें पल्लें सूं वां घासुवां नै पूछ'र बी नै काळजें सूं बीडली । दोन्यु विचवें सन्नाटो बोलण लागी । वे दोन्यु चुप ही । साकळें रुंख मायें भेक जोडी कम ही । भेक तीतरी, जमी मायें चुपचाप पडी ही । हाडा, बी री भास्व्यां निकाळली । गुलरिया बी रें भांस रा लोया तोडण मे लागोडा हा । गळियां गप्पा मारें ही ।

×

×

×

"बापू !

"हो बेटा !

"बापू म्यारळी तलवार मनै सूंवी । हूं दुसपण रें दळ नै बाढ नै...."

"तूं घज्जुं नैनी घोंई बेटा ! त्यारळें बाप घर भाळ रें बेंठां त्यारळी चारो घज्जुं केत सूं भावें ? तूं त्यारळी मां सागें, मय्या रें गांव जा भोष घणा मेळा मगरिया भरे । तरिया तरिया रा रामतियां सूं रमण घर छावण पोवण री उभर घोंई त्यारळी"

"नो बापू ! मनै मेळा मगरिया कोनी रुचें । म्है तो चारें मागें, रण मे रमवा जायू"

“तू बोली बोली बैठे कै हूँ चिणमट री”

बीस बरसा रो भोख्यार भोटोहो भाई बड़की दियो ।

“देखी भौई म्यारळी तलवार ?”

“हाँ, हाँ देखी बादर खाँ री तलवार । याँन का डोका सूँ तो गुलरिया बी बोनी बीवई”

“बगती !”

“हाँ, बापू”

“तू ब्यूँ मळूँ भौ ई छोटे भाई सूँ : ई में काई समझ भौई ? तू तलवारां सारी की सारी बारें निकाललो कै नी ?”

“हाँ बापू ! मझतीस भौई ।”

“हवे, जा ! छोद तलवार री निर्ग कर, चार दिरावां परी”

“जादूँ बापू ।” बगती छोटे भाई काँनी दाँत काढ़र बारें निसरगयो । छोटीही हूँ हूँ कर रोवण हूकी ।

“घरे, तूँ सेर घेँर रोवे ?”

“बो भाऊ म्यारळी.....”

“भाऊ तो काली भौई, तूँ काई बी रँ सरखी भौई ?”

“हो तो छोटी ई बी सूँ, जदै ई ती मनेँ भमकावेँ ई पयो ।”

“पाछी भावण द्यै बगतेँ नै, म्हे बी री सागैझी स्याँन बिगाड़ूँ”

“बापू !”

“हाँ बेटा !”

“म्हेँ चालसूँ ताँमजै सागै, साकै मे”

“हवेँ, बेटा ! जावो मवेँ सूँ रेबी । साकळईँ चालसाँ मापाँ सागैईँ”

साकळैँ भागणी सूनी-सूनी लखावण लागी । सूवंटो, सींवा साँग, सूरज री भागवाणी मे पूरब दिस री जातरा मे निकळग्यो । मोड़ी ऊपर भेक उल्लू गुरणी बोलेँ ही ।

×

×

×

“जमोदा !”

“को कवेँ ई पई, रमवा ई नी द्यै”

“बेटी, बासण बरतनां री की कियो ?”

“मोडका सा बारें काढ़ मेलिया भौई घर बाकी सेग बाई में दूर दिया ।”

“गैणा-नगदी ?”

“गैणा-नगदी तो गढ़ में जमा करावण सारु भइजी नै सूँव दिया । मारण

री खरचो सारू पांच सौ टीकलियां राकी पो ।”

‘गादी रो काई कियो ?’

‘गादी तो संग सागै लेणा पड़सो । चार पोटां बांधी पो ।’

‘साकळीई सूरज निकलिया पैला सिधावणी भौई, सोवरा हमार ई सेकलै’

‘हवे, बाई, सेकूँ । पण भइजी घर भाऊ ?’

‘वां नै श्रेष ई रेणी पड़सो’

‘क्यूँ ?’

‘वा नै कुण जावण देसी ? कालो’

‘पण क्यूँ ?’

‘मोट्यार साकी करिस’

‘की रै सारू ?’

‘राज री रुलाळी सारू’

‘की री राज ?’

‘राज, राजा री’

‘राजा आपां नै दुवकर पछीई को धातै नी’

‘सो स, छोरी । तामजै जवान घणी बधनी दीसै ?’

‘हूँ, तो, राजा आपां नै की भ्याल करई पयो, वो तो मैलां मे मोजा माणै
घर की री रुलाळी सारू आपणा भइजी घर भाऊ मरै । ओ कुण सी भ्याव भौई ?’

‘छोरी ! घणी सपरवटी व्हेगी, की संको ई कोनी, राज में बात पौंची तो
गरदन उतार लेइस’

‘म्है की सृ बीवां करां कोनी । भलै ई गरदन उतार लै’

‘जसोदा ! तूँ सका बावळी तो नी व्हेगी ?’

‘बावळी भई नी बाई, बावळी भौई श्रेष री राजा । लुगाई, टाबर जावो
पा, घर भइद या सारू कट जावो । लुगाया पछै काई या बापसावणां री स्यापी
धातण सारू जावै ?’

मुसै सून भरियोड़ी भमको, हमे जसोदा री चोटी पकड़ैर, धेक बिणगट धरी ।
घर लातां, घुंसां सून वो नै भधमरो करदो ।

‘राण्ड कटकी कां बां करई । बापसावणी सून बोली-बोली नी रैदजै ।’

‘नी व्है चुप, तूँ भलै ई मार काढ’

‘जसदी ! तूँ क्यूँ मरणी चावै मोमजै हापां ?’

‘तूँ म्यारळै भइजी घर भाऊ नै मरावणी चावै । मां कै री? तूँ डाकण
घौई ।’

“घणा जवचप मन कर कुत्तडी ! हमार नागी कर डांम चेढ़ देसूँ राण्ड रे”
“म्हे त्पारळी धाकळ सूँ पछेई को बीवां नी ।”

साकळी, सलाखां सूँ सखोलियोडा, गोरी चामडी रा छुंतरकां नै, कीड़ियां
घोस'र ले जावती । सूनौ डेरी सांव-सांव गूँजण लागी । मूजडी बळगी, बदाण
बरतीजगी । सेर भूतां रो रैवास बणग्यो ।

✱

(१४)

रात रे तोजे पोर पुनम, गुलाब कने पाछो पूग्यो ।

“गुलाब !”

प्रांखियां मसळती थकी गुलाब घाळस मोड़'र ऊठो ।

“पधारग्या”

“त्पारळी भाग रो वच'र घायो हों”

“क्यूँ ?”

“सारी भेद खुलग्यो ।”

“पछे ?”

“पछे की ? ज्यास घेर सूँ घिरग्यो ।”

“सका कूड़ा” गुलाब मूणडी बिगाड़'र बोली ।

“तेनै म्यारळी मरोसी नी भावेई ?”

“यां ऊपर मरोसी करने कोई क्यूँ आफत गळ मे लेवे ?”

“क्यूँ ?”

“घाया बड़ा तोजसी ? बापड़े सेनापति नै....”

“वो घणी हुसियार भोंई”

“यां सूँ कम”

“कमान ?”

“साधो बात तो यां म्हेनै बताई न्हो, तो बीं नै बतावीं”

“त्पार त्पारळी हाथ देख'र साच साच बतावूँ”

“म्यारळी हाथ कांई देखसी ? सिकल देख'र नी बजा सकीई ?”

“सिकल सूँ तो लीमड़ी लागे ई पई ।”

“म्हे खालाक सागूँ पई ?”

“नी तर की ?”

“खुद तो कागले लूँ बीं टाया लागी ई पया ।”

“वो तो मैं हूँ ।” छोड़, इतने कान खोलकर सुन लें । “त्यारली मौसम सारे मेले नी बैठे । साबल ई तू पाछी बलजा ।”

“क्यूँ ?”

“क्यूँ की ? मैं कैतू जी सु”

“पण म्यारली काई कसूर भौई ? खुद ई तो मैंने दिया सवा री छोटी-मरी सुणावो घर ऊपर सू दबावोई”

“मैं, कै रै बग दबावू ?”

“हूँ तो, पछेई को जावां नी”

“काली रहेगी काई ?”

“काला तो भाप ब्हियोड़ा दीसीई पया, दाकू थली पी काढ़ी दीसे ।”

“तू क्यूँ बल ?”

“बल म्यारली लोक राण्ड, मैं कै रै बग बलू ?

“तो पछे भाग भेष सू”

“मैं याने काई दुल देखू ?”

“दुल तो मैं देखूई पयो । सुण ।”

“मौसम की नी सुणली”

“ममलरी छोड़, काम री बात सुण घर समझ”

“हुकम करो”

“केलू मोबड़ी बड़ा र बात करई”

“भगवान निकल ई भैड़ी यही भौई”

“भगवान तो आसी मली फुरसत सू यही भौई पण.....”

“पण काई ?”

“भाग में पासवानी निकली”

“यां तोजती हो, छुड़ादयो या जूण, बिना करली म्हासू”

“भली मूण्डे लागली सू”

“बाकरी भलू राबळ”

“सभी बाकरी । देव ! मैं तारो बिगल समझावूँ सो याद रात र राव नै पूजतो करली भौई”

“मैं भैरवी जात्र भेष सू ?”

“भैरवी नी तो की रो मां री मोटी भेष भैरवी भौई निकामी ?”

“क्यूँ ? भाव ?”

“दरली पड़ती, सेनापति रा भाव तोलण भौई, घर मां व की बाणी पड़ती”

“भैर तो मोलजा सोला भाव ?”

“त्यारळा भाग तो यूँई घणा उमदा भौई”

“पोमावणी तो कोई पां सूं सीखै”

“सीखलै । काम भासी”

“म्है साव घेरुली क्यांन जासूं ? नी नी करतां सो कोस रो भौं म्हैसी ।”

“क्यूं खावै कोई तंनै ?”

“मारै जी नै मल्लो भारै, मल्लो नै कुण ?”

“जद टाळपटोळ क्यूं करै ?”

“गैलां सूं भणजाण हूं ।”

“भेय सूं दो कोस ऊपरां वेमजी रो तळो भौई । भोव सूं दो मानसा त्यारळै सागै चालसी । मारण मे सैग गावां नै सावचेत किया । बी गलै ई फौजां भागै वघैली ।”

“भापरै सारु राव नै कांई भरज करूं” ?

“भरज कांई परचावणी करणी भौई ।”

“कांई ?”

“हाँ, परचावणी करणी भौई कैं घणी बोदी मिनख हो, बोखी भियो कैं...”

गुलाब, पूनम रै मूण्डे भागै हाथ दे'र बी रो बोलणी बन्द कर दियो ।

“सौगन भौईं भागै भेक बी भाखर बोलग्या तो”

“पूनम मून धारली ।

“हाँ, की बिगत भौई ?”

पूनम चुप ।

“बोली कोनी कांई ? कांई कैता ?”

पूनम केरूं चुप रैयो । हमै गुलाब, पूनम री पासळियां में भांगळी सू गिल-गिलिया करण लागी भर खुद हँसण लागी पण पूनम नी हँसियो, नी बोलियो । जद गुलाब दोन्यूँ हाथां सूं पूनम रै गिलगिलिया करण लागी तो बो, बीं रा हाथ पकड़ लिया । गुलाब इवै कोई दाब चलतो नी देख, जीभ मूण्डे सूं भारै काढ़ी भर पूनम रै भासां ऊपर फेरण लागी । पूनम बीं रा दोन्यूँ हाथ छोड़'र हल्लकी सो धक्को दियो ।

“त्यो माफ करो, बोल जावो । सौगन भौईं पांनै...”

“देख ! म्है भेक'र सौगन मानली, घड़ी घड़ी सौगनां नी मानूँसा ।”

“रिसाणां म्हैग्या ।

“हूँ”

“की किया राजी रहो ?”

“म्है हमै राजी नी म्हैलुँ रो”

“उमर भर रुख्योड़ा ई रैसी ?”

“उमर भर री मोमजै काई वारती ओई त्यारळें मूं ?”

“भापरै नो ब्हेली, मोमजै तो ओई”

“तामजी तूं जांणी”

“खैर आप सनेसा देवी ”

“सनेसा ?”

“हूं, ओक राव खातर घर बीजी महाराणी सा सारू”

“महाराणी सा सारू तूं आप, घर राव सारू सनेसी मेसूं सी सावळ पूतली नी कियो ती त्यारळा फूटा ।”

“मोमजा ती खैर फूटोड़ा ई हंता”

पूनम सुलतान रै फौज री बिगत, सुसतान रा इरादा, हमली करण री सगती, मोरचा जमवण रा पैतरा, गैली घर हूजी छोटी मोटी बातां जकी बी जाण सक्थी वे सारी गुलाब नै समझायदी ।

“राव, आप बाबत पूछे ती ?”

“म्है सुलतान सूं पैसा पूगूंसी”

“जे नी पूग सकी...”

“ती समझलै कै पूनम दुसमण रै हाथां मार्यो गयो”

गुलाब थोड़ी ताल सारू गळगळी थ्येगी । वीं री कालजी धक धक करण लागी, बी रै मन में आई कै ओकर बिछड़्यां पैसां पूनम बी नै सीनै सूं बिपायलै । पण पूनम ती भाटे री बण्योड़ी हो, गुलाब रै नैणां री कोर ऊपर घासूं भा'र रुक्या । बा, भर्योड़ा नैणां सूं पूनम रै सामी जयो । पूनम आपरी मूण्डी हूजी दिसा में फोर लिथी । गुलाब वीं रै पगारै हाथ लगाय खुदरै नैणां ऊपर लगाया । पूनम सारै खिसक्यो । गुलाब वीं रै पगां हेटली रख मेय ओढ़णी रै पल्ले बांधली । दो साण्डीं आमी सामी दिसावां में भदीठगी । कुम्भलायोड़ी गुलाब, बायरियै सूं बिखरण लागी ।

✱

(१५)

'दगो दे गयो वेंरी,
चोमासै रो चाकर,
काळ कमर मे दी हळवांणी,
जीवण व्हेग्यो माखर, रे भई
दगो दे गयो वेंरी ।'

शेक मइद घर शेक लुगाई मस्ती मे नाच रेंया है । पास बैठा दो भिनस डोल,
तासक बजा रेंया है घर टेर भेलो टेर मिळाय भूम-भूम'र गा रेंया है, 'दगो दे गयो
वेंरी ।'

'क्यूँ रै किसना ! पूँख कित्ता भांगळ ऊँची घायी ?' बिलम री शेक सुट्ट
खँचता घका, ठाकर जेतसी भाटो पूछियो ।

'शेक बैत दो भांगळ ।'
'हां भई, घायी केवी दूवी ।'
मइद—किसन, बिसेरघा दाणां दीय,
माटी मे कद मोती होय ?
लुगाई—सीधे रात दिवस कर हेत,
ती मोनी उपजावे रेत ।

'जीवती री जोड़ी' भीड़ मांय सूँ शेक मोट्यार बीत्यो । लुगायो, घूँघटा में
खीं-खी कर जोर सूँ हँसी । डोलक वाली जोर सूँ घायी दी । डोल-वाली री भरणाटो
हुमें तेज व्हेगी । नाचण वाला बी हुमें पूरा मस्ती में घायभा । लुगाई पणी तरीर नै
तोड़-मरोड़ नै कदेई नीची भुकं कदेई लारै । मइद बीं नै घायण सारू घायें बधै पण
वा हाथ रा फिटकारा देय ऊँची फिर जावे । भीड़ मांय सूँ लुगायां जोर सूँ हँसै ।

'जस्सू !'
'हां, बापू ।'
'मावो'
'तामजें गोडें हेटें ईं ती पड़ी घौई हबली ।'
'पांणी घर तासळो ला बेटा ।'

जस्सू पांणी री शेक छागळ घर शेक तासळी साय बाप रै कने मेन
दियो । ठाकर, घमल री शेक मोटी हळी बीं तासळें में मेस, पांणी मांय घमल
गळावण लागा । नाच हुमें खतम व्हे चुकी हो । मइद-लुगाई शेकानें पूठ केर पतीगो
सुखावण सारू गाथां रै पत्तां सूँ हवा करता हा ।

ठाकर, ह्याळी मांय चुल्ली भर, गांव रा सत्रसू वूढा भर रिस्ती में काका,
पेगार रे होटा ऊपर ह्याळी ऊंधाई, काका खेगार अक खंकारे रे सभचें सबडडड
करता, ह्याळी खाली करदी ।

‘सीरो, नी आई ?’

‘हमकें मावो की फोरो आई काका, त्यो केहू भळीवां’ भा के’र ठाकर
जेतसी, भमल रो अक डळी तासळें में घडियो ।

‘हां काका हमे ।’

वूढी, सबडकी लगाय अक खंकारी कियो भर भूँछां माये हाय फेरियो ।

‘सीरो आई काका ?’

‘हां, आई जेतसी, हमकें जोर रो सीरो आई, तूं कजूस घणी रहेगी रे ।’

ठाकर जेतसी बारी-बारी सून सेंगां नें भमल रे पाणी रा सबडका लगवाया ।
पुद चार-पांच सबडका लिया भर अक किरची जीभ माये घरली । भमल रो अक
मोटी डळी, मांगणमारं सारु मेसी ।

‘बयूं रे रैखत ! काळी साण्ड रो कोई बावडु आई कै नी ?’

‘भाशूण रा गांव रा बावडु आई । मांगणमार उठाई ।’

‘मांगणमार, उठाईगिरी कद सून सरु की ?’

‘मसली मांगणमार तो मांग नै ई लावे भद्रदाता । हां, हमें लगं घणी
सर्फंगा रहेगा । भाटिया रो भूँछां मे हाय घातण रो मसखरी वे ई रिया करे ।’
ढोलक बजावण वाळी बोल्या ।

‘मसखरी रो मजी चलाया ई सरसी, कै दिया लांमजा सिरदारं नें’ जेतसी
पोड़ी गुत्तो भर बोल्या ।

‘हुकम भद्रदाता, भूगती कर देसूं ।’

‘कोई ? बात, कै साण्ड ?’

‘हुकम, बात ।’

‘हवै । मोई बात केवी ।’

‘कैवा बात अटापट रो

भा टटपट रो, भा सटपट रो

भा टिटपिट रो, भा किटकिट रो

म्है कैवां बात सटापट रो ।’

नाच केहू सरु रहेवी । ठाकर यिनक में ऊंवा माया ।

ठाकर जेतसी रे गांव माये ई ओ गांव बग्योड़ी है । गांव में कोई पचाम घर
है उस में सून घणकरा तो भाटी राजपुतां रा ई है । संग पांचमीं पोड़ी है जाय केह

बाप रा व्हे । दो-चार घर भेघवाळां रा, अक बाणिये रो, अर अक घर बांमण रो हे । यां न घर मनेई कंवी, हे सेंग रा सेंग भूंपा । ठाकरा रो रावळी, भाटां सूं चुणियोडी हे । बाकी सेंग घर माटी घर मोशर सूं नीपियोडा हे । बाघा घर, ऊपर सू उघाडा, बाघां माथे लकडी रो ताण्ड ।

सारले सालां बिरखा ठीक-ठीक व्हेनी । बिरखा ती ईं वरस बी व्हे, पण सांतरी नो । हा, तळाई में छः महनां रो पांणी जरूर मरग्यो । खडीना में बाजरी रा दाणां बिबेरिया । पूंख अक वेत दो मांगळ ऊंचा घाया हे । यूं सिन्ध इलाकी नजोक हे ईं वास्ते घणी दौराई कोनी । गांव रा घणकरा घर, मवेसी पाळी । पांच सौ साण्ड, दो सौ ऊंट, सौ गायं, तीन सौ भेड़-बकरियां हे, गांव रो कुल सम्पत । सेंग मपणायत सूं रेंवै । काळ पड़े जद छागां से'र दूनी तळाई माथे डेरा लगावै । यू गांव रा भिनख चार-छः महना ईं गांव मे रेंवै, जदतक तळाई रो तूण्डी नो निकळै ।

अंधारे पल रो साठम ही । चन्दरमां भजूं उगी नो ही । ईं वास्ते मसालां चेतन करीजी । मांगण्यार सच्छेदार बातां सुणाय-सुणाय सर्वां नै राजी करण मे लागोडा हा । टाबर-टीगर, नीद मे सुयग्या । थोडी ठण्ड बी पडण लागी । धोरा रो घूड, हमै हेम ज्यूं ठण्डी व्हेनी ही । ठाकर जेतसी, मूती करण सःरु थोडा पावण्डा भाग बधाय अर बां नै जीवणी दिसा सूं कोचरी रो उवाज सुणोजी । ठाकर थोडा रकग्या । पगरखी खोल सुगन फोरघा । दो पग बी भाग नो बधाय अर डावी कांती सूं अक काळी नाग फूंक्याही करतो सामो दीस्यो । ठाकर रै काळज में भी बंठावो । भाज सिध्या पैला बी अक उल्लू वा रै रावळी ऊपर खाली बोल्यो ही । ठाकर बिना मूती कियो ईं पाछा मुडग्या । अमल रो अक मोटी डळी बाकी ले घत'र वे पाछा, भीड़ मांय, भापरै भासण माथे भाय बंठा अर हुकम दियो ।

‘हमै भाज रो तमासो बन्द करो । सेंग लोग पैला म्हाारी बात सुणलो ।

ठाकर बात कंवण पैला बी दिसा में दीठ फंकी जी दिसा मे वे काळी नाग देखियो ही । पूनम उठै साण्ड नै भेरतो ही । वे पूनम नै हाकळ करी ।

‘बापू ! सेंगां नै अये ईं रोकलो अक ऊण्डी बात भोई ।’

सेंगां रा कान पूनम रो बात सुणण खातर सावचेत व्हेगा । लोग पाछा जमीं माथे बंठग्या । पूनम, बापू रै कान कनै मूण्डी ले जाग बां नै सारी बात बताई । लोगां नै कोई मंतब रो बात लखाई अर वे, बात सुणण सारु उतावळा व्हेगा । ठाकर पूनम रै माथे हाथ फोर लाड कियो अर बोल्यो ।

‘सुणो रे भाई सेंग, ध्यान लगा'र सुणो । बीत मंतब रो बात भोई, थोडा सोच'र बोल्यो, ‘अरे मांगण्यारां थां जावी । हमै गांव मे खेल कोनी कराणो ।’

पूनम कानी मूण्डी कर बोल्या, 'पूनम, यां नै भोकांनी लेजा'र खानगी दे दे।' पूनम उठे सून व्होर व्हियो। मांगण्यांरां नै हाकळ करी, 'घावो, म्यारळें पाछें घावो।'।

मांगण्यांरां री टोळी, ठाकरां नै मुजरी कियो, जे बोली घर बिड्दाया। ह्मे ठाकर सैवा नै हुकम दियो, वें नजीक सिरक जावें. बात बोन छुनिरी धीई। सेंग लोग ठाकर रें भेडें-छेडें नजीक सिरक्या।

'गजनी री सुलतान, मसूद सनोट माये घावो करण री नीत सून घावई। वो सिध्दु नदी नै पार करलो धीई वर वी री सत्कर घापणें गांव सून निकळला। भापा लोगा नै साको करणी पडसी। सो मोट्यारां कमरां कसलो।'।

मुण्ठां ई सुगाया रें घडबड सांगी। सेंग भापरा टाबरां नै सम्माल वां री लाड कियो। जे थोडी घणी गुसपुस वो सर करदी। ठाकर थोडा तडक नै बोल्या—

'बुप व्हो, सुणी बात,'

'भीड माये मून भेक मिनस बोल्या, 'बुप व्हो रें, सुणी ध्यान सून।'।

'गांध मै कित्ता मोट्यार धीई?'

'बूढ़ा समेत तीन सी।' भेक सवाज धाई।

ठाकर थोडा कडक'र बोल्या—

'बूढ़ा सून काई मुतळब ? ई गांव में कुण पांगळी धीई ? सेंग सार्जे सरीर रा धीई। म्हने देखी, साठ बरसां री हूँ। पण, यां जेडा चार मोट्यारां नै भेकीं सायें पछाडून। भेक वार सून चार भापा काहूँ। साको राजपूत री घरम धीई। सेंग त्यार हो कै नी ?'

'भीड भेकीं सार्जे हुंकारो दियो, पण भेक मिनस ऊभो व्हे बोल्या, 'हूँ त्यार कोनी।'।

'कयू ?'

'ई वास्तें कै मीमजै, सुलतान सून कोई वीर कोनी।'।

'कोई मुतळब ? राजा री दुसमण भावां री दुसमण कोनी?'

'राजा म्हाने कोई नांणु भुक्त रा कोनी देवें। खुद री मैनत मजूरी कर पेट मरा।'।

ठाकर थोडा गुप्ते में भरसवा। 'राजा सून बिद्रो करण री दण्ड काई व्हे, भा मायस तू जाणें कोनी?'

'म्यारळें जाणणी वो कोनी, कयू के नी तो हूँ कोई चुक करी, नो मने कोई दण्ड दे सकें,'।

'ई गांव री, गांव री घरती घर घन री भासक राजा धीई तें कै त्यारळी घाप कोनी।'।

‘देखी ठाकरा, भ्यारळें मुयोई बाप रै सामै जावणें रो जरुरत कोनी । धानें राजा री वाकरी करणी व्हे ती करो, म्हें मुफ्त मे भरण मै त्यार कोनी । राजा म्हानें न्यास कोनी करै ।’

‘हूं’ ठाकर थोड़ी देर सोच’र बोल्या, ‘भ्यारळें, भेजी कम ओई नी तर म्हे तेने समझवती सारी बातों । खैर, तूं म्हासूं अकलें मे मिळजै ।’

वो मिनस सठ’र व्हीर व्हेगी । सारै सूं लोग वो नै फिटकारा देवणां ससू किया ।

ठाकर फेर’ बोल्या, ‘मुलतान री फौजां भागै बघई पई भर काल सिध्या कै रातै, घापणें गांव तक पूग जावो । यां लोग तो जाणो ई हो कै तन्नोट साह मारग, घापणें गांव व्हे नै ई ओई । घापां नै घाज रातोरात गांव खाली करणी पड़सी । खावण-पीवण री जरुरी समान, गैलां, नगदी घर काम खलाऊ गावा भर बासणां रै इलावा सस्तर सागै लै लो । झूपा नै तोड़ भांग द्यो । बासण ठीकरा भर घरबिकरी, सैग तळाई मांय फेरदी । घास नै लाय लगाय दो घर गांव नै पूगे खाली करदी । चारो, जितो ऊंट-साण्ड माथै लाद सकी द्यो सागै ले लो बाकी होम द्यो । साकळें ई घापां नै घेय सूं व्हीर व्हे जाणी ओई । लुगायां पैला घरै जाय नै सोगरा सँकली । मड़द पैला जाय नै खड़ीना मे ढोर नै छोड़ द्यो । पाणी रा मटका घर छागळां भर, गधां माथै बांध बूंधली । कम सूं कम अेक पुरी दिन लागिस, छोटाह पूगण मे । जावो घर हड़कै सूं सैग काम नकी कर द्यो ।

भीड़ चुपचाप व्हीर व्हेगी । ठाकर, अेक डळी फेर’ बाकै मे घती भर रावळें रै फोट कोनी व्हीर व्हेगा । वारी बाया कड़कण लागी, मुटियारी रै दिनां री सुध कर, वे घेक’र खुद नै मोट्यार समझण लागी । वां री कमर सीधी, घर घाल तेज व्हेगी ।

गांव में भड़बड़ाट लागी । सैग लोग ठाकरा रै बतावोई काम मे हूकया । कोई सस्तर भेळा कर रैयो है तो कोई झूंपे रा लेवड़ा उतार रैयो है । कोई घास रा मारा बांध रैयो है तो कोई कपड़ा री पोत मे सम्माल रैयो है । ढोरां नै खड़ीना मे छोड़ दिया । ऊंटों-साण्डा रै, पल्लाण कसीजणां सह बिह्या । सारै बिछावणां भर एक दो बोरा धान रा, वो री कूपी सूं ले’र पाणी री छागळ तकात ऊंटों माथै बांध दी । घर रा ठीकरा भर भरूता बासणां इत्याद नै तळाई में गावण रै पैला सब सोगा रा पड़ा पाणी सूं भर लिया । हांगरां नै भपा’र पाणी पाय दियो । झांझरतै तक से कोई र्यार व्हेगा । खुद रै हायां सूं लोग घापरा झूंपा तोड़ ताड़’र वां रै लाय लगादी । ठाकरा रै रावळें माथै करसल बिछयो पण अेक झूंपी अंजु साबकी ऊमी हो । ठाकर उठै पूग्या ।

‘अरे केसरी ! काई मत्तो कियो ? अजू सूतो घोंई के, नींद में ? देख ! सारे गांव व्हीर व्हेण सारू तयार ऊभो घोंई, बस तयारळी उडीक घोंई ।’

‘मत्तो ठीक ई घोंई ठाकरसा. व्हे गांव नी छोडूँ ।’

‘तो तू अकली रैइस अथे ?’

‘हाँ, बयू ? की घोंई ?’

‘हरज घोंई’

‘ठाकरा रै सागै रा दस बीस लोग बोल्या, हां, हवं’

‘हरज रै हूँ सारै कोनी’

‘देख केह सोचलै’

‘म्हूँ सोच समझैर बोल्या करूँ, सधारी अकल नी जीविया करूँ’

‘आखरी चेतावणी घोंई’ ठाकर थोड़ा गुस्से में भरप्या ।

‘काई कर लेसो या मोमजी ?’

‘या तो या गांव बाळां ने पूछ ।’

‘वे ई दस बीस लोग बोल्या, ‘म्हूँ लोग तयारळी झूंपो बाळ देसां भर तैनै ...’
घात काटैर केसरी बोल्यो, ‘मार देसो । तो, बाळी म्यारळी झूंपो, मार द्यो म्हैने ।’ सा केर वो ठाकरा रै नजीक बधियो ।

पूनम भागै बधैर केसरी चा भीटा झाल लिया । दो मिनख भागै बधैर वी रै झूंपे रै लाय लगादो । केसरी हूठ नी छोड्यो ।

ठाकर हुकम दियो, ‘ई रा हाथ पग बांध द्यो घर म्यारळी साण्ड री पूछ सू बांधैर गुड़ा द्यो ।’ हाजरिया हुकम री मरपाई करी । पूरब मे रातक फूटण सू पैला, जेतसी गाय री लस्कर दबलण दिसा कान्ती थावो कर दियो ।

ठाकर जेतसी री सोड सबसूँ सारै हो । सबसूँ भागै हो, जेतसी रै जैटे पूनम री । पूनम भागै, बी री साण्ड भागै सवार हो पूनम री अकामेक बेन ‘मूमल’ ।

‘मूमल’ जैडो नांव हो वेडो ई रूप । ऊमर सू जोध जवान ।

पूनम साण्ड रै अक तड़ी मगाय, मोरो नै थोडो सीक खाथ दी घर हिरणी नाथ री साण्ड हवा सू बाता करणो सर व्ही । पूनम बी री चाल निरखैर मुग्ध रहेगी ।

वो मस्ती में गावण लागी—

‘हिरणी म्हांजी नांव,

करूँ, सो कोसां पर विसराम ।

बिदयै पढ़िया मनझां री म्हे दरद मिटावूँ,

पागो बण, साजन नै हेरूँ.....मिळण करावूँ,

मत मारी, ओ पूनम राजा,
 म्हे छूँ नार कंवारी,
 पलकां री सेजां साजन म्हे,
 तांमजै काज सवारी, म्हे चम्पापुर री नारी.....'

मूमल रो हुसकणी सुण'र पूनम री गावणी बन्द रहेगी ।

'बाई, तू की रोवेई पई ?'

मूमल केहं हुसका मरए लागो । नैणां रा माँसूँ पूछ'र बा बोली, 'भाऊ !'

'हैं'

'चम्पा रा की हवाळ भोई ?'

'कुण चम्पा ?'

'भाऊ, म्यारळें सूं छांनो नो भोई, पलकां री सेज कुण संवारे, मूँ जाणूँ'
 पूनम री मुख सांवळी पड़ग्यो । हिरणी री चाल बोली पड़गी ।

'बाई, छोड़ बीं री बात । साकें सूं निवड़.....'

'भाऊ ! साकें री बाट कुण जोइस ?'

'क्यूँ ?'

'काई घापरणै गांव सूं हो'र मुलतान री फीजां बीं रै गाव नी पूगेली ?'

'भरे हां, गेली तो की गांव सूं ई भोई'

'काई बीं गाव बाळा नै मुलतान रै भावए री बावड़ भोई ?'

'सायत नी '

'पछै सोचलै भाऊ, चम्पा तामजी नी, मुलतान री मलका बहेली ?'

'चम्पा ! पूनम थोड़ी कड़क नै बोल्पी ।

'हां भाऊ, बी गांव सूं मांपणी दुसमणी भोई, वए चम्पा सूं नी । इयै, चम्पा
 तो तामजै हाथ सूं नी ।'

'बाई !'

'हैं'

'कोई उपाव करो '

'हमें कोई उपाव नी भोई भाऊ, चम्पा री भाग चम्पा की, घर म्यारळो
 भाग म्यारळें कर्ने'

'म्यारलें की भोई बीं गांव में ?'

'भोमजी तो भोजाई भोई बीं गांव में'

'मूमल, कोई उपाव बता बैए, म्हे काशी म्हे जाणूँ'

‘कालो तो घासो मुनक व्हेई पयो, बापू वो काला व्हे रेंवा भोंई, सुलतान वो कालो व्हे रेंयो भोंई, राव वो काला व्हेई.....’

‘काई मुतळब तांमजो?’

‘मुतळब काई, लडाई जरूर व्हे सकें, पण हरेक माणस लडाई मे पडें ई, भो जरूरो नो’

‘तांमजो इसारो केसर कांनो तो नो भोंई?’

.....

‘हैं, समझियो।’

पूनम घुड़की ताळ सोचती रेंयो। पछें चिपटी बजा’र मुळकियो। वो साण्ड नै पाछी ऊन्वी दिसा मे फोरो। बापू कने पूग’र बोल्थो ‘बापू! घा हिरणी भज मोमजा हाडका भांग मेलिया ई। हैं, दो राता सूं सूर्यो कोनी। भजू को दिन भोंई। परमे तो राव कने पूगणो जरूरो भोंई। तांमजो सोड भली भोंईबदळो परी’।

‘तू परबारी तमोट जा मोमजो कानी सूं।’

‘नो बापू! हैं समचार तो भेज दीन्हा पा, भर भजूं तो घणा दिन लगसो सुलतान नै, भोष तनोट पूगण में। हैं पूग जाइस बिळियासर’

‘जद तांमजो मरजी, मोमजो कानी सूं.....’

‘नो बापू, हैं मर जावां भलेई, पण राव री दया री पालण करण सूं कोनी चुकी’।

दोनू बाप बेटा साण्ड भेकी।

केसर री हासत बोट धराब व्हे चुकी ही। वी रें सरीर में जागा जागा रगडां घायगी ही भर लोई छकण लाग्यो। वीं रा गाबा भीर भीर व्हेगा हा भर बां में भुरट ऊपर भुरट चिमियोडा हा। मूण्डी भुरटां सूं छुनयो ही।

घापरि साण्ड बदळता थकां ठाकर जेतसी, कैसरी नै खुदरी साण्ड री पूँछ सूं खोल’र हिरणी रें बांधण सारु भागें बधिया तो पूनम बोल्थो—

‘बापू ईं नै बन्ध्यो रेंवण द्यो। हिरणी रें पूँछ रें बाल कोनी, रास फिसळ जाइस’

ठाकर भेक निजर कैसरी कांनो नाखो। वो घघमरियो व्हे चुकी हो।

‘नचीता व्हे जावो बापू’ पूनम साठ लगा’र साण्ड नै उठाई। ठाकर हिरणी रें ग्रेठ मार, मोरी खाची भर पलक फरुकतां ई हिरणी काफल रें टेठ भागें जाय पूगी। थोड़ी सो भागें ई भेक धोरी हो। काफलो धोरां ऊपर चढ चुकी हो। ठाकर

कंवळ पुजा

धोरी पार कर, कद का भागै नीसर चुका हा । धूड रै उडणै सून दो तीन साण्डा रै
भागै पाछै कीं निजर नो आवती । पूनम साण्ड नै हुकम दियो 'मै, मै, मै'

साण्ड नीचै बैठणी । भूमल री आख्या रोवणै रै कारणै सूझणी ही । पूनम
साण्ड सून नीचै उतर, केसरी रा बन्धणा खोल्या, बीं रा गाबा पलटाया घर घावां
ऊपर पाटिया बांध दी । वो छागळ सून पांणी ले'र बी री आख्यां धोई, घर पाणी
पायो । हमै केसरी नै कीं जेतो आयो । बीं री सरीर धुरी तगिया सू दूटती हो,
पूनम बी नै सा'गी दे'र उठायो तो वो पाछो जमी माथें लुडकग्यो । पूनम आपरै
खावां ऊपर उंचाय, केसरी नै साण्ड रै पल्लाण ऊपर सुवायो घर दोन्यू भाई-बैण पाळा
बालणा सह रहेगा ।

भूमल, भाई नै काठी पकड़'र चिपणी । पूनम, बी रै माथें हाथ फोरियो घर
नैणां रा भासून पूछ'र धीजो दियो ।

सिझ्या घीमें घीमें पग पसारण लागी । लोग बाक चुका हा । घोटाकू
मजून घाठ-दस कोस री भीं माथें ही । ओक घोरै रै भोले पड़ाव शिह्यो । साण्ड नै
मेकाय, पूनम सीधो बाप कर्न पूगो । ठाकरां री मंसा रातोरात घोटाकू पूगण री
ही । पण सँग लोग बाक चुका हा । अंधारी रात ही, ई वास्तै खोद निकळिया पैला
भायें बघण में लाचारणी ही । पण ठाकरा रै अगूती उतावळ ही । पूनम नै आगलै
मारग रा सैनाण बताय, ठाकर बाकी में ओक मोटी डळो अमल री मेली, एक डळो
हिरणी नै चटासी घर पूनम नै भोळावण देय, घोटाकू सारू पसायण कर दियो ।

बापू नै झीर कर, पूनम पूरै काफलै रै लोगां नै सम्भाळतो, खुदरी साण्ड कर्न
पूगो । भूमल, केसरी री माथो दबावती ही । ई रै साथे ई बुचकारा बी लेवती
जावती । अघारै मे पूनम बुचकारा सुणिया तो बी रै सरीर में ओक झरणाटो बालग्यो,
वो नजीक आयो तो बँत री गोद मे केसरी री माथो हो, बीं नै मोडो घोड़ी जेती
हो । पूनम नै देख, वो भूमल री गोदो सून ऊठण लागो पण पाछो पड़ग्यो । पूनम
मूण्डो ऊंधो फोर ऊमग्यो ।

'म्है घोड़ी ताळ सून पाछो घावून भाई, तू डरै तो नी ?'

'कोया जावोई ?'

'म्है, बँगो ई पाछो आ जासून'

'नी भाऊ' भूमल केसरी रै माथें हेटे तकियो देय, खुद नै मुगत करी, पूनम

कर्न आय ऊमो'

'हां, हमें फुरमावो, केत आवण रो विचार मोई ? चप्पा रै गांव ?'

'हवै'

'नी घाय मोथ नो जावो'

‘बयू’

‘म्है दुसमण रें गांव घापनै नी जावण द्यू’ ।

‘मोघजें कर्ने तलवार भोंई ।’

‘नी भाऊ, तलवार म्यान में ई पड़ी रें जावें घर माया कट जाया करे ।’

‘मोघजे हाथ मे बिलिया कोनी’

‘नी, पण म्है जाणूं कै घापरों मोघ जावणी ठीक कोनी’

‘म्है तो वां लोणां नै सावचेत करण री खातर जावूंई पयो ।’

‘अेक दुसमण री दूजो दुसमण भरोसी करलें, घा करण बात भोंई ।’

‘तो पछें म्है कांई करू ?’

‘घाप ? म्है कैवूं ज्यूं करो ।’

‘घाप वैठो, हूँ जावाई’

‘नी, तूँ केत...’

‘वैला घापां, दुकर तोड़नां पछें घागरी बात सोबांला ।’

‘भाऊ ! दुकर घाप तोडो, म्है बाली ।’

‘नी मूमल, ठैरजा, सुण बात’

‘कांई ?’

‘यैठ’

‘हमें केसरी बी ऊठ बंठी । बी पांणी मांग्यो । पूनम, बी नै छागळ उधाम पाणी पायो घर हो सोगरां ऊरर गुळ री डळो घर कान्दा धर केसरी नै घापरें हाथां सूं कथा देवणा सरू किया । मूमल मन में मुळरण लागी ।

केसरी घर मूमल, साण्ड मायें सवार व्हे, जा चुका हा । पूनम, धोरां माघें पसरग्यो । चम्पा रें सुपना री मैक सूं बी रें सरीर में मरती बापरगी । घाकेलो मेटण सारू, मींद घाय पूगी । काफने मांघ सूं अेक सतरा बरस री छोरी ‘पूनमी’ घा’र पूनम रें पसवाडें पडगी । सुपनां मे उळम्योडो पूनम, चम्पा री बोटी पकड’र घापरें कांनो खेची । पूनमी री सरीर, काठी भरयो सुगन सूं मगपूर, चम्पा री मैक मे पुळ मिळग्यो । ठण्ड सूं सुकड़ीजती पूनमी, पूनम री धोतिवो खांच मोडू लियो । पणी भो रें टाण्डें री बकाण घर सुपनां रें रस में भीत्रियोडो पूनम, नंग गोल, गुपनां सूं बिद्यो करण री हासत मे नी हो । हवळें हवळें रेंग गळण लागी । घोरा री मुघमनो पयरणी गिचण लागी । पूनमी रें होटां घाय, घडियोडो तिमकारो, घापरें सार्ग उडग्यो । उत्तर दिम री सूनियाड मे दमण में हो, काफने री पड़ाप । कीं तिमकारा, बी हँकारा, की बुचकारा, पूनमी रें कानां ऊरर रळक्रिया । विरतत री नैनो सी सत्तार ई हो पूनमी री साच । घर दिन री साच, जीवण भर री हांत ।

★

(१६)

दो पीर रात दस चुकी ही । सारां री चमक मम्दी पडणी । धोरां री ई सुनिपाड में फीज रै जमघट रै कारण जोरदार हाका हू मचियोडी ही । हजार मसालों अके साथे चेतन व्हेणी । ऊँट, बल्लद, घोडा इत्याद सजघज नै कतारां में ऊभा हा । सिपाई, वशिंयां पेरियोडा स्यार ऊभा हा । ऊँटगाडियां माथे समान लादीजण लागी । पांच मोल लाम्बी फीज री काफली, तप्तोट माथे चढ़ाई करण सारू कूच करण नै स्यार खड्यो ही । हजारों भिण्डा हवा मे फँरावण लाग । नगरा, सहनाई, तुरई, डोल इत्याद री भेली गूँज सू घोरा धरती रा कान गूँजणा सरू व्हेगा । सुलतान मैमूद गजनवी री फीजां कूच कियो तो ग्रँडो लखायो कै करोडां री गिणती मे धरती रा सारा मानसा, अक जागा भेला व्हेगा है । पग-पग हर लागती कै ई टोडो फाकं सूं योगां री धरती री कवली कायाक ठई छुन नी जावै । धोरां रै ऊबड़-खाबड़ टोला ऊपर चढती भर उतरती फीज, घोडा ऊँट, इत्याद सूं जमी धूजती व्हे ज्यूं लखावती । जाणै सेपनाग नीचें सूं आपरो फुल हिला रैयो है । नगरा निसाणां समचें सिपाइयां री कदमताळ सूं धरती धूजती । जाणै अक पूरी सैर, माथे उचायां, धरती आभे कानी धूम रैयो है । तम्बू, यदियां रसद, सस्तर भर पांखी उचायां नाडियां री कतारां आभे आभे सूं ग्रँडो लखावती जाणै बाजणिया बिछुवां री फीज कूच कर दियो है ।

हरावळ मे उप प्रधान सेनापति भर मैमूद कासिम खुफिया सरदार, हदियारां सूं लैस, फूटरा भर सजियोडा, काठी कसियोडा घोडां माथे सवार हा । वारें ठीक लारें पाच सौ घोडा भर चार सौ ऊँट, दस दम री कतार मे चाल रैया हा । यां रै लारें चार हजार पंदल सिपाई हा, ज्यां रै लारें दो सौ घोडा भर सौ ऊँटा री अक काफली ही । यां रै पिछाडी पाच सौ भर पंदल सिपाई हा, ज्यां रै लारें सुलतान मैमूद गजनवी री इगनी घोड़ी ही । ओ घोड़ी बीठ ई मजबूत पगां बाळी, सावण रै पाणी भरिया काळा बाडळां दाई काळ रंग री ही । घोड़े री सिणमार देखण जोग ही । वी रै पट्टां माथे रंग बिरंगी कोरणी कियोडी ही । कमर माथे खूबसूरत भर कीमती रेशमी डोरियां सूं कसनें काठी बांधियोडी ही । ई घोड़े माथे मैमूद री रूप, डोल-डोल, तेज चौगणी निजर आवती । सुलतान रै घोड़े रै हाथ हाथ कानी भल सत्वी री ऊँट भर जीवण हाथ कानी प्रधान सेनापति री ऊँट, घोड़े सूं कदम मिळावता धागें बंध रैया हा । सुलतान रै आभे लारें भर आखती पाखती वी रा मङ्गलखाळ, नागो तलवारां हाथां मे नियोडा भर घोडां माथे सवार हा । सुलतान री अक हाथ वी री भादत मुजब तलवार री मूँठ माथे ही, वीरा नैण फते रा सुपनां मे वळभियोडा हा ।

छरुहो घर खच्चर-गधां माथे सावण पीवण री सामान लादियोडी हो ।
घोरां मे ठण्डी रातां मे सहनाई रा सुर, हिहदे में टीस उठा देवता । ठण्डी हवा रा
भोला, नीन्द री न्यूती लियां काना में फुसर फुसर करता । पण मैमूद गजनवी
प्रकृति सूं बो विहण री सामरथ राकतो । घीं माथे बायरें रें भोलां री, की भस्तर नी
व्हियो । फौजा, तारां री दिसा पकड़, बरोबर भागें वढ़ती रेंयो । घर मजलां, घर कूचा,
कोस, दो, चार, दस, बीस कोस पूगतां, रात री उमर खूटण लागी । बायरी पना सूं
तीज घर ठण्डी व्हेंयो । सरीर मे थड़ थड़ी खुडावण वाळा बायरिये रा तरकस सरीर
नै बींधण साव उतावता हा । फौजियां रा नीन्दाळका नैण, भयकियां खावणा सरु
व्हिया । ई थड़ी में जीवण री सबसूं मोटी सुख, बायरें री थपकिया लाप, नीन्द लेवण
में ई लखावती । रात भर जागियोडा सिपाइयां नै सखावी कें नीन्द बी जीवण री
बी मन्तर है जकी जागरण री जैर सतार नै मिनख नै ताजा खिलिया फूलां री
ताजगी घर सोरम बगसे । सीवण बरणी रेत री गोदी में बो छिन सीवण री सुख,
उठावण री हँस, रें रें नै कळपावती पण सुखतान रें गुस्से री याद घाता ई सिपाइया
रा सरीर सीतळ पड़ जावता ।

×

×

×

मुट्ठी सूं रिगसती रेत दाई, रळियावणी रात विलूमणी । पूरब दिसा में
पसरियोडा घोरां लारें सूं रातळ फूटण लागी । धूड री सोवणी रूप, सिपाइयां री
निजरा मे चितरांम दाई मडग्यी । पूरब दिसा सूं हिरणां री भुण्ड फदाकी लगावती
घोरा ऊपर भाय, श्रेक छिन धमग्यी । बन्वणा तुहायोडे बळव दाई श्री भुण्ड पवनवेग
सूं घोरां रे समदर मे ह्वग्यी । हिरणां री पीछी करता, किरणा रा तीर, घोरा-घरती
में जागा जागा बिखरग्या । रेत रा कण, सूरज नी किरणा में पलपलाट करण लागी ।
ज्यूं ज्यू फौजा भागें बघती, सूरज, घोरां री मोटी छोड, खुलें घर मुगत असमान मे
ऊपर थडण लागती । बायरें री वेग हमें घीमो पड़ चुकी हो । घीमे घीमे सूरज री
भट्टी तपण लागी । लाखां मीलां दूर सूं घरती माथे पूगणवाले ई ताप सूं
रजकण तपग्या । ठण्डी बायरियो लू बणग्यी । सरीर पसीने सूं लथपथ व्हेंगा । घोडा
भागली टांगां ऊंची कर, हिए हिएवावण लागी । पैदल सिपाइया री पगपाळिया में
रेत री गरमी, जरबां नै बोन्ध नै, ठेठ मांय पूगणी । नीचें सूं रेत री गरमी घर ऊपर
लाप बरसावती तावडी घर खोरा चेदती सी लू, कमर नै बोन्धतो सूरज री किरणां ।
हलक सूखण लागी, थूक री खजानी खूटण लागी, कंठ बिपण लागग्या, लू रें सागें
रैत बी उडण लागणी । बतूळियां घर भांषियां सूं भांषियां वूरीजण लागी ।
घरतीकण नैणां में गुस्से घोबा मारण लागी । सिपाई भांख्यां मसळ मसळ काया
व्हेंग्या । भजे देही री चमही काळी पड़ण लागी घर सरीर तवें दाई तपग्यी । माथा
चकरावण लागी ।

सरीर रै मांयली अर बारसी गरमी पांणी री छड़काव मार्ग पण रोजां रा दिन हा, रोजां में दिन रै सजास में थूक गिटणी बी हराम हो सो पांणी पीवण री ती सवाल बी पैदा नी व्हेतो। आंधियां अर घूडे सूं गैली साफ निजर नी आवतो। फौज री कतारां बिखरगी। फौज री कवायद री हिसाब न तो कोई राक सकतो न फुसरसत हो, सैंग आप आपरो जीव बचावण री धुन मे हा। गरमी अर तिरस री मार सूं तकरीबन पांच सो सिपाई, पचास घोड़ा अर दस बळद चक्कर लाय धरती माथे गुहग्या। बँहोसी री हालत मे वे धरती माथे पड़ियोड़ा सिसकता रैया। आगादोड़ी मे लागोड़ी फौज यांन कुचळगी कै आंधी सूं उडतो घूडो यां नै दूरग्यो, ईंरो वेरो ईं कोनी। मारग मे तळा घणकरा तो सूझा ईं पड्या हा। की खाडा खोचरां मे कादो हो। जिनवरां माथे ती रोजां री दण्ड हो कोनी। घोड़ा, बळद इत्याद ईं काई ने ईं चाटग्या। ईं सूं बांरा पेट फूलग्या अर उठे ईं पसरनै दम तोड़ चुका हा। पण सुलतान रा होसलापस्त नी ब्रह्मा। बी लगी लग आगे बधतो रैयो।

मारग मे केई भाटी सिरदारां री नैनी टोळिया री सुलतान रै सिपायां सूं भिडन्त व्हेगी पण ईं सस्कर नै रोकण री सामरथ बा मे कठे सूं आती? ईं हलकी सी भिडन्त में बी हलके ईं हाथ पांच सो भाटी सिरदार श्रीजी शरण व्हेगा। अेक हजार भाटी सिरदारां री अेक टोळी चुतराई सूं काम लियो। सुलतान री फौज मे लावण पीवण रै समान री बाळद लारै हो। अै लोग उपरबाड़े रै मारग सूं घोरां री श्रीली लै लारै पाँचग्या अर लावण पीवण री समान लूट लियो। पारे अचाणचक हमलै सूं रसद रा दखाला घबरायग्या। बळद भी मारग्या अर वे ऊग्या पगा पाछा भागण लाग। तकरीबन पांच हजार फौजियां रै मईनै भर रा जिनस अै भाटी सिरदार गाडिया समेत लूट नै लैयग्या अर गाडियां मे बळदा री जागा ऊंट जोत दिया। ईं भात सुलतान री फौज मे घणा ईं बेला बीट्या।

सस्कर री चाल धीमी पड़गी हो पण सूरज री जातरा अेक गत सूं बंधि-योडी हो। माथे भण्डियोडो सूरज, पन्ध्रम कांनो डिगण लायो अर बीरो ताप मोळो पड़ण लागो। सुलतान री फौज मे पाछो सांस आयो। हमे घूडो बी साफ व्हेण लागयो, मारग साफ सूझण लागी। पन्ध्रम दिस मे घोरां रा कंगूरा गो दाई बाकी फाड़ नै पसरियोड़ा हा। सूरज हमे ईं गो रै बाके मे घुसण सारू लाचार हो ज्यूं बी नै चढतै नै रोकण मे कोई सिमरथ कोनी बी भात ईं बीं नै ढलण सूं रोकण री सामरथ बी ईं धरती रै रैवागिया मे तो कोनी।

रोजा खोलण सारू अजान व्ही। सुलतान फौज रा सैंग सिपाइया सांगे

नमाज पढ़ी। पण सुलतान रो हुकम हो कै चांद निकळता ई कूच कर दियो जावे
अर फजर पैला ई किले रो घेरी घाल दियो जावे। मुरगी रो पैली बाग रै समवे
ई हमलो बोलण रो सस्त हुकम हुयो। सुलतान फौज रा सँग मोटा अफसरां नै
बुलाय वासू सलाह मशवरी कियो अर फौज नै दो हिस्सा मे बांट दी। वाराह
अर लगां रो फौजां अजुलंग पूगी कोनी हो पण वाने उत्तर दिस सून हमलो
बोलण रो हुकम हो। खुद रो फौज नै वो पूरब अर दक्खण सून मार्ग बधण रो
हुकम दियो। बी नै दोलत छूटणी हो, इस्लाम फैलावणी हो अर बुतपरस्ती नै
नैस्तीनामूद करणी हो। बुतां नै तौड़ियां सून बी नै जपत मसीब ब्हे सकती हो।
ईं सारू वो पालण्डी पुजारिया नै कतल करनै वारी जाया इमाम मुकर करतो।

राजा रो तयारी अर हौलसो भापण सारू खुफिया छोट दिया गया।
सुलतान खुद बी लड़ाई मे जूझणी चावतो ईं वास्ती वो भा जाणए सारू उतावळी
हो कै बीरी भिङ्गन्त राव विजयराज सून कठै ब्हे सकै? सेनापति अर अफसरां
भाप भापरी टुकड़ियां सम्भाळली, सितरंज रा प्यावा सुलतान रै हुकम रो
तामोल में तक्सीम ब्हेया।

✱

(१७)

भीठा सुपनां में रैण बीतगी। पैला चम्पा सून रंगरेळिया, पछै सुलतान मैमूद
नै मारण रो मोद, राव सून सिरपाव अर जागीर लेवण सून ने'र चम्पा सून ब्यांव
तक रो जातरा, ढळणी रात रो गुनो, भेक पीर में पूरी करली। पूनम रो जव भांव
खुली तो सामी पूनमी पांणी रो छागळ अर कनेवी लियो हाजरी में ऊमी हो।

"रात भर काई सुपनां सून रमता रैवाई कंवर सा?"

पूनम, भेक'र पूनमी रो भांतियां में भांतियां गडा'र हँसियो। पूनमी लाज
सून नैण भुका लिया। पूनम, बीं रो हाथ झान, खुदरे नेड़ी खांचली।

"तने पशं कर ठा पढ़ी कै ब्हे रात भर गुनो सून रमतो रंणो?"

"मे वो भापरा नैण ई भेद सोलै कंवरों"

"तो तू नैणां रो भासा रा भासर भोळलै काई?"

"हवै, पोड़ी बीत बिदिया सोलो भोई"

"कै तू?"

"भाप सून ई"

"म्हातू?"

"हो"

कंवळ पूजा

“कदी ?”

“रातै”

“रातै ?”

“हूँ !” पूनमी केहूँ लजायगी । पोणो सूनूँ माँतियाँ घर मूण्डो धो'र पूनम कुल्लो कियो । सोगरै माथे पड़िये धो रँ जुन्दे घर गुळ री छळी सूनूँ कवी भर, पूनमी, पूनम रँ सांमी कियो ।

“लिरावी”

‘पूनम, पूनमी रो हाथ पकड़'र खुदरो मूण्डो बी रँ हाथ रँ नजीक लेयायो घर बाकौ फाड़'र बी री मांगळिया बाकै में दवाली ।

“छोड़ी, ऊँ हूँ”

“हूँ, हूँ ।

“नो, कोई देख लेसी तो.....”

“कुण देखई ?”

“मोमजा नैण”

“दांपलै”

“दांप लिया”

“हमें कुण देखई ?”

“माप”

“ले, म्है बी नैण दांपलूँ । हमें कुण देखे ? कुण दीसे ?”

“माप”

“पूनमी !”

“हूँ”

“तूँ बीत मूण्डे लागई”

भटकी देय पूनमी हाथ छुड़ायो घर ऊँची रहेगी ।

“माफ करो अन्नदाता”

“रुसगी ?”

“हूँ”

“कयूँ ?”

“ते सुपनां सूनूँ ई रीझ्या करो, पिरतख नै तो दुत्कारा ई दयो”

पूनम थोड़ी सोच मे पड़्यो, केहूँ थोड़ी मसखरी करतोड़ी बोल्यो—

“म्है तांमजै जेड़ी काळी, बळूटी नै सुपनां में सम्भावूँ ? पिरतख बी कोनी सबाधै ।”

हमें पूनमी सोम-गी उठे ई नाख'र बहीर बहेण लागी । पूनम घोड़ी ऊंचो बहेर पाछी बी रो हाथ झाल लियो ।

“पूनमी !”

“की ओई ?” पूनमी घोड़े मान अर झकड़ रै सामे बोली ।

“साण्ड ओई, हिरणो री जोड री ?”

“ओई तो, पण धा दूजे अमवार सू कोनी दूबे”

“महे डाब लेसू”

“पूनमी घोड़ेई ओई के हाथ झाल'र मीठी बातों मे भरमा लेती”

“महे, तेने कद भरमाई ?

“रातै”

“रातै ?”

“भूठी”

“भूठा ते”

“बात खोलने बता”

“बात तो बहुत आयां आप ई खुल जासी ।

“मौमजो सुपनी सुगुंली तो ईसके सू बल'र राख बहे जाती”

“बल'र पारा बेरी-दुसमी, बल'र म्हारी सोक । हां काई करी साण्ड नै ? सुपने मे गंवाई परी ?”

“सुपने मे नी, जागते मे”

“अरे”

“देख मसखरी बन्द करा अर मुतलब री बात करा”

“मसखरी महे करू के आप? कदका छोड़ी होई पया”

“आज ऊठजां ई ताम्रजी मूण्डी देखो भेंस री”

“देतो कंवर सा ! घोड़ी सोच समझ'र बोलजो । हमके भेग कैयो तो ठीक नी रैमी”

“बी ठीक नी रैसी ?”

“पूनमी हमे पण सू फटकारी देव चार पावण्डा ऊंधी फिरगी । पूनम री मरती झू उतरी कोनी । वो पाछे मूं जा'र बी री चोटी पकड़ली । पूनमी रोदण जेहो तिफस करो अर पूनम बी री चोटी पाछी छोड़, बी रो हाथ झाल लियो ।

“अरे बात री बचन दे ।”

“बाई ?”

“पैला वचन दे”

“पैला बात बतावो”

“पैला वचन. पछे बतासू ।”

“वचन पछे देसू”

“नी पैला वचन दे”

“दियो”

“की सूँ ई नी कंवँ ।”

“नी”

“देख पूनमी ! मूमल घर केसरी रातें ग्रँथ सूँ निकळ चुका मोई पाछा नी प्राण; मन, धान सोधणी मोई नी तर बापू मन काचं नै ला जासी घर धाने दोन्ही नै जीवता नी छोड़सो” भेरुँर ती पूनमी रा होस चढग्या, पण दूज ई छिन बा सम्भल'र बोली—

“साण्ड मोई भेरुँर हिरणी सूँ बी तेज गत री पण ………”

“पण की ?”

“मन साथे चालणी पढ़ती”

क्यूँ ?

भसैधे भसवार नै कोनी चढ़ावै”

“म्है, सूँत नै पादरी कर लेसू”

“भे लक्ष्मण साण्ड लेजावण रा नी मोई”

तो पछे, म्है की करूँ ?”

“करणी की मोई ? मारग जाणी ? भेव सूँ केव, किय दितो मे जायणी मोई ?”

“उतराद”

“उतराद मे ती जेतसी गाँव मोई”

“नी, मोघ नी, पूरव कानी”

“पूरव मे ती मारवाड़ मोई”

“भरे हवें तेने की बताऊँ !”

“मन मापही नै मती बतावो, पण साण्ड भिरणी मोई”,
भेरुँर नै सूँव, जीव जोखम मे नी नासूँ”

“म्है पाळी ई चलयो जासूँ”

“पाळी, किता बरसा सूँ पाछी भावण री विचार मोई ?”

“पाछी क्यूँ भासूँ ?”

“जद साण्ड कोनी, भलाई में साण्ड नमासूँ”

“भेरुँर बात मोई”

“शेक शेक करतां जाणूँ किती बातां कैयदी घर भरून शेक मत्ती कौनी ?”

“कोई असवार कौनी जकी छोडर पाछो मा सकें ?”

“छोड सकें, पण पाछो आणो हाथ कौनी”

“क्यूं ?”

“मोघजें मनरी म्हे महाराणी होंईं यां कुण व्ही पूछण वाळा ?”

“म्हे, म्हे, हां म्हे कोई कौनी पूछण वाळो पण हमें बैंग कर पण

“फेरूं पण अथ बंठा रंबो काफलें नै धोरी पार करण द्यो पलक भपतां चकमी दे'र पाछो भावूँ”

पूनम नै दो पल दो दिनां सून बी साम्बो घर मोटा लागण लागी वीरी खासी मस्ती रो नसो हमें सोच, फिर मे बदल्यो, भूमल घर केसरी रो सोच, चम्पा, रो सोच बापू रै गुस्से रो सोच, सुलतान नै मारण रो घर जागीर पावण रो सुपनी कूडी पड़ती लखायो ।

काफली कूब कर दीठ सून भोमल व्हे चुकी ही । शेक साण्ड बी रै नजीक आय ऊमी व्हेगी ।

बीं पर बँठीङो मइद ऊपर सून हाथ नीचे कियो घर पूनम नै हाथ मिळावण री सीनी करी । पूनम शेकर ती अचम्बे सून बीं मरद कान्नी देखण लागी पण दूजे ई छिन बिना सोच्यां बिचार्यां हाथ मे हाथ मलायो घर साण्ड रै पेट माथे शेक पण माण्ड, हद करती साण्ड ऊपर सवार व्हेगी बी रै, ठीक तरिया दीठण सून पैला ई साण्ड लडण लागी । पूनम नै लखायो साच्याली वो ई साण्ड नै नो टाब सकती । साण्ड री तेज चाल सून जोर रा हिचका लागण लागी, पूनम भागें बँटें असवार रै खांथां ऊपर सून हाथ मल्ला लेय बी रै दीन्सू हाथा रै बीचे सून निकाल, बी री लाक सून थोड़ा बारी काट लिखा । बी असवार रै पतले पेट ऊपर सून हाथ जद फिसलण लागी तो वो हाथा नै ऊंचा ले भायो, बीरी घांगळियां मे शेक भगणाटो चाल्यो । असवार, पूनम रै हाथां नै आपरी छाक मे काठा दवा लिखा । पूनम रो भायो असवार रै खांथे ऊपर टिक्यो, असवार भूण्डो नीचो कर पूनम री घांगळियां रो मुचकारी लियो घर माथे ऊपर ले फेंटे नै थोड़ो ऊंचो लेय आपरा देस पूनम रै भूण्डे ऊपर रटका दिया । पूनम रो हियो पुसक उठ्यो । वेसुधो मे वो हयाळियां री दाब बढ़ादी । असवार शेक तिसकारी कियो घर साण्ड री धोरी नै थोड़ो साव दी, हमें पूनम असवार सून काठो चिपन बँट्यो । बीं री हयाळियां गरमास घर गिर सून भरियोडी ही । मौं रो भासर काटती साण्ड हांचण लागी ।

‘जाणो घोंई केठ मुमाफिर ?’

‘जेठ ले जावे असवार’

'दागी ने पग दोसै पया तनोट कांती रा'
 'पाट नगर में, ले चालीनी मिलिपारा'
 'घा हिरणी री मां जायो'
 'भूल गयो से मनचायो'
 'बोल बणेली घजर गुलाम ?'
 'सूयो तांघजे हाथ लगाम'
 'देख चुकाजे पूरी सेग'
 'सह्या न जासो तांमजा तेग'
 'भापस री छोडां तकरार'
 'हेत करां, ले कर मनवार'
 'मनवागं मगरै चढ़सो ।'
 'लादयोडी घन कुण लेमी ?'
 'मोमजी साची धम पूनम'
 'तेणा पढ़सी लास जलम'
 'लाख छोड म्हे, लेवू कोड'
 'हम छोड दे माया कोड'
 'पैसा मोटी, हाथ जोड'
 'कडयां जोडूं बन्धिया हाथ ?'
 'डोल तिहें भट घाली बाण'
 'हाथां में पड़िया खीरा'
 'किण नणदी री भावज रा ?'
 'जिणरी किस्मत मे हीरा'
 'सूनी भारण, सूटे लोग'
 'बाकी साण्ड चरावी फोग'

भै, भै कर, भगवार माण्ड ने भैकी । पूनम भसवार री खांधां री सा'री
 जेम नीचै उतरियो भर बी सूँ दिल्मुनयी । मांमळ रात मे धोरां री रळियावणी रेत
 रामजियां री रमत मण्डयी । लाजां भरता बादळां तारां री पढ़दो कर लियो ।



(१८)

“तू काँई सोचै भूमल ?”

“हूँ” जाणै भूमल सुपनां रे भाभे सूनं घरती मायें भा पड़ी ।

“भूमल”

“हूँ, ईयां भूमल, भूमल रो रट लगता रैती कै कोई मुतळव रो बात बी करती ?”

केसरी, भूमल रै गळें मे दोग्यु बायां घात'र बी नै काठी भीचती ।

‘छोडी’

“नी”

“म्है कैतूँ छोडी”

“रुसगी काँई ?”

“हूँ । बात ई रुसण री बाँई ?”

“बपू ?”

“सारे पादरा नी बँठा रै सकी तौ मनै चतार द्यो, सूनं पाळी चाल लेसूँ ।”

केसरी चालती साण्ड सूनं कूद पड़्यो, “ले, हमें राजी”

भूमल भज्जं भापरै मनगत मे आसुभियोडी ही, वा बापू रै गुस्ते री कळपणा मे हूबोड़ी हो, वा जाणती हो कै दोफार तक वा चम्पापुर मुसकिल सूनं पीच सकली घर उठी नै साकळई जब बापू बी घर केसरी नै नी देखेला तो पूनम री चमड़ी उधेड़ देली बी रै तरीर में चाणूचक पड़पड़ी छूटगी घर जाणै कद बीरै हाथ सूनं मोरी खाँचीजगी । साण्ड सपाट हवा सूनं बातें करण लागी । दो चार पाँच कोस पूगा पछे बी नै चैती भायो ।

“यां म्हासूनं साचो हेत राखी कै पूजा लफंगां दाई कोरा खुररै रमण सारु मनै रामतियो मानोईपया”

पहत्तर कुण देतो ?

“शोस्ते कोनी ? नाराज भूया काँई ?”

भूमल री उवाच पाछो बी रै कानां सूनं टकराई. हमें वा बोड़ो सारें भुको । बी रा होख उहय्या । सारली पाली खाली हो । भूमल सारसे वाने पैला हाथ फेर तसल्ली करणी चायो । पण जद जाण खाली लागी तो सारली कानो मूण्डी कर जोयो । रिन्द रोई में खुदन धेकमी देस धेकर तो वा पहरायनी । पहरायोड़ी वा साण्ड नै पाछो फोरी । हड़बड़ाट मे या दिता भूयनी । साण्ड बी पाक चुकी हो । एक बाँवळियो देत, साण्ड उठै ई रुदगी । भूमल री कासतो

भङ्गण लागी । धी रं नैणां में भासू भावग्या । वा खुद भायें घणो ई गुस्ती करण लागी । नी बाबल री रैयी नी बाधिया आवणिये री । अन्धारी रात में जावें बी तो केत ? तारां री चमक बी फौरी ही । पैना तो वा सोची कै साण्ड लें जावें जेत चलो जावें । पण सुलततान री फौजा रें भी सूं वीं री कालजी घेकर केहें जोर सूं भङ्गण लागी । वीं री कण्ठ सूखग्यो, अर दांत चिपाया । वा बेहोस ब्हियोही साण्ड भायें सूं खिरगी । बेहीतो में वा जमी भायें पड़ी पड़ी टसकण लागी । मोरी बोली ब्हियां सूं साण्ड री नकेल री दबाव जाती रैयो । वा भुगत बहेगी, अर मत्ती धोरां मे विचरण निकळगी ।

अन्धारी रात मे केसरी सावचेती सूं डग भरती भूमल री पीछी करती भायें बघ रैयी ही । वो पांच छः कोस तक चाल'र थाकग्यो । बी रें सरीर मे केहें टीसां हालण लागी । लाचार ब्हे, वो अेक घोरें भायें पडग्यो । पडतो ई बीरी चकाण भरी देही भायें नीन्द हमली बोल दियो । सूरज री तेज किरणां बी नें चेतो करायो । बी रें मांमे कोई सैन्धी मारग नी हो । क्याहें मेर धोरा अर धूक, अर ऊपर सूं लाय बरसावती सूरज री किरणां । खुदरें भाग भायें वीं नै तरस भावण लागी । वो मनमें घणो ई पछताबी कियो पण हमें वीं सादै कोई मारग नी हो । सूरज री गरमी सूं बचण खातर वो अेक घोरें री ओली छोड़ बीजे घोरें री माड लेवतो, अर बीजे सूं तीजे री । बींरी गळी सूखण लागी । सारें दिन वो थूक गिटली रैयो । जद कण्ठ री थूक बी सूकण लागी तद वो रोवण लागी । पण नैणां री पाणी बी सूख चुकी ही, तिरस बुझावण री कोई सपाव नी देख वो सुदरी देसाब पोर्वे मे अर नें पीयाग्यो । पण तिरस रें रें नें धावी करण लागी । सेवट सूरज भावमग्यो । हमें केसर री तिरस की मोळी पड़ी । वो सुदरी, देसाब दीवण री बात भायें सचकाणी पडथी । वो खुदनी भीत रें हाथां सूपण सारुं नैण मून्द लिया अर दोन्ही हाथां सूं कण्ठ नें दबावण लागो ।

'ये ! कुण भीई तूं ?' ठोकर लंगावतो थकां अेक मडद री कड़कती मुा केमरी मादै पड्यो ।

"हू, केसरतिय माटी, पांव जेतसी री"

"हू ! काई सेवा आयो अेथ ?" वो मडद पूछ्यो ।

"....."

"टीक, समझायो. ऊठ मौघजें सानें चाल"

"केत ?"

"सूं री भड्डी देवा"

मोमजो कोई भूंपो कोनी । म्हे कंजुं, म्हे केसरी हूँ जेतसी रो भाटी”
 “हां, हां मुण लियो, ऊठै कै हूं लात रो दो चार ।
 “लात रो क्यू ठाकरा तलवार रो द्यो नी सो पावी प्राण तो नीसरै”
 “प्राण तो धारा लेसा ई पण पैला धारी परख तो करलां”
 “को रो डीकरो मोई तू ?”
 ‘भरजण सिंग रो’
 “कसो जोड़ रो भूमार ?”
 “हवै”
 “तव तो तू मोमजो भाई ब्हियो । काई बिली पड्यो ? मिणिया दावती हो”
 केसरी रै नैणां सूं वो मोतो टप देता खिरग्या । वो महुद बी नै गळै सूं
 लगाय लियो ।
 “चाल डेरे”

केसरी भर गज दोन्हुं भेला बैठ ग्याणू कियो भर ऊपर सूं गरम दूध पियो ।
 केसरी मे पाछो नुवी सगती धापरणी । हमें बी नै भूमल री ओळू सतावण लागी ।

दो साण्डा पत्लाण कसियोड़ी तयार बैठी हो । केसरी भाज पैली धार
 कमर सूं तलवार लटकाई । धाघी रात रै सगैं टगै गज भर केसरी चम्पापुर
 पौचग्या । अघडळिया भूंपा सूं निकळती चिणगार्यां सारी कथा बजाण करदी ।
 समसांण जैड़ी गिन्ध सूं धारां माथा भिन्नावण लागी । चन्दरमा हमें उजास कर
 गांव री हगीगत नै सावळ उधाडी कर दी । दया उवा अघमरिया बूझा ठाडां रा
 अघकिचर्या सरीर टसकता हा । जागा जागा खाडा भर मळवै रै हलावा की
 खोपड़िया कटियोड़ा हाथ टांग. टावरा रा किरवा कियोड़ा सरीर भर जिनावरा
 री बढवू देवती हड्डियां रा पंजर मुलतान रा दो-चार सिपाई गाव मे अड्डां
 घूमता हा । गज धा री गांटकियां उतार, बढली लेवण रो भेलाण कियो ।
 केसरी चितबगनी ब्हगी । वो तो भूमल री ओळू में खुदरो सुभ भूम घेठो । घेक
 दो जागा लुगायां रा कटिया सरीरां कन पूग, वो ओळसण री कोसीस करो ।
 पण गज रा अँ बोल “काला ! जवान छोरी नै कतल करे जैदा मे गाफन नी
 मोई । स्पात भूमल नै भैमूद रा सिपाई भालतो मोई” वो रै काळज नै बीन्ध
 नाह्या ।”

“हीमत राक । धापां लेसां बढली । म्हे भूमन नै नी छुडाय लावूँ तो भूमल
 रजपूतणी रो पूंगापोड़ी नी । सीपन तगो री, जे तांमबी भूमन नै कर्न लाय नी
 ऊमो करूं तो । पण तेनै मोमजै कंवण मे हालणो पडसी ।”

“म्हे नी जाणसी कं भैमूद भैदो जालम माणस मोई, दाया भिनता नै पूं

बरबाद करणु री घी नै कोई हक ?”

“हूँ । हमें बातों कम कर, जाणतो तो कोई कर लेतो ?”

“म्है, घी नै इण दिस में घुसणु वी नो देतो”

“हूँ, भेरुले सूँ भेरु छोरी तो ढबो नी भर लस्कर नै ढाब लेतो । जइ केरुं के जेतसी रा ठाकर डीगां हाकणु मे हसियार भौई, होमत रा पोवा भौई, साव पोवा ।”

“देख गल्ल ! मने गुम्सो मत घणा”

“केसू ! भाव भेरकर गल्ल मिळजा । भाज बोस बरसां पछे मने कोई ई नांव सूँ बैतळाघौई ।”

दोन्यूँ भेरु दूज सूँ गल्ल मिळया । भेरु मळवै री शोली ले'र दोन्यूँ बैठया ।

“देख केसू ! ई लस्कर सूँ लइणु री तागत नी तं मे भौई नी म्यारळी । भापां यां सूँ मिड़ भलै ई जावां, भलैई दस बोस सिपाइयां नै ठिकाणु लगावो, एणु सेवठ भावा नै मरणी नी भौई । मूमल नै भुगत कराणु भौई । भर ई काम सारू बादरी सूँ जावा हसियारी भर भकल जोइजै”

“एणु”

“एणु की भौई ? जे पेला बुध सूँ काम लेतो तो क्यूँ मूमल नै हाथां सूँ गमातो ? व्हो सी व्हो । हमें म्यारळी बुध भर तांघजी सुध । समझगी ?

“हवै, भाऊ समझयो”

“तो, लोल गावा”

“गावा ?” कमकर केमरी भेली व्हैगी ।

“हो मोमजा बाव, यां गावां में तो मरणी रो ई मैतव भौई”

“पछे ?”

“पछे की ?” भापां मैमूद रा चार सिपायां नै मारया के नी ?”

“हो”

“बस ती पछे भै गावा सतारो, वे पैरो, भर सीखली सेध मारंगी ।”

गत्र री सूक्र भर समझावणु सरूप दोन्यूँ जणा मैमूद रै मर्यादा सिपाइयां रा गावा पैर लिया । वा गावां रै ताजी लोई लागोवो हो । दोन्यूँ जणां तलवार सूँ खुद रै सरीर माथे दो चार जागा, खासकर ढावै हाथ, भेरु टांगे, कमर भर मूण्डे माथे छोटा छोटा घाव कर लिया । धूड़ में सूट'र सरीर नै धूड़ सूँ भर लियो भर सुलतान रै काफल में भेळा मिळया । सुलतान रा सिपाई वां नै घायलां रै तम्बू में पूगाय दिया । सठे हकीम साब वारै घावो नै घोय वां माथे ओखेंदी लगावयो भर पाटा बांध दिया ।

मोघजो कोई भूँपो कोनी । म्हे कंवळ, म्हे केसरी हूँ जेतसी रो भाटी"

"हा, हां सुण लियो, ऊठ के हूँ भात रो दो चार ।

"लात रो क्यू ठाकरा तलवार रो द्यो नी सो पापी प्राण तो नोसरै"

"प्राण तो चारा लेसा ई पण पैना चारी परस तो करला"

"की रो डीकरो भौई तूँ ?"

"धरजण सिय रो"

"कसो जोड़ रो भूझार ?"

"हवै"

"तब तो तूँ मोघजो भाई ब्हियो । काई बिस्वी पड़्यो ? भिणियो दावती हो"

केसरी रै नैणा सून दो मोतो टप देता खिरग्या । वो मद्द वो नै गळ सून लगाय लियो ।

"चाल डेरै"

केसरी भर गज दोन्यूँ भेळा बैठ ब्याणू कियो भर ऊपर सून गरम दूध पियो । केसरी मे पाछी चुकी सगती घापरनी । हमें वो नै भूमल री भोळू सतावण लागी ।

दो साण्डा यस्त्राण कसियोड़ी खार बैठी हो । केसरी आज पैनी चार कमर सून तलवार मटकाई । भापी रात रै लपै टनै गज भर केसरी चम्पापुर पोवाया । भघबलिया भूँपा सून निकळती बिणपायाँ सारी कथा बसाण करदी । समसाँण जैड़ी गिन्ध सून बाँरी माया भिन्नावण सागा । चन्दरमा हमें सजास कर गांव री हरीगत नै साजळ उधाड़ी कर दी । हवा उवा भघमरिया बूड़ा ठाडा रा भ्रमकिवर्या सरीर टसकता हा । जागा जागा खाडा भर मळवै रै इलाया की लोपडिया कटियोड़ा हाय टांग । टाबरा रा किरचा कियोड़ा सरीर भर जिनावरा री बढवू देवती हड्डियाँ रा पंजर मुलतान रा दो-चार सिपाई गांव मे घड्ड घूमता हा । गज बाँ री गांटकिया उतार, बढळी लेवण री भेलाण कियो । केसरी चितबगनी दृगो । वो तो भूमल री भोळू मे खुदरी सुभ भून बैठो । भेक दो जागा लुगायाँ रा कटिया सरीराँ कन पूग, वो भोळसण री कोसोस करी । पण गज रा श्री बोल "काला ! जवान छोरी नै कतल करे जेडा श्री गाफन नी भौई । स्मात भूमल नै मँमूद रा सिपाई भगतलो भौई" वो रै काळजै नै बोन्ध नाश्या ।"

"हीमत राक । घापा लेसाँ बडळी । म्हे भूमल नै नो छुडाय सावूँ तो भयल रजपूतणी री चूँगायोड़ी नी । सोवन तन्नो री, जे तांमबो भूमल नै कर्न लाय नी ऊभी करूँ तो । पण तनै मोघजै कंवळें में हालणी पड़सी ।"

"म्हे नो जाणतो के मँमूद घेड़ी जालम भाणस भौई, हाया भिनया नै सून

धरवाद करण रो वीं नै काई हक ?”

“हूँ । हमे बातां कम कर, जाणतो तो काई कर लेती ?”

“म्है, वो नै इण दिस में घुसण बी नी देतो”

“हूँ, अकले सूं अक छोरी ती ढगी नी अर लस्कर नै ढाव लेती । जद केजूं के जेतसी रा ठाकर डींगां हाकण मे हुसियार भीई, हीमत रा पोवा भीई, साव पोवा ।”

“देख गजू ! मनै गुम्तो मत घणा”

“केसू ! आज अकर गळै मिलजा । आज बिस बरसां पछै मनै कोई ई नांव सूं बतलायोई ।”

दोन्यूं अक दूजे सूं गळै मिलिया । अक मळवै रो मोली ले’र दोन्यू बैठिया ।

“देख केसू ! ई लस्कर सूं लइण रो तामत नी तै मे भीई नी म्यारळी । आपां यां सूं भिड़ भलै ई जावां, भलैई दस बिस सिपाइयां नै ठिकाणै लगावां, पण सेवट आपां नै मरणी नी भीई । मूमल नै मुगत कराणो भीई । अर ई काम साक बादरी सूं जादा हुसियारी घर अकल जोइजै”

“पण”

“पण की भीई ? जे पेला बुध सूं काम लेती तो क्यूं मूमल नै हाथा सूं गमाती ? वही सो वही । हमै म्यारळी बुध अर तामजी सुध । समझणी ?

“हवै, भाळ समझणी”

“तो, खोल गावा”

“गावा ?” चमक’र केसरी भेलो दहेगी ।

“हाँ मोझजा बाप, यां गावां में तो मरणी रो ई मैतब भीई”

“पछै ?”

“पछै की ?” आपा मैमूद रा चार सिपायां नै मार्या के नी ?”

“हाँ”

“दस ती पछै जै गावा उतारो, वे वैरी, घर सीखली सेध मारणी ।”

गज री सूअर अर समझावण सरुव दोन्यू जणा मैमूद रै मरयोइ सिपाइयां रा गावा पैर लिया । वा गावा रै ताजो लोई लागोइ हो । दोन्यू जणा तलवार सूं खुद रै सरीर मार्य दो चार जागा, खासकर डावै हाथ, अक टाग, कमर अर मूण्डे मार्य छोटा छोटा घाव कर लिया । धूड़ में लूट’र सरीर नै धूड़ सूं भर लियो अर मुलतान रै काफल मे भेळा मिलिया । मुलतान रा सिपाई वा नै पायलां रै तम्बू में पूगाय दिया । चठै हकीम साब चारै घांदां नै घोव वां मार्ये भीखे दो लगायदी अर पाटा बांध दिया ।

(१६)

'पूनमी"

"हवे"

"तू चम्पा नै देखी ?"

"देखी नी, मुणो भौई"

"की मुणो ?"

"मुणो के बौत ई अकड़ छोरी भौई, कोई पाड़ेत बी नै उढाय लेयायी, भर इवै व। काली भिहयोड़ी फिरै ,"

"काई बात करई ?"

"हूँ, साव साची बात भौई पण भापर की लेणी भौई बीं सू ?"

"रूँ बी सूं ब्यांव कहंसा"

"ब्यांव ?" पूनमी री मूणही उतरायी ।

"बयू ? बोली नी"

"हाँ करो ब्याव, हमै काली छोरियाई ब्याव करण ओग रीनी भौई"

बात री रख बदलण सारू पूनम दूजो सवाल कियो ।

"सुलतान भैमूद री नांव सुण्यौई ?"

"हाँ सुण्यौई, बी सूं नी ब्यांव नी करणी ?"

पूनमी बोड़ी गुस्सी भर बोली—

"ब्यांव नी बी सूं लड़ाई करणी भौई भर बी री माथी काट, राख नै भेंट करणी भौई"

"हूँ । सुलतान भौई कोई ऊन्दरै री बचिमी, के नामजै हाथां माथी बटासी"

"बयू ? रूँ मे बल कोनी ?"

"बल तो पणी ई भौई कंवर सा, भजूं गोमजा हाडका भर मरीर दूखई पयो, पण कळ कोनी"

"की मुलळव ?"

"मुतळव भौ के खुद सूं दुसमण नै जीतण सारू बार 'ळ'ळा' जाइजै भेक सूं पार कोनी पई"

"वे की ?"

"ल्यो । साकी करवा चाल्या भजूं इतरी ई ग्मान कोनी"

"तो तू समझाई, बड़ी पसरै ई पई"

"तो मुणो । खुद सूं जादा बल वालें दुसमण नै जीतण सारू बळ रे सागे दळ, बळ भर छळ नै बी काम मे लेवणा पईई, की समझिया ?"

“तू तो बोल हसियार निकली”

“वा तो हूं, भौई, जद ताने भाल फोटा किया”

“तो मनं बी सिखाई”

“क्यूं ? भसमासुं वाळो दाव मोमज ऊपर ई भजमामण री विचार भौई ?”

“तेनें को जीतूं ? मनं तो मंमूद माथे वार करणो भौई”

“रजपूतो में सो ई ती भोगण भौई, सांमं पगां मीत रै मूण्डे जावई”

“की मुतळव तांमजो ?”

“मुतळव साफ भौई । केत मंमूद री लस्कर घर केत राव रा गिणतो रा भाइत घर धाइत ?”

“भाटी धाइत घर भाइन भौई ?”

हां, हवं । घर पकल होण बी । तनोट घावण री वार उढीकै, क्यूं नी बी सूं सीधां माथे ई भिदै”

“ई सारु बोल जादा सिपाई जोइजें”

“भा ई ती म्हे कंठू ई, जद मुकावली करण री पूरी सिमरण नी व्हे, तद दुसमण सू राजीपो कर लेणो जोइजें”

“जे दुसमण नी माने ती”

“माने क्यूं नी ? ई में बी रै बाप री की जावई ? वो तो नफे मे ई भौई, बिना की गमायां बी रै हाथां कीं लागई, ती वो क्यूं नी लेवें ?”

पूनमी री बातां सुण'र पूनम अचम्बे मे पढ़ायो । बी न मन ई मन पूनमी री भकल माथे गरब व्हेण लागी । बी भणी ताळ सोचती रैयी । गांव खाली करण सूं ले'र मूमल घर केतगी घर खुदरी हालत रै वारे मे वो खूब सोचयो । सगळां री बरबादी री कारण हो जुह । वो पूनमी ने जंभेडी । पूनमी बी रै पसवाइं ऊंधी पड़ी, भाराम सूं सूती ही ।

“ऊठ ! तनोट री मारग पकडां ”

“कंवर सा, म्हेने डर लागई । मोमजो कवल बस आपन पंचामण री हो । अेक दिन घर अेक भाधी ऊपर रैण बोतगी भौई इवें म्हेने मोमज ठिकाणें जावण द्यो”

“पण'तू तो पाछो जावण सूं नटतो हो”

“म्हे, की तांमजे थोरा सूं थोडी भौणी भौई ?”

“इवे करूं थोरा”

“तो करो थोरा”

“वर्षान कलं ? मान जा बहमागण”

“ऊं है मू नी मोघजा पग पकड़ो”

“पग पकड़े मोघजी बसाय” भा कंयर पूनम दोन्यू हाथा मू पूनमी नं ऊंचो उठा'र साण्ड माथे चंढायदो घर खुद बी साण्ड ऊार चढ सवार रहेगी। पूनमी साण्ड री मोरी जाण कर होसी छोड़दी। साण्ड धीरे धीरे पावण्डा भागें बघावण लागी। धीरे पार, साण्ड खुर्त मैदान मे घासण लागी। कोम भर री भौ पार करण मे खासी ताल लागी। पूनमी तो मन में मावचेत ही कं ई घास सूं बी वा दोदारी साईं नं बे गूं तनोट पूग जाभी, पण पूनम रें मन मे घणी उतावळ हो। मारग मे घणा ई ऊंठे सवार घावता जावता मिळिया। पण सँ कोई घापस री मे बस जँ माताजी री कर निवळ जाता। थेर दो सवार पूनम सूं सवाल जवाब क्रिया पण पूनम रें पकड़तर सूं वीरो बँस जावती रेंगी। परमात री पुळ, पूनम, तनोट री सिरै मोळ रें सामे साण्ड भेकी।

(२०)

गुलाब भाई जद महाराणी रें मैल रा कपाट बन्द हा। वा खासी ताल वारें ऊभी रेंगी। राय सूं मिळिया पैसा वा महाराणी नें समचार देवणा चावती। सूरज प्रसमान मे निरी ऊंचो घा घुची हो। कायी व्हे'र गुलाब राव रें मैल कानी गई पण राव मोघ नी हा। पगा नें घीसती वा पाछी महाराणी रें मैल कनें पूगी। गुलाब नें घावती देख, चम्पा घब करती महाराणी नें घरज करण नें दीड़ी। गुलाब री मन उछाळा लेवती कं बी रें घावण री सुण महाराणी सा सामा पगा घावला। पण खासी ताल व्हेगी घर चम्पा बी पाछी कोनी बळी ती बी री मूण्ही उत्तरायी। बी नें भेड़ी लछायी जाणें वा कोई घसैव्ये मुलक में घायगी हे, कं जाणें वा कोई बीन मोटी अपराध कियो हे घर बी री दण्ड भुगत'र पाछी भाई हे। बी नें लछायी कं बी नें कोई घर सूं काठ दी हे। थेर छिन ताकू बी नें विचार घायी कं बी नें भेष सूं ई कारण काड़ी ही कं वा पाछी नी भावै पण.....

वा विचारां मे अलूभियोडो लारें पावण्डा धरण लागी। इतरें में कस्तूरी घायगी। वा गुलाब री बाहुडो पकड'र बी नें जंभेडो घर छासी मूं बिपटगी। किस्तूरी, गुलाब ने बाया मे भरने कसली। गुलाब रें नैणा सूं भासूं दुळता रेंयवा। किस्तूरी बी नें पकड'र महाराणी रें मैल मे लेवती। महाराणी पिलङ्ग माथे घापी पोढियोडी ही। चम्पा पग दबावती। गुलाब लुळ नें पाय लागण कियो। महाराणी बोडी सी मुळकी।

“आव गुलाब ! कद भाई ?”

“खासी ताल व्हेगी घायो नें तो भसदाता”

“कोई दुख-विपदा तो नो पड़ी ?”

“नी भन्नदाता । आपरी किरपा सूं भालुन्द रेपी”

“पाकोड़ी व्हेला ? जा घोड़ी ताल घाराम कर, पछे मिलजे”

“भाराम तो पछे बो करणीई भौई भन्नदाता । पैजा राव सूं भिलणी जरुही

भौई”

“बयूं ?” राणी थोड़ी खारी निजर सूं देख्यो”

“सनेसी भरज करणी भौई भन्नदाता”

“कं रो सनेसी ?”

“पूनम सिंगजी रो भन्नदाता”

“बयूं ? वो खुद केत भौई ? जीवई कं ...?”

“व्हीर व्ही जद तक तो जीवता ई हा”

“तो पूनमे सूं पूनमसिंग जी व्हेला ।”

“नी महाराणी सा”

“खैर । छोड ई बात नै, तैने काल घेय सूं सोमजे पीरे जावणी भौई, राजकवर रो घाय बण नै, समझी ?”

“हुकम भन्नदाता”

“हाँ तो काई मनेसी ल्याई ?”

“घाय साह तो की नो भन्नदाता । राव साह पूरी विगन भौई”

“हवै, राव नै खानगी मे बताइजै, तीजे कान ठा नी पड़े । बीत बदलगी ।”

“गुलाब धूक गिटणी । नैण बन्द कर शॉसुवा नै पलका मे रमा दिया ।

“गुलाब ! की चुमयो काई ?”

गुलाब मूण्ही नीची कियां माथी घुणियो । “घुभूं जी रै म्हे चुभूं भन्नदाता” ।

“मनै त्पारळी पूरी भरोसी भौई”

“गुलाब ! म्हे बीत रखो व्हेगो ?”

“नी केत ?”

“खैर । सूं जा पैला थाळी जीमलै । राव ने सनेसी देय, तीजी पीर म्हासूं मिलजे ।

“हुकम भन्नदाता” कैर गुलाब ओथ सूं सपाट सूं बारै निकलगी । बारै भार वा हुमका हुमक भरीजगी । म्हावणपर रा किवाड़ बोड़, वा फाट फाट'र रोवण लागी । हमें वो रो जीव की हलकी बिहयो ।

गुलाब, महाराणी सागै बिया रै दायजे में आई ही । सारला दो बरसां सूं वा मझांगणी रो खास मानेतण व्हेगी हो । महाराणी रो कोई बो बात वीं सूं छानी नो हो । वा झेकसी डावही हो जकी के महाराणी रै मेल मे भर

कदे ई महाराणी रँ मील में पिलंग माथे बी सूप जावती । महाराणी री इतरी मानेत्तण व्हेणु रँ कारण दूजी डावडियां धी सून ईसकी बी करती भर वीं री गरज बी राखती ।

आज रँ महाराणी रँ बरताव सून बी नँ अचूम्बे सार्गे ई घणो दुख भिह्यो । पण वा आपरी पोड री रोवणी की रँ कने जाय रोवँ ? बी री बात सुणण वाळी ई जब आज बी नें चोट पोचाई हे ती बी री दुखी व्हेणो सुभाविक हो । हमे भीता रँ इलावा बी री रोज सुणण वालो कोई नी हो । वा किणो नँ सुणावणी बी नी चावती । महाराणी रँ मीठे बरताव री आणुन्द बी वा इन उठायो । तो इवँ खारा बी बी नँ इन खावणा हा ।

वा सीवणी छोड'र खुब नँ भावी रँ हाथ मे छोडदी । वा खुदनँ सम्भाळ'र ठीक करी । बी नँ याद आयो कँ बी नँ राव ने समचार देवणा है । वा फुरतो सून तिनान कर तय्यार रही भर राव रँ मेल कानो ब्हीर व्हेगी । राव ने विगतवार समचार देय, वा खुदरी कोटड़ी में कैद व्हेगी । तीजँ पोर किस्तूरी भाय कुण्डो खडखड़ायो । पुनम रँ सुपना मे उलझियोडी गुलाब, छिन भर सारू मुख रँ समदर मे छोळां लावती हो । कुण्डे री खडखडाट सून वा यचारथ री धरती भायँ छिटक पड़ी ।

मील रे दरवाजे माथे ऊभी महाराणी, गुलाब री बाट जोवती ही । गुलाब नँ सामी आवती देख, महाराणी किवाड़ री मोली मेय छिपगी । ज्यून ई गुलाब, मील रँ मांय पग धर्यो, महाराणी पूठे सून भाय वीं री घालियां मीव दी । गुलाब, मोड़ी बी बिचलियां बिना उठे ई ठैरगी । महाराणी, गुलाब री घालियां सून हाथ अलगा लेय बी नें बायां मे भरली । गुलाब ठण्डी रँयी । हार नँ महाराणी वीं नें छोड वीं रँ सामी आयगी । महाराणी रँ इसारे ऊपर दूजी डावडिया मीज सून बारँ निकळगी । महाराणी, गुलाब री हाथ पकड़'र भागे सांच साईं भर हलकी सीक धक्की देय, बी नें पित्तम माथे गुदायदी । गुलाब पिलंग सून ऊठ'र ऊभी व्हेगी । हमे महाराणी पिलंग माथे बैठगी । गुलाब री हाथ पकड़'र वा खुदरँ नैदी खावण लागे पण गुलाब करही पड़गी ।

"रुमगी ?"

"अन्नदाता तू रुतर केन जायू !"

"जद करडाण कँ री मोई"

"कीड़ी नी दोखण सार्गे "जदी....."

"म्हे साचाणो तेनी चोट पोचाई"

‘नी भद्रदाता । म्हे गुद ई धणी इतरगी हो”

“गुलाब । तेनें काई ठा कौ ह्यारळें वास्तें भोवजें काळजें मे को धोई ?”

“हुकम करो । दाखी नै ब्यांन याद करो ?”

“पेता बता, तूं म्यारळें मूं नागज तो नो धोई ?”

“घापरें घातरें ई तो जीवती हूं भद्रदाता ।”

“परमूं राते, राव भेष ई धोइया हा”

“जदे ई मोन तोरम मूं भरियो धोई”

“गुलाब !”

“हुकम”

“तूं मझूं मझें सिमा नो करो ?”

“दाता । मूं ई मरण नै ह्यार धोई । हुकम दे’र तो देखो”

“गुलाब ! ह्यारळो होइ कुण करे ? म्यारळें मन रो हरेक बात म्हे तंनै खुल’र कौ सकूं”

“घापरी किरपा धोई भद्रदाता”

“गुलाब । तूं नो जाणै के तेनें भळयो करतां वकां म्यारळें काळजें रा दुकड़ा दुकड़ा म्हे रेंपाई पण काई करूं ?” जीवता रेंपा तो केरूं मिळाला नो तर धणी दूणा केरूं जीवली धोई । कठें ई तो मिळालाई”

गुलाब मूं हमें नी रईजियो, वा महाराणी रा पग पकड़’र जमी माथें बैठगी । पगां बिचें माथी घात’र वा हुसका हुसक भरगी । महाराणी बी नै उठाय काळजें मूं भोचली । महाराणी रै नैणी मूं बी भांसू टळक्या । पोड़ी ताळ पोन्गूं सै की बिसराय ओक दूजी री बाया मे बगियोड़ी रेंपी । मेल रा किवाड़ जुहाया । साकळें, गुलाब राजकवार नै लेय व्हीर धेगी । महाराणी की गमाय दोन्ही । दिन भडोळी धेगी सूरज माग्दी लागण लागी ।

(२१)

"सत्तू काका ।"

"कुण लाखण भौई ?"

"हा काका"

"काई समचार भौई रे नुवा ?"

"हमार ती भेक ई बात री बंतल भौई काका, साकै री"

"हा, भाई, साको ती रजपूत री घरम भौई"

"यां फिकर मत करो काका, राव नै हरावण वालो ईं ससार मे जलमियो ई कोनो ।"

"जीवती रं । लं, तमाकू ती पीवती जा ।" तघोट री पुराणी भोमियो सत्तू काका, दो मोटी लडाइयां मे आपरी बादरी री छाप छोड चुको है । यां लडाइया मे ई सत्तू काका री भेक टांग घर भेक हाथ कट चुको है । मूण्डे ऊपर तलवार रं घावां रा सतरा सनाए है । कमर मे भाले री मार सूं फसलियां हूटगी घर लवक पडगी । दिन भर, घायं गयें मिनख नै सत्तू काका प्रेम सूं बतलावै, तमाकू घर पाणी री मनवार करै घर नुवा समचारां री जाणकारी लेवै । दूजा लोगा ज्यूं सत्तू काका मे, खुदरी बादरी री डीगां हांकण री घादत कोनो । पण वाने लारली लडाइयां री पूरी विगत मूण्डे याद है । सत्तू काका जद किएगी री सोभा करण लागे तो कंजूसी कोनो बरतै । बांरी सबसूं मोटी जद किएगी री सोभा करण लागे तो कंजूसी कोनो बरतै । बांरी सबसूं मोटी खासियत घा बी है कैं वे सुणए वालें री बी तारीफ बराबर करता रेंवै । बातां रा लच्छां सू सामळी सोरे सास ऊवें कोनो । कोई कोई वाने छैडै बी कैं वे कौं खुद री तारीफ बी करै पण सत्तू काका भौड़ी बिछिया हंस'र बात टाळदै, रं घर रं सामे सूं बैवती कोई बी मिनख यां नै नुवा समचार देवण सूं चुकै कोनो । "काका म्है सुणी भौई कैं गजनी री सुलतान बीज मोटी लफ्कर लेर धावो बोलए वालो भौई ।

"सो ती भौई पण साच पूछै ती हमकें टवकर बरोबरी री भौई"

"हां काका । आपणी बी तय्यारी में कोई कगर नी भौई घर लोगां रं मन मे बी पूरा भरोसी भौई"

"जद ई ती भंर बाजियां रं उपरान्त बी घणकरा लोग तघोट नै खाली नी करियो"

“हाथी करने जावे वो केत ? काका !” तमाकू रो गुट्ट लगावता यकां लाखण बोल्थो ।”

“जावण नै तो यूं भौई काला, के लुगाई टाबरा भर बूढा-ठाढां नै जुद् रै मेदान सून भळगो ई राकणो जोइजै ।”

“सत्तू काका ! श्रेक बात बतावो”

“पूछ”

“यां वयूँ नो गिया तन्नोट छोड़'र ?”

“मै केत जावूँ काला ?”

“वयूँ काका ? यांगे गांव तो घणी सांतरी भौई भर घणी भागी भौई । घोष सुलतान री मार कोनी पड़ै । भर यांगे नानाणो तो मारवाड़ मे भौई घोष वो जा सको । प्रहं कठे ई नो जाणो चावो तो सोरघ जातरा रै मिस तो कठे ई जा सको ।”

“जावणी तो मै जमलोक चावूँ बीरा पण चायां सून तो कोडो वो धूडे में सोधिबोड़ी नो लादै” । ठण्डी सांस छोड़ता यका सत्तू काका बोल्था ।

“तो मै चावूँ काका, घोड़ा गढ मे कण्डा पोबावणा भौई”

“हाँ, जा बीरा”

घोड़ी ताळ रुकर सत्तू काका लाखण नै पाछो हेतो कियो ।

“भरे लाखण ।”

“काई काका ?” लाखण घोड़ी भाग निकळ चुको हो, चनें सून ई बोल्थो ।

“घोड़ी नजीक आ”

लाखण घोड़े भणमण भाव सून पाछो बलिथो । सत्तू काका भण्टळ मांय सून श्रेक कोबली निकळ'र वो री मूण्डो खोलियो भर पेमली बोर री गुठली जितरी भमल री श्रेक डळो लाखण रै हाथ मे मेलता यका बोल्था “देख इसके भसल जैडो मावो मंगावो भौई” ।

जीभ सून चाख'र लाखण हुंकारे मे माथो हिलायो भर घांठियां घटकाई । “भरे हां, मै यूँ केतो के वो जेतसी भरजुण बाळा माटी सिरदारां री टोळी भजूं भाई कोनी ?”

“हां सत्तू काका, यांगे समचार देणा तो मै भुंइयो । आज ई हरकारो घोष सून पाछो आयो भौई । जेतसी गांव तो उम्हड्यो भर रेवासिया री बावड़ कोनी । सुणी भौई के सुलतान री फौजां, गांव नै टाळ'र निकळी भौई । पाथो री कैणो भौई के जेतसी रा सेंग वासी घोटारू कानी गया”

“जेतसी वाला भै तो लूठां घाड़त, जाणें हमके बयान मोड़ो करग्या । भ हा, जेतसी री डीकरो ? वो की नांव भौई थो री.....”

“पूनम” लाखण लपकी तोड्यो ”

“हा वो तो मारके रो बांकी बादर निकळियो”

“हवै, काका । वो तो मढ़ाक करती वो मळ्छे री गांठकी बाढ़ती ई निन्नर
घायो”

“तू हंती घोय ?”

“हवै काका, तू हंती । मौमजा तो पग घूजण लागया काका । भरी सभा में यूँ बघ करणो कोई असखेल कोनी, भर वी मळ्छे री लोय नै कबूतर बाईं लुटती देख म्हैने तो ऊबकी घायण लागयो ।”

“पण ई नै ठा किया पड़ी के भेय मन्दर मे मळ्छे घौई ?”

“काका, वो मुलतान तूँ धाड़ी पाड़'र पाछी घायतो । धीरां मे लत्कर नै देखियो । वो घोरं री मोलौ लेय छिययो । रातें घोय तूँ दस बीस जेडा नै दया घायता देख, वो वारं लारं टुरय्यो”

“पण बीं नै अकलें नै पीछी नी करणो हंती ।”

“पण काका वो तो भापांरें मलें सारू ई बां रें सारें टुरियो ।

“हवै । म्है तो यू ई कैन्नं सीरा, दुसमण री काई पतियारी ?”

“नी काका । वो तो बां तूँ बेलीपी कर लियो भर बांरी खासी बातों री भेद ले लियो”

“पछे काई दिह्यो ?” सतू काका नाक मे अक बिपटी चढ़ायतां चका बोल्या ।

“वो पूनम ई तो यानें मन्दर ल्यायो हंती ।”

“तूँ वळ ?”

“हवै । जदी तो वो वारं नैड़ी बैठौ हंती भर बार चालतां ई सपाटे तूँ कर दीन्ही किलाण भेकें री तो ।”

“पण भेक भेद तो भाग निकळियो ?”

“हवै काका, पण इवें तो पूनम नै राव खुद दुसमण री भेद लेवण सारू भेजियो घौई ।”

सतू काका बोलण सारू जवान पोली भर बां री बाकी फाटोड़ी ई रेंग्यो,
सोमं सू ठाकर जेतसी भर वारें पूठें दो सो मोठ्यार तनवारां लियोडा भा रेंपा हा ।

“जें तनो माताजी री, सतसिगजी !”

“जें तनो माताजी री, ठाकर जेतसिगजी !”

ठाकर भेक दिन रकरं पुछ्यो—“सरीर तो सोरो घौई सतसिगजी ?”

"हवे, ठाकरा आपरो पूरो किरपा भोंई"

ममल री पोटली सून, भेक डळी हथाळी माथे घर सत्तसिंगजी, ठाकर जेतसी री निजर कियो घर बडे उमाव सून बोल्या—'ठाकरा, आपरे डोकरे पूनम री घणो चरचा सुणो, म्हांने बी दरसन तो करावो कवरसा रा"

ठाकर जेतसी री सीनी भेक'र ती गरब सून फूलमयी पण वां री नैणां में गुस्सी भरग्यो। बीजे ई पल वारें चंरै सून भौळाई मळवण लागी। हमार ती राव सून जुबारडा कर होक देदां पछै फुसरत सून मिळोला। भा के'र ठाकर जेतसी भागै बधायो। वां सारें पूरो काफलो भागै बधायो।

ठाकरां नै सांमी घाता देख'र पूनम भर पूनमी भेक सून डेरे मे लुकग्या। पूनमी बोली—

"कदां लग चुकिया रैसां ? कोई सपाव करो"

"काई सपाव करा"

"मनै पाछी बळण द्यो"

"केत जासी तू ?"

"जासून काळी मूण्डी करण"

"बो तो भेत ई क्यूं मो करलै ?"

"भेत तो पछै भेली घांरी बी म्हैला"

"म्हेण दै। हवे तो सामे ई मरणी भोंई"

"म्है मरण नै स्मार कीनी"

"मरणी तो भोंई। सुलतान री फौजां भारणां बँवई पयो। सून बच'र केत जासो ?"

"भर भेय मनै ठाकर सा जीवण कोनी द्यस्ता। भाछी घाडेतों री पल्लै पड़ी"

"तू व्याणू री तय्यारी कर, म्है नगर मे घूम नै की समंचारां री जाणकारी ले'र भावू"

"म्है, भेय भेकली क्यान.....?"

"अपूँ लावेई कोई तेने ?"

"भो लावे"

"म्है वों नै काचे नै सा जासू"

"पाछा बीगा ई भावजी"

"हूँ"

पूनम वारें निसरग्यो।

(२२)

पूनम जद मोलां कांती पूगी ती ज्योदो में ई किस्तूरी ऊभी ही । वा पोरायत नै सानी की । पूनम वेधडकं मोलां ये घुमग्यी । वो किस्तूरी रे पाछे चालती गयी । दो चार नाळां चढर वो श्रेक मोटे मोल मे पूगी । भी वो ई मोल ही जेत वो रो पैलपोत राव सून मिळणो गिहयो । राव रो सिधासण खाली पड्यो हो । किस्तूरी, पूनम नै श्रेक दूजे आसण माथे बैसाय ओप सून खिसकणी ।

घोडी ताळ में महाराणी शेंकांनी सून आवती दीसी । पूनम ऊभी ग्हेगी । महाराणी मुळकी । महाराणी मागें वा रो डावडी केमर हो । वा ओप ई हकणी । महाराणी भागें भाप भापरें सिधासण ऊपर विराजगी, अर पूनम नै बंठण रो सानी करी । पूनम संकती-सकती बैठी ।

‘हाँ, तो पूनमसिंगजी पवारग्या भाप ?’

‘हुकम, भद्रदाता’

‘बाप सून छाने ?’

‘हुकम, कोई झंडी ई बात हंती’

‘ठाकरा नै तो भरोसी भीई कं भाप राव रे खास काम ऊपरों तैनात हो । वे भावनै सोधण सारू भेय भाया बी हा । खैर, या बतावो कं फोड़ा तो नी पडिया मारग मे ?’

‘नो भद्रदाता, भापरी पूरण किरपा हंती अर भापरी डावडी गुलाब रो साप ग्हेणें सून घणी सुमीती रीयो ।’

महाराणी श्रेक छिन सारू मूण्डो फोर लियो ।

‘बोत बोली छोरी भीई भद्रदाता, ग्हे बी नै भागूच ग्हीर करवी हो, पूगी कं नी ?’

‘भेय तो पूगी कोनी’

‘नो पूगी ?’ पूनम रो मूण्डो उतरग्यी ।

‘वयू, मभापदी म्मारळी खास डावडी नै ?’

‘नो भद्रदाता, ग्हे बी नै सिआय नांथो ।’

महाराणी रो भाव्यां मे थोड़ी भचम्बी हो ।

‘काई गिह्यो ?’

‘वियो ती काई नी । पण भोभजे ती पछतावी भीई कं ग्हे बी नै साव घेरली नै मेलदी । इवै भावनै काई मूण्डो देसावू ? राव नै काई पछतर देखू ?’

‘ते बी नै बीत दुख दिया ?’

‘हाँ, भग्नदाता’

‘ते बी सूँ रिसांणी कियो ?’

‘हज़र, कसूर व्हेगो’

‘म्है बी बी नै रिसांणी करदो, बी नै काढदी अेष सूँ ।’

‘काढ़दी ? क्यूँ हज़र ?’

‘म्यारळी डावडी व्हर आपनै फोड़ा दिया’

‘नी हज़र, बा की फोड़ा नी घातिया । म्है खुद ई बी नै.....’

‘खैर, जावण द्यो । इबं बी री बात छो डो’

‘मनै खिमा करदो भग्नदाता’

‘खिमा तो गुलाब करोम जद होसी पूनममिगजी’

‘भेकर हज़र मनै बी सूँ मिलबा द्यो, नी तो मौमजी घातमा घणी कळपैली’

‘घातमा तो मौमजी बी कळपै, पण इबं बी नै केत सूँ त्याबूँ ?’

‘क्यूँ ? ती काई..... ?’

पूनम घर महाराणी दोन्हूँ रा नैण अंक पल सारू गळपळा व्हेगा ।

‘म्है बी नै देस-निकाळी’

‘देस-निकाळी ?’

‘हाँ, वा ई तो म्यारळी सबसूँ भरोस री.....’

‘म्यारलै मन मे गुलाब सारू.....’

‘की व्हे । मनै ई सूँ की लेणी-देणी कोनी’

इतै में ई राख पधारग्या । राव रँ घातां ई महाराणी घर पूनम घाप घापरै भासण सूँ लह्या व्हेगा । पूनम भुकर राव नै दोन्हूँ हाथ जोड़्या । मुळकता यका राव पूनम नै बैठण री इसारो कियो ।

‘यूँ तो गुलाब सारी बिगत सुणाय दी, पण केरूँ कोई मैतब री बात व्हे तो म्है अबार पूछीस’

‘हुकम भग्नदाता ।’ पूनम केरूँ ऊठ’र हाथ जोड़्या घर भुकियो ।

‘बैठ । हां जीवणधन ! आप हमें पवारी । म्है पूनम सूँ.....’

‘दासी समझ ई । भग्नदाता रँ पधारण तक री ई जुम्मी हो मौमजी’ भा कंघ’र महाराणी मोघ सूँ खिसकयो । राव, पूनम नै लारै भावण री इसारो कर दूज गैले सूँ भेक माळ उतरिया । पूनम बां सारै भूवो गयो । घणां ई चक्कर लगावतां नीचे-ऊपर घड़तां सेवट राव अंक अई मौल मे लेयग्या जेत नाव सूनियाड़ ही । ई में मांत-मांत री दारू घर केई अजूबी घर कीमती बीजां पड़ी ही । हीरा, पत्ता, मोती इत्याद अग्यारै मे पसपलाट करता ।

पूनम नै बैठण री इसारी कर, राव दाहू री भेरू कूंची लाया घर भेरू
प्याली मे ऊभा'र पूनम रें सोमी करी, भेरू प्याली सुद्ध रें हाथ में ली ।

‘जै मा तशी री’

‘भग्नदाता म्है.....’

‘मां री परमादी भोंई । इत्तो में नसी नी चढ़े । लें, लें ।’

‘जै तशी माता री’

पूनम प्याली खाली करदी । राव बी प्याली खाली कर सिपासण सार्प
बैठा ।

‘हां तो पूनम ! इवै तू या बडा कं बी सेनापति तू काई तें कर भायोई ?’

‘भग्नदाता ! गुलाब भापनं सारी बात नी बताई ?’

‘वा तो खैर संग बतादी, पण तू काई कैव ?’

‘भग्नदाता ! भोभजी निजु राय तो भोंई कं सुस्तान तू राजीवी कर तियो
जावै ।’

‘काई कैव तू ? तू केतें मे तो भोंई ?’

‘भग्नदाता ! म्हैर्न चेती भोंई । सुस्तान रें इत्तें मोटें लस्कर तू टक्कर लेवणो
इत्तो सोरो नी भोंई जित्तो भाप.....’

‘पूनम ! तू तो सफा बोदी निकळियो रे । जेतसी रो डीकरो म्हैर्न मीळी
बात करई ।’

‘भग्नदाता ! भाप म्यारळें तू जादा ममझी भर सिरपवान हो, पण मन तो
ई जुद्द में सिवाय वरबादी रें की निजर नी भावई ।’

‘तो तू कर, चूहो पैर नै यसोधरा री चेली बणजा ।’

‘यसोधरा, कुण भग्नदाता ?’

‘यसोधरा बळें कुण ? वा देवदासी जकी जुद्द रें नांव तू भू-भू रोवई’

‘भग्नदाता ! म्है जुद्द तू नी तो डरूं, नी घबरावूं । भाप तो माइत भोंई,
भापरें तांमैं हो-करूं के म्है अणगिणत धाडा पाड्या भोंई भर अणगिणत बिनखा
रा प्राण लीया ।’

‘ई तू ई तो भेरू मोटें घाईत री परख ने रैयी ई ।’

‘परख नी भग्नदाता ! म्है बी री लागत पुरी तोती भोंई भर भापां री
सांमरय री लेखी बी तियो । म्है आ जाणू के इत्तें मोटें लस्कर तू सिरफ भापणी
फोज रें बळ तू ई नी लड्यो जा सकी ।

‘लड्यो तो मुकल कोनी । तवान दुसमण नै पछाडण री भोंई ।’

‘दुसमण नै पछाड़िण सारू तो अन्नदाता दळ, बळ, कळ अर छळ च्याहं जोइजें।’

‘तो तू भव म्होर्न बी सपदेस देवण लागी।’

‘नी अन्नदाता ! आ निसरमाई मोघजें मन मे नो ओई। म्है ती खुद सोचूं के वपांन दुसमण पाछी जावे अर आपां री कम सू कम हाण व्हे।’

‘ई सारू काई सोच्यो तू ?’

‘ई सारू म्है अेक बात सोची ओई अन्नदाता !’

‘बोल’

‘म्है, सुलतान सू मिळेर वों नै ई बात सारू राजी करूं के वो अःप सू राजीपी कर, राजी-खुसी पाछी वळ जावं।’

‘हूं, पण अेक बात ओई’

‘हुकम अन्नदाता !’

‘पैला जोर अजमा’र देखला। जे आपां नै आ समझ मे आइस के आपां बी नै नो पछाड सकां, तद हूजो उपाव सोचसा।’

‘पण अन्नदाता’.....’

‘पण काई नी। पैला आपांन आपणो दळ अर बळ नै अजमावली पडसी। जद ईं सू काम नी चालै तद आपां नै अटकळ सू काम लेणो पडसी। सो श्वायली बात तो तीजोड़ी ओई। पण अेक बात ओई के जे श्वायली अटकळ सू की काम नी बणै ती ?’

‘तद अन्नदाता छळ रो सा’री लेणो ई बवं।’

‘अज ताई तो माटी कदैई छळ सू काम नी लियो पण ई बार जे मां लग्नी रो आ ई मसा व्ही तो श्वायली बात बी मानली पडसी।’

‘म्है तो अन्नदाता सगळा रो मसाई सारू बात करू ई पयो।’

‘बा ती म्है समझा हां तदी तो श्वायली बात सुण रंवा ओई नी तो को सू दतरी बतल करां ?’

‘पणो लम्मा अन्नदाता।’

‘लं, ओ श्वायली आम घेनाण ओई, ईं सू तू केन ई गिनी रोफ टोक मा-वा मकंसा। पावे जित्ती वित्त तैने ईं घेनाण सू मिस जाती अर म्है केन ई श्हेऊ, तू श्वायली सू मिळ मकंनो। श्वायली सू तो छळ नी करे ?’

‘अन्नदाता नै अरोतो नी म्है तो अबार ई गरदन उठार सकई’

तो अंक-अंक प्याली फेरुं धुई जावूं

'अन्नदाता' रो हुकम टाळणुं रो मुनळम म्है जांणू'

राव धर पूनम अंक-अंक प्याली फेरुं पोवो ।

'आज बाळ मोघजें सामें ई जोमजें'

'अन्नदाता'

सको के रो घोंई ? तेंने बितरकी काम मूंपणी घोंई ।'

'सको तो नी हजुर, पणुं म्है अंक वेली नें अंकर्त नें छोडूं'र भावो हा ।

उगीकतो व्हेसो ।'

'ती सामें ले भातो'

'अन्नदाता ! इतो मरोसो की तो कर्मान करूं ?'

'बयूं ? परदेसी घोंई काई ?'

'नी अन्नदाता ! म्यागळें गांव रो.....'

'की कोनी । टढीकती रंसी । तूं आज मोघजें सामें ई जोमलो ।'

'अन्नदाता रो हुकम पाळियां ऊपर'

'पूनम !'

'अन्नदाता !'

'तामजो बिमा व्हेगी के कवारो ई हे ?'

'नी अन्नदाता !'

'घणो सुखी घोंई'

'बयूं अन्नदाता ?'

'छोड, ईं बात नें । सुखी घोंई तूं, घणो सुखी ।'

पूनम जद पाछी भावो । अंक धोर रात दळणी ही । राव धो नें घणें मैतब रो

काम मूंपियो ।

(२३)

राव विजयराम, नगर सँ पांच कोस आगे ई पच्छिम, उत्तर ओर देखल
दिसावा में फौजा रा मोरचा लगा दिया । पच्छिम में तो चार पांच कोस आगे ई
फौजा आगे सांगी निजर आवती हो । हजार हजार सिपाइया रो तीन टुक-
ड़ियां सोतूँ दिसावा में तैनात हो । सबसु आगे पैदल सिपाई हा । याँ में
बल्लम, बछीं ओर तलवार चारी हा । बा लारें चौड़े आगे भ्रमवार सिपाइयाँ रो
टोळी हो, बा लारें ऊँट ओर सबसूँ लारें हाथी हाथी यूँ सो गिणती रा ई
हा पण राजा ओर सेनापति सारु हाथी ई काम में लिया गया । घुड़सवारी
कनै तलवारी, बछिया ओर भाला हा । ऊँट सवारी कनै खासकर तोर-तरकस
हा । या रो काम हो खुद रै सिपाइयाँ नै बचावणी ओर दुसमण आगे वार
करणी । पारा चलायोडा बाँण सात आठ सो हाथ रो मार करता । भै ऊँचा
वहेता ई चामतै नीचे आयोडा खुदरै सिपाइयाँ रो रखाळी वहेतो ओर दुसमण
आगे वार वहेतो । भै आगे सँ ई दुसमण नै रोक्कण रो क्षमता राखता ।

मैसूद गजनबी रो फौजा रै पूरण रै पैला ई राव विजयराम पक्की ओर
पूरी मोर्चाबन्दी कर ली हो । तीन दिसावा में मोर्चा लियोडा या तीन हजार
सिपाइयाँ लारें तीन हजार सिपाइयाँ रो दळ फेरुँ तैनात हो । भै लोग घीरा
रो आड़ में ई डंग सँ मोर्चा लियोडा हा कै भै तो मैसूद रो फौजा नै देख सकै
पण खुद निजर नी आबै ।

सुल्तान बी आगरी मोर्चाबन्दी कर चुक्यो हो । बी कनै तकरीबन बीस
हजार सिपाइयाँ रो फौज हो । मछेछ सिपाईं बीत ई डीगा, माता ओर डरावणा
हा । धरम रै नाँव आगे जुद्द करणी ई भै जोवण रो पुन मानता । बाँ नै मरण
रो डर कोनी हो । राव विजयराम हूँ दिन खुद सुल्तान सँ टक्कर लेवणी
चाहता । पैसडे दिन ती वे या रो रण बिदिया देखणी चाहता ।

स्वामी श्री रात रो दो ओर इलिया पछै हमली बोलण रो मूरत उत्तम
धतायो । ई आगे राव विजयराम बीत ई घोमास ओर मिठाम सँ भ्रम करी —

“स्वामी श्री ! रात रा हमलो करणी ओर बी बी सूतोड़े दुसमण
आगे । भै तो धरम जुद्द नी भौई ।”

ई पर स्वामी श्री, पट्टर देवतां वका बोल्या “राजन् ! जुद्द में नैतिक
धनैतिक की नी ब्हिया करे । जुद्द रो धेय ब्हिया करे बी नै जीतणी । धरम रो
मात जुद्द रै मामले में सोभा नी देवै । क्यूँ कै धरम तो जुद्द नै खुद नै ई मानता

कोनी देवें । धर्म किणी ओक भादमी, जाति, सम्प्रदाय के मुनक री सम्पत्त कोनी । पूरी मिनख जात मे ई री वासी है । भर मिनख जात री कल्याण जुद्द रें जरिये नो प्रेम भर भाईमा, रें जरिये व्हे सकें । पण राजा री घग्म वड़े भापरें प्रजा, सत्कृति सम्भ्यता भर देवा रें स्थानां री दखाली करणी । जको जीर्त वी री घरम ई साचो व्हे । राघन् नै देवी री वरदान है भर स्वामी श्री री भागीरवाद के जीत पोरी व्हे । जको पंसा वार करे वी री जीत री पासी पंसा मूं ई भारी व्हे जाया करे ”

स्वामी श्री मूं भागीरवाद लेय राव विजयराज ओकान्त में ओकर भाखरीवार खुद नै चिन्तण—मंथण मे उल्लावण सारु मिन्दर रें हागळी जाय पूजा ।

(२४)

देवी री मिन्दर खचाखच मर्योड़ी ही । सैकडू दिवा भर मसाला जगमगावती ही । देवदामिया री झुण्ड विजय निरत सारु त्यारी मे लाग्योड़ी ही । सैग नगर—वासी विजयव्रत सारु तयार हा तुगायां भाभूपणां मूं सिएगार कर भाई ही । राव विजयराज खुद ओकर घूम'र भोर्चा री निगे कर चुका हा । सिरदारा नै पूरी भोळावण भर हुकम दे'र मे पाछा भा चुका हा । सिपाइयां री जोस भर मार—मरण री क्लृप्त देख'र चारी चित्त हमांव मूं भरगयो । वा नै लक्षायो के चारी जीत पक्की है ।

चन्दरमा ठीक ऊपर मूं भापरी छटा बिलेर रैयो ही । सीतळ, लुभावणी भर मनभावणी चाँदणी मदगैसाई उपजावती । गढ मे जागती हजारों मसाला मे भांच ही । चान्दणी री सीतळता भर मसालां री भांच मे होड ही । सिपाइयां रा कोन हुकम सुणण सारु उतावळा हा । मिन्दर मे घंटा, ताळ जोर जोर मूं गूँजे हा । स्तुतिपाठ मूं भाभी गरजण लाग्यो । किणी रें नैणां मे मोन्द री तुम तक नो ही । टाबर टींगर बी जुद्द मे जावण सारु खाता पढ़ता । वे मोटा री नकल करण सारु जिद पकड़ियोड़ा हा । भावां रा भांचळ आना व्हेगा । वारी दूध भाज परखीजण वासी ही । बूढा भर सरीर मूं लाचार सोनां कर्न बी मोह लाग्योड़ी ही । वे सोन भापरी जवानो री वीरता री गाथावां सुणा'र लोगां री जोस दूणी करे हा ।

धचाणचक सैकडू नगाड़ा ओके साथे घुरावण लाग्या । सहवाई घर तुरई रा तीसा तुर भाभी नै चोरता, भर हिणो उज्ज उमाव भर भी मूं भर जावती । धणगिणत मसालां परकीटा रें भारें भांके'र जुद्द छेदण री घोपण करी । मूरत

सरूप की अग्निबाण छोड़िया गया। अग्निबाण दुसमण री दिसा मे यूँ लपकिया जाणें सिकारी कुत्तो सिकार नै देखता ई सोधी बी माथें हूट पड़ें। अँडी लागती जाणें भाभे सून अग्नि रा गोळा बरस रैया के आभे सून तारा खिगिया। राव कुलदेवी तन्नोटागय रा दरसण कर स्वामी श्री सून भासीरवाद लियो घर हाथ मे नागी तलवार लियां भिन्दर सून बारें निकलिया। हजारों नर-नारी तन्नोराय री जै, राव विजयराज री जै, स्वामी श्री री जै सून आभे नै गूत्रा दियी

नीन्द मे सुतोड़ा टाबर टीगर इत्याद चमक'र नीन्द सून जाग पड़्या। सजब सी हाकी मचग्यो। अँक बीजें री बात सुणणी मुसकल व्हेगी। कैया बी करे के नगाछां में सुती री उवज कुण सुणे?

सुलतान भैमूद गजनबी अचाणचक हुरो ई हमलें सून चकरीजग्यो, वो दुसमण नी इतो सावचेत नी जाणतो बी री फौज मे खलबल्ली मचगी। हजारों मसालां लाय रें लपक'र दाईं बां कानी तपकती निजर आवण लागी। तोफाण री गत तूँ भारी बघती मसालां घर जयदेवी तन्नी री धुनियां सून हड़बड़ीज'र भैमूद रा सिपाईं जकी बी सस्तर हाथी आयो उठा'र लड़ण सारू तयार व्हेग्या। कई लोग ऊन्हा भागण लागे। की सम्भूवां में छिपग्या पण तद तक भाटी सिरदार खासा नेड़ा पूग चुका हा। ई बिलिया सुलतान भैमूद घर प्रधान सेनापति सला करता हा। वा रें भेजियोड़ा भेदू भजू लग पाछा कोनी घाया हा। सुलतान री डेरी पच्छम दिस में ही। उत्तर बीर दक्खण कानी री टुकड़ियां नै भजूं कोई हुकम नी सुणाइजो भवे वां कगे दून भेजणी बी मुसकल व्हेगी हो। वाराह घर लंगरी बी बावड नी ही। वा रें पूगण नी पूगण इत्याद री कोई खबर भजूं सुलतान कने कोनी पूगी हो। यूँ वां रा भेजियोड़ा कीं गिणती रा सिपाईं पूग चुका हा। पण वां नै बी ईं बात री बेरी कोनी हो के वारी राजा कित्ती फौज कद तक भेज देसी।

पैल ई धावें मे विजयराज रा बीर सिपाईं, सुलतान रें अणगणत फौजियां री सफायी कर दियो। राजपूतां री तलवारां यूँ चालती जाणें वाइनी गाजर मूट्यां नै काट रैया व्हे। देखता ई देखती लोई री तूतारियां जागा जागा सून छूटण लागी। पांखी री तिरसी घरती माथें लोई री नाळियां चैवणी सरू व्हेगी। अणगण लोपां जमीं माथें घटाघड बिछयो। इनै यवन की सम्भल चुका हा पण बारें सम्भलतां सम्भलतां तकां वारा पंदल सिपाइया री टुकड़ियां री पूगी सफायी व्हे चुको हो। सूरज ऊणें मे भजूं घणी देर हो। तद तक सुलतान रा अँक हजार सून बी जादा फौजी या तो मार्या गया या पछें ईं दग सून घायल व्हे चुका हा के वे कियों काम रा नी रैया। सुलतान री फौज उन्घो मूण्डी कर भागण लागी। भाटी सिपाईं बी नै प्रेक कोस सारें ठेल दी।

राव मिन्दर सूनू निवळ'र नागो तलवार हाथ में लिया नांभी घोड़े समरायत
 माथे सवार रहे गढ़ सूनू बारें निवळ पाया । समरायत छोड़ी लगायतां पवन रें देग
 सूनू विजयराज नै सँ उद्यो । पलक मणें यों पैवा नी घोड़ी वानें जुहू रें मैदान में
 पैवा दिया । राज नै देग माटी मिपाइयां री ओग बघायो । ये योगलें ओग
 सूनू दुसमण माथे भूरां मेर दाईं दूट पड़्या । राव री सीनी वारी बादुरी रें गरम
 सूनू फूलायो । यवनां री लाम्बी लाम्बी दाढ़ियां बाळो भट सूनू कटियोही भूँडियां
 पैड़ी लागती जाणें संकड़ नारेळ घटो उठी बिसरियोड़ा पड़्या है । या भूँड-
 किया री ठोकरां में घली दुरगत रही । तीन सौ रें अष्टाजन भाटी मिपाई पायल
 बिह्या । या में सूनू दो सौ सौ घोड़ी साळ सूनू ई मानभूमि री रक्खा साहू प्राण
 त्याग दिया । प्राण त्यागता वका वा रें चेंरें घर शान्ति में उजय चमक घर
 सतोख ही । भाटिया री ओक सिरेमोह सिरदार नरसिंग बेजा पायल बिह्यो ।
 दो प्राण त्यागल साहू घडियां गिलती हो । यवनां रा दस मोटा मकनरां में सूनू
 चार रणसेठ रिया घर बाकी रा छः बुरो तरिया सूनू पायल बिह्योड़ा मिरतू री
 भागत चुकावण में तहफटावता हा । वां री मुध लेवण बाळी उठे नी तो कोई ही
 ती किली नै फुरसत ही । रण रा धूसो बाजवा । गढ़ में लुगायां मगळगीत रा भमा-
 कड़ा माह दिया । मगळगीतां रें समर्थ पूरब दिग री कुंख फाटी घर सूरज री
 देव रूप, घरती माथे उजास करण साहू प्रगटिया ।

भाज ऊमा, आपरी चून्दड़ी सायत यवनां रें लोई सूनू रगती ही । कं पछे
 धीरी रातह लोई री रातह सूनू होइ लेवती ही । परमाते री बिळिया कागलां री
 काब काब मरु रहेगी । वारी काब काब भाज नित सूनू जादा ही । जाणें वा री
 पूरी न्यात भाज घटें ई जीमण साहू ग्युतीत्रियोड़ी ही । गिहू बी सौ सौ कीमा सूनू
 घटें पूगया । जी घरती माथे चिड़ी री मुतर बी निजर नी आवती उठें भाज
 पाखिमा री इती भीड़ देख अचम्भो रहेती । जमी माथे पड़ी लोयां नै भैं पांखी
 चीद चीद सावण लागा । ओक ओक मोथ माथे दस-दस, बीस-बीस कागला,
 गिहू इत्याद दूकयोड़ा हा । लोया री भा दुरगत देख्या रोवणो आवती, घिस
 आवती । लुगायां देखसँ तो ऊबका खाय मरे ।

जुहू री मैदान छिन्न छिन्न रग बदलती रैती । सजीव देहो ओक छिन्न भी
 माटी री ढिगली रहे जाते । प्राणा रा पांखी हमार घटें हा घर पलक फुरकतां ई
 अदीठग्या । देही रें पीजरें सूनू प्राणा री पांखी जाणें कद उड जावें ईं री बेरी
 किली नै कोनी । भावी प्रबळ रहे घर आदयो घटें आवतां ईं बाकें । बीर वसन्त
 मनावण में मस्त हा । रण रा धूमा घर धमाल रें समर्थ प्राणा री बली देवण
 बाळा कोई सहीद, जूझार, परमवीर इत्याद हा तो कोई दुष्ट घर मिनस जात

रा हिरयाग । जाणै यां सारै कोई रोवणियां बी है कै नो । जाणै किणरी राण्ड जीवण भर स्वापी घालियोड़ी करमा नै कोमती रैवेलो । जाणै कुणसा भर कितरा टावर बाप केवण सारु जीवण भर तरसता ई रेमी । जाणै कितरी बैना आपरै वीरो रै वां हाथां नै तरसती रैवेली जका कै आयै वरस भाईदूत नै टीकौ कढावण सारु तरसता रैता । जुद्द री मद जाणै किण नै चढ़ै पण बी रा फोडा पोढ़ी दर पोढ़ी वे लोग भुगतै जका पेट री लाय बुझावण सारु आपरै जीवण नै भंडा दुस्ता रै हाथां सूँप दे । भा भेक भंडी लाय है जको भेक घर मे लगै पण पास पडोम रा अणगिणियां घरों न बाळर खाक कर दै ।

जोधा आपस मे जूझता हा । तलबारां री कट-कट यू लागती जाणै सिव रै ताण्डव निरत मे साळ लगा रैयी है । डबळतै लोई री गरमी सूँ सूरज री किण्णा गरमीजगी । सूरज रै रथ रा घोड़ा खुमरिया खाय तेज गत सूँ दौडण री हूडी करता पण सूरज सागड़ी, वारी रासां काठी साम्भ राकी हो । जुद्द मे गरमी लावण सारु वो सीप्री असमान रै बीचीबीच आय नै जाणै चमग्यो । ज्यूँ-ज्यूँ सूरज तपती गयो, बार, प्रतिकार, धावो, बचाव, मार-काट इत्याद मे गरमी बापरगी । भाला, बर्छियो, तीर, छाण्डा सँग गुस्समगुस्स व्हियोड़ा जाणै बापियां घा रैया है । सूरज री गरमी सूँ तपियोड़ी धोरा चगती रा रांगड़ धोरा जुद्द देखण री बावना सूँ बतूळिया बण रणक्षेत रै च्यारुं मेर, बिच्चै, भागै, सारै घूमर घालण लाग । पण लोई री गरमी रै सानै सौ सूरज री गरमी बी निबळी ई लागै । तिरसी भर बळबळती रेत री तिरस बुझावण सारु, लोई री जाणै कितरी पखाला धरती माय छडकाव कर चुकी हो । पण जुगां सूँ तिरसी रेत री तिरस, लोई सूँ वद बुझण वाळो हो । रणभोम री विकट भैरबी लगालग लोई रा खप्पर भर भर नै डगळ-डगळ पीवण लागी । फौजियां सूँ तो जादा गिणती में कागला, गिद्द इत्याद भेळा व्हेगा । केई तीरां, तलबारां री फेट मे भाय नै लोभो जीव सूँ हाथ धोया । लोई तो जमी चूस जाती भर मांस नै चूट-चूट खाता भै पखेरु । कुत्ता रा भाज भाग जाग । हाड़कां नै दांतां मे दबाय, वे निसंग भेकाने जाय बैठता भर कुटर-कुटर कर नै बिसन पोखता । धरती माय भठी-उठी बिखरयोड़ा मांस रा लोयड़ा केई ती काळा पड़या भर केई कांव ठई ज्यूँ चमकता । वीर राजपूत आपरै बळ भर धीजै री करतब दिखावण मे से की बिसराय, चळव्योड़ा हा । वां नै बेरो ई कोनी हो कै वा रै सरीर मायै कित्ता घाव व्हेगा है । जाणै पूठ मे कित्ता तीर घुम्योड़ा सरीर नै चाळणी कर नाह्यो है ? भेक कान कठैई खिरग्यो है, भेक टांग लटक्यो है कै भेक घांघ सूँ लोई री तूतारी छूट रैयो है । वां ऊपर तो भेक ई मूत सवार हो कै सुलतान रै सिपाइयां नै रगदोळणा ।

सूरज कितरी देर मूण्डी ढेर ऊभी रैतो । वो बी प्रकृती रै नियमां सूँ बन्धियोड़ी हो । दिन रा हाड़का दूखण लाग । याको-मांदो दिन गुपचुप करती चोर

व्हे ज्यू' खिसकण लागीं । भठी तिड्या री जीवन फूटण लागी । आधूण दिस मे मंन्दी राखी । भ्रममानी मूगज री मूण्डो पीळो पडण लागी । बीं री प्रकास धर तेज फोकी पडण्यो । बीं री संग गरमास निठण्यो । उबास्यां लावती-लावती वो मदीठण्यो धर उबास्यां रे समचे छोटियोडी बी री निसासा सून होवाड प्रणटी ।

सूरज री साख मे मुलतान री दखण दिस री दो हजार सिपाइयां री टुकडी री सफायो व्हे चुकी हो । उत्तर दिस मे घोरा घणां हा भर मुलतान री फौजां ऊपर चढाई माथे घायोडी ही जद के भाटी सिपाईं नीचे डाळ मे हा । ईं वास्तं भठे मुलतान री फौजां तफ मे रेंवो । भाटी राजपूतां रा घेक सो घोडा, चाळीस ऊँट धर पाच सो सिपाईं आपरा मूंगा प्राण गमाव, दुसमण नें घेक घागळ बी भागे नो बघण दियो । इण मोरचे माथे बीर बीसल जुभार व्हेगी । बीं री माथो, धड सून कटनें पोडें रे मूण्डे सांघी जा पडियो । बीं माथे लारें सून कोई वार कियो हो । पण ऊंपरस्या फोरणां जात री बी री पोळी, बी माथे नें बीसल रें हाथ मे झला दियो । बिना माथे रें ई बीसल री घड, बरोबर तलवार चलातो रेंवो धर कम सून कम बीस मळेंछां रा माथा काट दिया । भा देल मळेंछ सिपाइयां रा होस उडग्या । भेईं बीगे सून वां री कर्दई पाली नो पडियो । पण थड री गरमास खतम व्हेतां ईं घड जमीं माथे पडगी । ईं रें सार्ने ईं जुभार बीसल वीरगत पाई । बीं री थोडो बी उठे ईं आपरा प्राण त्याग दिया । बी री तरीर बी सैकडू धावां सून चुलयो हो ।

भो सारो जुद्द गढ सून चार-पाच कोस माथे चालतो रेंवो, ईं वास्तं गड मे घडून लाय कोनी पूगी, पण, उठे रा ठसवाळा तिलां मे सून भांकर सारो जुद्द देख्यो हो । वां री रगत उछाळा सेवण लागी । वां रा भुज फुडकण लागी । रण मे जुभण सारू वा री मन घडी-घडी तछळती, पण वे बिना इग्या उठे सून नी हिलिया । वे आपरें वेलियां री बादुरी रें बलाण सून ईं खुदरी जीव सोरो करण लागी । कोई गरब मे मातो ही तो कोई विजोग मे कुरळावती ।

सूरज दळतां ईं घेक बार जुद्द ओर पकडियो । सेव दिन री कसर निकालण सारू दोनूय कानी रा सिपाईं उतावळा हा । पण भाटी ठेठ ताईं मुलतान री फौज नें दबायोडी राकी धर घन्धारो व्हेतां-व्हेतां बीं नें घेक-वेढ कोस लारें खिसका दी । भचाणचक भाटी सेना री बू कियो बाज्यो । बिगल सुण मुलतान री फौज सस्तर नीचे नाख जमी माथे मोडा ऊभा मार आधूण कानी मुडगी धर कांन मे घांगळिया घाल 'वा निल तिल ताहो' करण लागी । मुलतान री फौज बी बिगल बजाव लढाई रोकण री घोसणा करो । नभाज पड'र मुलतान री फौज दो सो गज लारे खिसकयो धर उठे ईं पडाव कियो ।

भाटी नवाहां रें समचे जोर-जोर सून देवी तन्नी री भसतुती करण लागी धर जे-जेकार सून भागे मे गुंजायमान कर दियो ।

(२५)

अन्धारे री काळी काम्बळ ओढ़ रातराणी धरती नै निरासा सूं ढांप दो । कोई मुवी विधवा रै विजोग मे कजळीजियोड़ी रात री अन्धारी, सिसकारा भरती । आजरी रात, जाएँ कित्ता निरदोस जीवां रै हियां में धुवी उठावण घाळी ही । जाएँ कित्ता चूड़ा आज हूटण घाळी हा । जाएँ कित्ता टाबरा री निसकळंक हंसी नै आज काळरी नागण डसण घाळी ही ? सुण जाएँ । कुण सोचें ! भयूं सोचें ?

दुल रै दरियाय में डूबोई जीवण में कर्द कदास अजूबी बातां मायें बी हंसी मा जाया करे पण मा हंसी बिजळी दाईं अक पळकी क पाछी भदीठ जाया करे । घोर अन्धारी रात में बळती मसालां री चांनणी मन रै काळम नै उजावण मे सिमरण कोनी ही । जुगनू री चमक दाईं मसालां री चिलकी छिन भर री पूळक री सैनाण ही ।

जुद मे धीरगत पायोडा रजपूतां रा माया, हाडका, लोभां घर सैनाणियां भेळीकर,वाने अकै साथै भेळा किया, अक ई जागा वां री सास्तरा री विध घर राजसी मान सूं दाह-सस्कार कियो गयो । राव विजयराज खुद पग उवराणा चितावां तक गया घर फूल माळावां चितावां ऊपर बढाई । वे मून साधियोडा अकाने चुपचाप ऊभा हा । वां री चैरी बी बगल अक संत दाईं, गम्भीर ही । जाएँ वे मन मे मा ई सोच रैया हा कै जीवण निस्तार है । नैणां मे उजव गैराई घर पोड़ री वासी ही ।

धवनां रै डेरें में सुनियाड़ ही । मोत रै पैला री सुनियाड़ उठे छायोड़ी ही । स्यात हार री मातम मनावण री घो ई दातूर ही । पण सुनियाड़ रै घोडा देवता, आपसरी मे लड़ता-भगड़ता, सियाळ्या । हवा रै तेज ओला सूं ममालां बुझ जावती । फेरूं बाळीजती, फेरूं बुझती । पीरायत खेकारा कर करन खुद रै सावचेन व्हेरां री प्रमाण देवता । स्यात सुनियाड़ में खुदरो भी भागण सारू मोई उपाव रैया ।

पठी गढ मे विजयवांणी घर वीरतावां रा गाथा-गीत उगेरता महुद-लुगावां रा सुर, बाघरिध रै भोले साथै हिचकोला खावता । तारा अचम्बै सूं अलिखां फाड फाड सूरज रै कैयोड़ी कांणी रै साच री परख करण ठूक्या । पायल सिपाइया री सपचार सख व्हेगी । सिपाइया नै सापेड़ी दारू घर सवाद भरिया रकवान पुरसिया । दिन भर रा बाका-थूका सिपाई नौद री सरण मे बेगा ई पूगा । पण नौद मे बी केइयां रा हाथ भर पग चालता हा । जाएँ वे गुपनां में बी तलवाग थला रैया है । कोई-कोई तो नौद मे सूती बड़बड़ावती बी ही । दो-चार सिपाईं तो नौद मे ई बिछा-वणां सूं ऊठेर घोड़ां मायें सवार व्हेगा । जतन सूं या सोनां नै पाछा लाय पोढाया ।

रात चढाई कर चुकी ही अर सारी बस्ती न नींद मे गमावण सारु ग्रन्थारे
 रो जाळ फैलावती गई । रात रो दूजो पोर हो । पौरायत नींद सून मोरचो ले रेंपा
 हा । हवा सून रणखेत मे बिखःगोडो सोपडियां सून सीटिया बाजण लागती । पौरायतां
 रा रुंगटा खडा व्हे जाता । पण मो भगावण सारु वे जोर सून धाकल देता खंकारा
 करता अर पण पटकता । डरता-डरता बो वे फरज निभावण सारु मडी-वडी वीठ
 दोडावता । पण चितावां रो बचियोडो घिणगाःच्यां अजून बो हवा रो फूंकणो सून
 चेतन व्हे जातो । गढ रो पौळ बन्द व्हेगी ही ।

राय विजयरज, स्वामी श्री सून मिळ'र वा रे नैडा ई सूरग्या, पण वा नै नींद
 कया घावती ? रणखेत वा रे आंख्यां सांमी नाचतो । जांणै वां रा कितरा ई बीर
 सिरदार काम आ चुका हा । वा रा टाबर अर लुगाया जीवण भर वा नै तरसता
 रेंवला । वां नै घन, मान, सिरोपाव, मान सेंग दिया जा सकै, पण जको जीव दुनिया
 सून जा चुकी है वो रो कमी कुण पूर सकै ? राव, विचारा मे अळू भग्या । केळ' वां
 रे कानां सून पेलडी रात बाळो सिसकियां टकरीजी । पण आज वे विचळित नी
 विह्या । सिसकिया बधती गई । वां रे कानां मे रे रे नै उवाजा पळती रेंपो 'जुद् मे
 प्राप्त कियोडो जीत पिर कोनी । जुद् कोई समस्या रो निदान कोनी' पण राव,
 सान्त भाव सून विचारां रे मयण मे लाग्योडा रेंपा ।

सुलतान रे डेर मे सुनियाड जरूर ही पण अजून सुलतान अर वो रा मोटा
 मोटा अफसर, सेनापति इत्याद जागता हा । स्वात वे जरूरी हुकम रो उठोक में हा ।
 सुलतान हरेक तय्यूर सम्भाळण बाळो ही । सिपाईं भाव रो भूण्डी हार सून समिन्दा
 हा पण वा रो आतमविश्वास हास कोनी हारचो । वां नै पूरी तसल्ली ही कं जीत नै
 ई पाछा जावैला ।

सुलतान दैयूद गजनवी सारु आज बोत मोटी हार रो दिन ही । ई ढग सून
 वो रो पोबां फोडोजेला, ई रो वो नै कलपना बो नी हो । वो गम मे ह्मयोडो घणी
 रात गयां तक सोचती रेंपो । पण अेडो छोटी-मोटी हार सून वो पबरावण बाळो बो
 नी हो । वो जाणतो कं, सो सोनार रो व्हे तो घेक सोवार रो बो च्छिया करै, नित
 जीतण बाळो सुलतान कदैई हार बो सकै, वो वो रे वास्तं घेक नुंवो तुजबो हो । ई
 वास्तं वो सारी रणनीति मापे नुवं सिरें सून विचार करण मे अळू भग्यो । वो बोत ई
 संत्रीदो, हीमती, धीरजवान अर मुसकिलां सून टक्कर लेवण बाळो हो । वो ई वो रो
 रात-दिन रो काम हो । चोटां सायनं वो जिन्दादिली सून जोवतो रेंवण रो गुर वो नै
 याद हो । धीरज रो वो कनै घण्ट उजानी हो । वो सगतो रो सरूप अर जेसाई मे
 समदर समान हो । वीरता, वो रो सान हो । जुद् रो मंदान ई वो रो घर हो ।

सुलतान रे भावण रो तबर मुणता ई सेंग सिपाईं घेक जागा भेळा द्हेगा ।
 वो मोटा-मोटा अफसरां सून से'र छोटे सून छोटे सिपाईं रो तारीफ करो । चका जुद्

में मारघा गया था नें जन्नत बखसण सारू, भलाताला नें दुवाघा की । वो घोड़े मार्य बंठी हो । फीजी लिबास में वो बीत ई सूंसार निजर आवती । वो सँग सिपाइयां सूं सतामी ली । अरियोई गळ भर रुन्वियोडी उवाज मे वो बोलणी सारू कियो ।

"गजनी रा बादुर मोट्यारा । भाज रें जुद् मे थारी बादुरी घर होसला री माया सुण'र मनै यड़ी मोद मायो है । मनै ई बात री गरूर है के मां लोग हमेसा इस्लाम री मायो ऊँचो राकियो है घर ताउमर ऊँचो ई राकीया । था सँग घर थारी सुलतान, ई वास्त ई पंदा गिह्या हो के भापा मिळनै भापारी तागत सूं इस्लाम नें फैलावां । दुनिया रें हर मुलक मे इस्लाम भर हजरत महमु-ल्लेसलाम री, कुरान वाक री भर गजनी री नाम भापा नें ऊँचो करणी है, दुनिया मे फैलियोड़ी नुतपरस्ती नें दफणावणी है । म्हे भर भाप रीग मिळ'र मजहब री सबक सारी दुनिया नें पढावां ।

भला रा वम्दा ! थारें खून में वा सुर्खी है के दुनिया रा तमाम मुलक थां सूं धूजै । थारें बाजूवां मे वा तागत है के सेर बी थांसूं खोक लावे । थारें कदमो री ग्राहट सूं, घरती धूजै । थारी उवाज सूं असमान फाट जावे । थारी गुप्तै भरी निजरां सूं असमान रा चाँद-सितारा कापै । थारी बादुरी भर हीमत री म्हे दाद देवू । थारी इमदाद सूं ई म्हे गजनी री सुलतान बण्यो हूँ भर इस्लाम री दायरी फैला सकियो हूँ । भापा री मजहब भापा नें भा ई सिखावे के भापा जीवां ती इस्लाम सारू, मरां ती इस्लाम सारू । मनै खुदा री हुकूम गिह्यो है, म्हे थां लोगां सूं इमदाद सूं भर दुनिया सू नुतपरस्ती री ख़ातमी कहूँ ।

ई सूं भापा नें दो फायदा रहेला । भापां री इस्लाम फैलेला भर भापां नें दीलत बी मिळैला । भाप तो सुण राकी है के भाटियानगर मे बेसुमार दीलत है । काफिर लोग ई दीलत नें नुतपरस्ती भर अम्मासी में बरखाद कर रिया है । भापा री श्री फरज है के भापा अँडा काफिरा नें सबक देवा घर मही मारग बतायां । नाबीज भाटिया शरियत मानण सूं मुकरग्या है । भापां री तागत बेसक वां सूं जाटा, हुरादा बेसक वां सूं वाक है, भापां री ईमान भर मजहब हयोगत, मे वासूँ ऊँचो है, ई वास्त कामयाबी बी बेसक भापा नें ई मिलेली ।

अबे थां सांमै दो ई रास्ता है, जिन्दगी या मौत । इण मजहब री लड़ाई मे जका सहीद रहे जावेना थां नें खुदा जन्नत बखसैला । भर जका जीवता बचैला थां नें म्हे मालोमाल कर दूँला । अठे लूटियोडी दीलत मे सूं थां नें इनाम दियो जावेला जको थारी तनखा री आमदनी रें इलावा रहेला । जन्नत रा तमाम अँसे इसरत थांनै अठे ई नसीब रहे जासी । बेहतासा दीलत रा खजाना अठे

काफिरों कने भर्या पढया है। बां ने लूटो, भारो घर इस्लाम रो नाम ऊंचो उठावो।

घाज ने गत, वाराह घर लंगा बी घापां रो हमदाद सारु फौजां घर रसर ले'र अठे पौचण बाळा ई है। घापा ने काफिरां ने सबक सिखावणी है। खुदा रा बन्दा ! म्हे, था सू रुससत व्हियां पैना धेक दफ्त केरुं खुदा रहीम, परवरदिगार सूं मिघत करु कें बो थां सबा मे वो जोस भरें के इस्लाम घर गजनी रो आबरू सारु मर मिटी घर काफिरा ने नैम्तोनामूर करण मे कामयाबी हासल करी। काफिर बादियां धारें घेंस रै वास्त हाजर है। बां रो सबाव लूटो घर जग सारु नुबी तागत हासल करी। खुदा हाफिज।”

मुलतान री ई तकरीर सूं यवन सिपाइयां मे नुबी जोस पैदा ध्येयी। वे मुलतान री सारोफा करण लागे। यणकरा तो लुगायां सारु उतावळा हा। वे जोर जोर सूं हाका करण लागे—“हसीनावां नै वेपड़दा करी। घाज ती वारें हाया सूं ई जाम पीधाला। घेंस ई दुनिया मे जनत है। दोलत घर दोसीजा, वस दो ई चीजा, खुदाबन्द, अक सिपाई री किसमत मे दो है। बाकी सब बकवास है, मोत तो अक दिन आवेला ई, वो रो केंबो सोच ? या रब ! ई अक हूर, पुरनूर, हा!...हा!...हा!...हा!...मुलतान मलामत।

(२६)

घायल सिपाइयां सारु तबाइफां रै नाच-गाणां री प्रबन्ध अक मोटे पण्डाल में कियो गयो। मुलाम बलागोड़ी लुगायां घर मोख्यार छोरिया री हाट लागोड़ी हो। मुलतान या रै सरीर सूं बी दोलत कमावणी जाएतो। घस्सी छोरियां, माटी राज री सीव मे घुसियां पछे मुलतान रै सिपाइयां रै जुलमी हायां मे पड़गी।

पैला, तबाइफां रा नाच-गाणा सारु ध्रुया। दारू रै नसै मे मस्त ब्रिहोडा ईरानी, हसीं घर यवन सिपाई मूण्डे सूं भूण्डी-भूण्डी गाळियां निकाळता, हसी-टट्टा करता। वे तबाइफां घर मुलाम छोरियां कानी उजव इसारा करता। नाच-गाणा बन्द ध्रुया घर मुलाम छोरियां अक रात सारु लोलाभी मार्च चढ़गी।

‘मा सोळा बरसां रो हूर, देखण मे नूर, अरिये सरीर री, कुरान जेड़ी शक, सिरफ पाँच दिरम। अक रात रा सिरफ पाँच दिरम। बड़ सो पावे।’

अक मोटो-ताजी ईरानी सिपाई अक छोरो ने सोमी सड़ी कर, बोली लगावण लागे। ई छोरी री घाघरी जागा-जागा सूं सोर-नौर ब्रिहोडो हो। ऊपरला अगां मार्च अक जीणी कपड़ी नाखियोडो। मा सरम रै धारें भांसियां नीची करली हो।

‘सात दिरम’ अके सात फुट लाम्बो हव्सी सिपाई, मूँछाँ रँ दट देवतां थकाँ बोल्यो ।

घाठ दिरम’ अके बीजो ईरानी सिपाई भण्टळ मे सूं बटवो निकालनां थकाँ बोल्यो । छोरी सरम सूं जमी मे गडती जावती । वा दोन्यूं हाथ छाती रँ आडा कर लिया । बीं रँ नैणां सूं टप-टप भाँसू टपकण लागी ।

‘दस दिरम’ अके जल्साद जेड़ी सूरत री काळी भेंसी भिनख बोल्यो भर दस दिरम बी बोली लगावणियै रँ साँमा फँक’र बी छोरी री हाथ पकड़ लियो । छोरी बल्ली रँ बकरँ दाँई धम-धम धूजण लागी । तम्बू मे जोर री ठहाकी लागी । वो भेंसी बी छोरी नै धीस’र तम्बू सूं बारँ सेयग्यो भर थोड़ी भोली सेय’र भूखे सेर दाँई बीं माथे लपकियो । छोरी री कचूमर निकळ्यो भर वा अँड़ी वेहोस व्ही कँ बी नै पाछो होस ई नी भायो । सूं कर अके-अके छोरी री अँक रात री मोल दस सूं पन्दरा दिरम रँ बिच्चै तेँ व्हियो ।

‘हाँ, भाई जान ! आ है सोळा बरसां री अनार । खुदा रँ हाथां घडियोडी, फूलां री मैक सूं जीं री चामड़ी अंगेजी है, जी री अंग-अंग उग्माव सूं भरियोडी है । भोगणियै नै नुं’बी सवाव देवै । दारू सूं जादा नसी देवै । हिरणी सी भाँस्यां वाळी, कचनार री बल्ली, भरदानगी नै ललकारती, हुस्न, हूरां नै सरमावती रूप, भर.....’

अके सिपाई उतावळी में बोल्यो ‘पण दांम ती बीली’

‘दांम, अके रात रा सिरफ पन्दरा दिरम । ठटै सो पावै ।’

‘बीस दिरम’ होटां नै चाटती हुयो अके बूढी सी सिपाई बोल्यो ।

‘हाँ, सवाव लीटावो, खान साब’ भीड़ में सूं अके मोट्यार मुळकती सी बोल्यो ।

बूढी मसखरी री उधेली देवती थकी बोल्यो ‘पचीस दिरम’

अके मोट्यार सीनी ठोक खड़ी व्हियो ‘साठ दिरम, खूब देवै परवरदिगार’

आ छोरी अकेदम गोरे रंग भर ओपतँ डील री ही । सरीर री बणघट देख आछा आछां रा मन पिघळ जावै । ईं रँ अके फाटोटी लंगो पैरण नै हो । ऊपरली अंग साव उपाड़ी । ईं अंग नै उपाड़ी राखण सारू बी रा हाथ लारली कानी बाधि-योड़ा हा । आ काठ री पूतळी दाँई ऊभी ही । ईं रँ चेरेँ माथे कियी तरे री रोम, विसाद कै उमाव नी हो । निरपेख भाव सूं भावी रँ हाथां बिकण सारू त्यार ऊभी ही ।

भीड़ में सूं अके सिपाई आगेँ आयो भर बोल्यो ‘खान साब ! माल री परख करने बोली लगावांला । हुकम व्हे ती हाथ लगाव देखलूं कै आ जीवती जागती

तसवीर हे कै काठ री पूतळी ? क्यू कै ईं घरती माथें अंडो रूपाळी मजून कोई निजर नी घाई ।’

‘हां, पण हाथ लगावण री कीमत है पांच दिरम ।’

‘मजूर है’ आ कैर वो सिपाई भागें बघ्यो भर पांच दिरम, बोली लगावण बाळें रें हाथां मे थमाय दीन्हा । वो ओकर तौ वो छोरी रें च्याहं मेर चक्कर लगायो भर पछे बी रें सानो घाय ऊमो व्हंगो । दोन्यू हाथा नें ऊंचा उठाय, वो बी रें छातिपां माथें घपसो भरियो । छोरी ओक सात री मारी घर वो जमी माथें चित्ता पडायो । सारा लोग हिङ्-हिङ् हँसवा लागे । वो पाछो ऊठ’र ज्यू ईं बी रें नँही भावण लागो भर बोली बोतलियो बिच्चें पडायो । बोल्पो ‘पांच दिरम खलास’ ‘पांच फेरु’ आ कैर वो पांच दिरम बी रें हयाळी भागें मेल दिया ।

हमकें भी लारें सूं भायो घर दोन्यू हाथा सूं सारें जाया घावी किमी भर बी रें गाल में घापरा तीखा दांत गाड दिया । हमें बोलीदार नजीक भाय बी नें भळगी करण लागी पण वो टस सूं मस नी व्हियो । छोरी रें गाल सूं लोई छिक्कण लागयो पण वा मूण्डें सूं चू कारी तक नी किमी । बोलीदार बी सिपाई सूं बाधियां घाययो । भीड़ मे घनकम-मुक्का व्हेण लागे भर बड़ी मुसकल सूं बी सिपाई नें उठें सूं भळगी किमी ।

सरुवोत री बोली लगावणियो वूढी सिपाई भगडो बढतो देल बोल्पो ‘सो दिरम । बोली खतम करो सिरदार ।’

‘सो दिरम ओक, सो दिरम दो, सो दिरम ती’.....’

बी रें इतरो कँणो व्हियो भर वो मोठ्यार कस’र ओक मुक्को बोलीदार रें जबाड़े ऊपर भरियो । वो रा चार दात ओकें सारें बारें उछल पडया भर मूण्डें बारें सोई टुटण लागी । दो सिपाई बी मोठ्यार नें पकड’र लेयग्या । वूढी सिपाई बी छोरी रा दाम चुकाय, ठगू सूं बारें ले भायो ।

थोड़ी दूर अन्धारे मे वो बी छोरी री हाथ पकड़ियो भागें बधतो रेंगे । ओक धोरें री बोली लेण, वो बी छोरी नें नीचें बैठण री हुकम दियो । छोरी धोरां माथें सोधी चित्ता मूयगी भर पेली बार बोली ‘ले भाव, खा लें’ ईं रें मागे ईं वा घाघरी काड’र फेंक दियो ।

वूढो सिपाई भागें ऊपर सूं वूल्हो खोल बी रें सरीर माथें मोढ़ायो घर मठी उठी देख’र होळें सूं बोल्पो ‘चम्पाडो होस मे है कै नी ?’

‘कुण चम्पाडो ?’

‘तू’

‘म्है चम्पाडो नी । म्है ती दिरम री राण्ड लै भोग मनै, लै भाव, साव मनै’ घा केर सा, बी बूढे री हाथ पकड़ भापरै कानो खेचियो । बूढो भटके सँ हाथ छुडा’र घेक बघड़ बी रै गाल माथै रमीद कऽयो । बघड़ सागतो ई जाँलै बी रै बिरल्यो चमकयो । बा ऊठ’र बैठी - बोली ‘काई पावई तू’ म्हासू ? मार नै मात सावली चावै ? तो लै, मार नोख ।’

बूढो बी रै माथै ऊपर हाथ केर नै बोल्थो ‘घेटी, म्है गज हूँ, गज ।’

‘तू’ कुण भायो म्हागे बाप बण’र ? खरीदार ! खरीदयोई माल नै भोगण री सरदा नी तो पछै बसूँ गमाया तो दिरम ?’

‘चम्पाडो ! बसूँ, भेजो बसूँ ठिकाँल नी भायो त्पारळी ? पूनम नै तो मोळरै ई ?’

‘पूनम ? कुण पूनम ? म्है ती निरफ तैने मोळसू, लै साव मनै, साव । भाव भट भाव । मोमजै पणो खटाव कोनी ।’

हमकें बूढो तणा’र बिसरकी भापट घरी ।

‘होस मे भावै के नी ?’

‘मार लै तांमजी मा नै, मार लै, मूखा, मोलिया ।’

‘चम्पाडो ! होस मे भाव ।’ हमकें बूढो घोड़ी कड़क’र बोल्थो ।

‘होस मे ई तो हूँ’

‘नी घौई तू’ होस मे’

‘तो तू’ ले भाव मनै होस मे, बहो भायो बावड़ी बंद ।’

‘चम्पाडो ! वो पूनम तांमजै कारलै मरग्यो ।’

‘ठीक ब्हियो, मरग्यो तो पाप कट्यो’

‘मर भागी’ तंग भाव’र बूढो उठै सँ ब्हीर ब्हेण लागो ।

‘काई कीयो था ? पूनम.....’

‘हवै, पूनम मरग्यो’

‘नी, नी, बूड़ मत बोली, वो नी मर सकेई । वो नै कोई भी मार सके ।’

‘मरगो, मरगो, मरगो । कैवई के, पूनम मरग्यो’ वो जोर देव’र बोल्थो ।

हमकें बा छोगी बूढे रा पग पकड़ लिया, ‘नी, झूठ मत बोली’

‘झूठ नी, साव साव घौई । वो कवळ-पूजा करो, धारे खातर । घर तू’.....’

‘म्है काई कियो ?’

‘कियो काई ? हमै करई पई’

‘तो म्है काई करू ?’

‘मेघ सँ भाव जा’

‘केत मागू?’

‘इया सू बी सामले घोरै नै पार कर, घाघै कोम, पच्छम में जाइजै । भोष भेक घोरो भरूँ आवैला । बी रै सारै-सारै दो कोम दिखणुद कांती जाइजै । भोष भेक दांणी घौई । भोष तेनै भेक लुगाई घर भेक साण्ड मिळ जासी । बी रै कनै जाय पृद्यजे ‘घाघी रेती, घाघी चून’ वा लुगाई जे पाछी पङ्खतर देवै ‘भौव, भाइगी, डेरा सून’ तो बी रै सगै साण्ड ऊपर बँठ, वा से जावै भोष जाइजे परी ।’

‘पण पूतम?’

‘घरे पूतम री धा, पैसा खुद नै साम्म’

‘पण पूतम बिनो मोमजै जोणै री सार?’

‘घरे हां, बी सूँ बी मिळा देसू । जोवतो बँठीई तामजो बाप ।’

‘साच?’

‘हाँ हवै, हमै माय भोष सूँ’

‘दो बूढ़ी मापरै ऊपरला गाबा उतार, चप्पा नै पैराया घर नकली दाढ़ी रा केसा नै लाँच मल्ला किया । चप्पा मुल्ल बी । बूढ़ी, चप्पा रा डोया केमा नै कतर नै थोडा भोछा कर दिया घर बाँ री नकली दाढ़ी-मूँछी बणाय, चप्पा री निमसकव बणा दियो । इनरै में ई भेक बीजो सिपाई भेक छोरी नै लिपां उठै पूगो । मा छोरी वो पणो फूटरी घर जोध-जवान हो । ईं रै सरोर मावै कोई बीवरी ई नो हो । पग, दिन भर ऊभी रैवणै रै कारण सूजम्मा हा । माथै रै खीया केसा सूँ मा मापरी रसकृपिया नै डाँवी घर दोखूँ हाया नै सायळा रै भाडा देय लाज छिपावण री पणूती कोसिम की ही । ईं छोरी घर भेक सिपाई नै पोडे भागै सूँ घाता देल बूढ़ी पुछियो ‘कुण’?

‘गज रा थोड़ा’ सिपाई पङ्खतर दे, वठै ई रहग्यो ।

‘दीरा कै सोरा?’ बूढ़ी पाछी सवाल कियो ।

‘देवी रै दारू, भरद रै लुगाई’

‘घाव म्हारा भाई’

वो सिपाई बी छोरी नै लाय बूढ़े नै सूँपटी । खुदरै ऊपरला गाबा बी नै पैराया ।

बूढ़ी, बी नै नाँव, जात, ठिकाणा इत्याद पुछिया । पैसा तो वा सकै सूँ की बोली कोनी । पण जद बूढ़ी बी नै पूरी तसल्ली कगदो कै वो बी नै मुगल कराय, वो रै घरे पुगाम देसी तद वा जोर-जोर सूँ रोवण ढूकनी । बूढ़ी बी रै मूण्डे घाढो हाथ देय, चुप करी घर मावै हाथ केर, बोल्हो ‘बेटी ! हूँ मज हूँ, असल भाटी । तामजो मामा हौ, दुसमण कोनी ।’

हमें वा छोरो भांगू पूँछ'र दुसका दुसक ठिह्योड़ी बोली 'हू घटिपाळो रें
चुतरसिंग रो होकरो घोंई ।'

'चुतरसिंग बो रो ?'

'बरजांग रो'

'घरे जद ती सूं धाट घाळां री भांगुजो घोंई'

'हवे'

'दो की नांव घोंई स्यागळ' मामे रो ?'

'सावतो'

'हां, हां, मोठल लियो । हमें याद आयो, सावतो । हां, वो भेक'र मुलतान
री सजानी छूटियो हंतो । बीत बादर घोंई, छोरी तामबो मामो ।'

छोरी बाकयोड़ी हो. बोली 'म्है बंठ जावू ?'

'हां, हां, भरे म्है तो तर्न बंठवा रो बो कंवणी भूलग्यो बेटी' बूढ़े रो बाखियां
गळगळो श्हेगी ।

'हमें फिकर मत कर बेटी, भेक सूं दो श्हेगी । घा कं'र वो चम्पा कानो
मूण्डी कर मुळकियो । चम्पा उठै सूं ऊठ'र बी छोरी सूं चिपती घाय बंठगी । छोरी
डर नै थोड़ी लारें रिगसी । चम्पा की रो हाव पकड'र छांची घर भापरें खोळ' मे
बीं रो माथो पटक दियो । छोरी पकश'र ऊठण लागी । हमें चम्पा हांसी । बोली
'पारती, हमें छुडावणी मुमकल घोंई ।'

'कुण ? च' छोरी अचम्बे मे पटियोड़ी घूर-घूर देखण लागी ।

'हं'

'चम्पा'

'सी...बुप...'

बूड़ी भेकानी मूण्डी कर मुळक दियो । बो दूजोड़ी सिपाई, केसरी हो ।

सूं कर, ई भेक रात में वे दोनूय घर वारा बेली, सोळा छोरियां नै भेक रात
रा दाम चुका'र मुलतान रें सेमै सूं छुडाय लाया । यां मे सूं पांच-सात री इज्जत
छूटीज चुकी हो । की रें ई, सायळां में सूं सोई टपकती, तो की रें ई गालां सूं, कीं
रें ई पूरें सरीर माथे दांतां सूं कियोड़ा घाव हा तो की रें ई टट्टो रें मारग सूं, लोई
बैवतो । भेक छोरी तो इत्ती बुरो तरिया चिगदोजियोड़ी हो कं बखाण नो कियो जा
सकें । गज री टोळी रा पांच भादमी धणी चुतराई सूं यां छोरियां नै दुसमणां रें
चुंगळ सूं छुड़ाई । ई सारु वां नै साम, दाम, दण्ड, भेद सेग भपणावणा पड्या ।
यां सेग छोरियां नै सिपाइयां री पोसाका पेरा'र भेक ऊँट माथे दो-दो रें हिसाब सूं

बेटाय मुननीन रें डेरें मू दारें निवाटण री उवाव बी मज, पावरी पुनराई ।
 हुनिदागी मू सोप निवो । वें सोप टगण दिमा रें सबमूं छेनं तम्बू मे साप सगात्री
 साप सगाप, मयमू तेज दीटरा दाळी सापट मायें मवार ह्ये, बेमरी लठें मूं दायें
 भागी । मागी, मागी, पकटी, पकटी करना धरा ह्योमियां घर दां पांच पादमियां
 मायें मज दा रें पारें भागी । दा रें मायें पांच-सान लॅट मुननीन रें निवाटण री बी
 लाटा धा सागो बी मज बीटो बियो । मुननीन री फोडा रें पहाव मूं रें गेंग घाला
 पज्जा धा पूजा हा पण बेमरी री सापट में मी पकट सविया । घेत धोरें री घाट
 जेन मज रें हूकम मू बी रा बेंती घर ह्योमियां, मुननीन रें निवाटण री पांच-सान
 जेन घर दा रें सवाग में घेत निवा । पज्जा मेर मू निरघोडा मुननीन री निवाट
 हाप जेन कर सानर मीम दिया । मज दा रा कपडा बी उगारवा मिया घर साव
 मी जावा कर हूकम दिया वें वें प्राण माजा रावगी पावें ती पुरपाव लठें मू
 मुननीन रें डेरें म मूग जावें । दा सोपां रा लॅट बी मज सोप मिया । सात्री मरता,
 द लठें मू पद भाग । ह्योमियां दोर-दोर मूं हागण मागी । मुननीन री पहाव ।
 मू पाव जाग पज्जा मी । रात री दिवी घटियां, दोरा मीम गेवनी ह्ये । सगमान रा
 माग, दा री कुवटा निगम, धेंद-दूभें मागी कुटियां बाइगु माग ।

बाणा रा बादल तावडे न बिचवै ई रोक लियो । जभी मे जागा जागा खाडा रे गुमणू सून खाडा पडग्या हा । जाणू कोई माणस न मगोड न आधी धरती मे गाड दियो व्हे, विणो मांत अ खाडा दुसमण रे आधे तरीर न आपर सगे लेव जमी मे ऊण्डा गड जाता । केई कटियोडो मूडकियां धरती माथे जत्राटी खावती तो केई कटयोडा, हाथ फुडकता निजर आवता । असफडा रा ढेर लागग्या हा । केई केई घोडे रे मूण्डे मे चार चार पांच पांच ललवाग फसियोडो ही तो केई रे तरीरा मे पांच-सात भाला शेक सगे ई इण पार मून चण पार निकल्योडा हा । आज रो जुद्ध खास करन घोड़ा रे कमाल रो हो । घोडा केई दुसमणां रो ललवारा आपर जबाडा मे झाल'र खोसी हो । ई मू चारा मूण्डा चोरीजग्या पण घोडा लातां मारन बो दुसमणां न रगदोळता रया ।

आज रे जुद्ध मे पांच हजार भाटी सिरदार वीरगत पाई । यां रे इलावा शेक हजार घोडा बी रणखेत रया । पांच सौ ऊंट भर चार हाथी मार्या गया । इत्ती भारी हाण व्हेनां थका बी भाटिया रे जोम भर हीमत मे कोई कुमी नो भाई । शेक शेक आंगळ जभी सारु सो सौ प्राण गया पण पावण्डो पाखी नो पड़ियो । बादुर भाटियां रा घड़, माया काटिया पाखे बी लड़ता रया । बारी बादुरी देख यवन सिपाई दांता हेई आंगळियां दबावणा मरु व्हेणा । केई ती या न देख काला व्हेणा । केई सस्तर नाख यां सामे भुकग्या भर केई यां न जिन्न समझ मैदान छोड भागा । सुनतान खुद अडे बादुरी पैली बार देखी ।

भाटी रणडाका सारे दिन भूखा, तिरसा जलमभोम ताई जूझता रया । भारी एक ई घेय हो भर शेक ई मत्ती, वीर भोम रो परस्पर रो वे पुरी निभाव कियो । प्राणां रो घाउगी देयने बी अ लोग जलमभोम रो सस्कृति भर धरम न कायम राख्यो । झेडी तो कोई भाटी सिरदार हो ई नी जकी के बिना दुसमण न चोट पांचाया ई मर खूनी व्हे । सैग मुळकता मना सून जलमभोम माथे प्राण निछरावळ किया हा ।

सिम्ह्या दळण सून आधी पीर पैसा सुलतान रो फौजा तपोट नगर रो सीव मे घुमगी । नगर तो सून बी खालो ई पड्यो हो पण छिडिया विछिडिया हांडा, जिनावर नगर मे खासी चक्कर लगावता हा । वे पूछडो ऊंचो कर घटी लठी फटाका लगावण लाग । बाराह, लंगा भर यवन तोनू रो फौजां अंजू गड सून घाघो कोस भळगी हो । बारा बी सात हजार सिपाई मार्या जा चुका हा । बाराहा घर लगां रो फौजां घा जावण सून सुनतान खुदरी फौजां बोत कम कटाई । हाई हजार सून बी जादा सिपाई घायल भर भघमरिया व्हे चुका हा । सुलतान रा आधे सून ज्यादा घोडा, ऊंट भर बीजा जिनावर बळद, खच्चर गधा इत्याद मारया जा

चुका हा। पांणी री टकिया, पसाला इत्याद संग खाली व्हे चुकी हो। सिरफ हजार सिपाइयां मारु ग्रेक टक पीवण जोग भूगली पाणी बचियी हो। स्यात इणी कारण संग रगत सूं तिरस बुझावण सारु तडफा तोडता रेंया। मंमूद न हाल मरोमी नी हो। आज रें जुद मे वीरी पलडी भारी रेंवतां थका बी उणए मन मे रें रें न कोई चोर जोलतो कै भाटिया न हरावणी इत्ती सोरी कोनी जित्तो कै वो काल ताई समझतो हो।

खालो नगर री सीवा में घुसण मे ई वीरी आधी बटक री सफायी व्हेगी हो। हमें पांणी री कुमी बी माखर दाई सांमी आय ऊपी व्हेगी। पांणी बिना तो खाली पकावणी बी सोरी कोनी हो। बी री फौज रें सांम काची मास खावण रें इलावा कोई चारो कोनी रेंयो। अडे छेडे पांच, दस कोस तक पाणी री टोटी ई हो। तावडी, सारें दिन आकरी तपियी हो ई वास्तं गरमी भर उमस बघगी हो। मरीर जाणें तबें माथें तळोजण लागो। होट, खोरा दाई चंढता भर कंठ गरमी रें कारण फूलग्या। गळं मे पूक गिटणी बी दोरी व्हेगी। अठें आयनै वे घुरी तरें सूं फसग्या। जयां मुसकिला भर दुखावा न पार कर मुसतान अठें तक पूग्यो हो वे सारी पाणी री कुमी सारें हळकी लागण लागी अठें ठंरणी कै पाछो मुडणी दोग्युं अकें सार हा। पण मुसतान पुरो जिही हो। वझ री जागा यवन सिपाई ग्रेक ग्रेक कुरली करनै ई संतोख कर लियो। भूख भर तिरस सारी मरजादावां, पाप-पुत्र री विचार भर नखरा न भाय मेल दिया। गड सूं बारें वैवतें मळमून रें सुगलें नाळें री पांणी चमोडण सूं बी तिरसां मरता सिपाई कोनी घूषया। ऊंटा रा पेट चोर वां मे सूं पाणी निशालनै बी केई जणा तिरस बुझाई। यां सारी घबखाया रें व्हेता थकां मुसतान, आपरे सिपाइयां री होसलो बधावतो रेंयो। बी ने पुरो मरोमी हो कै वो दूजें दिन गड मे फर्त कर लेंला। सूं, बीनै आपरें अन्दाज सूं केई गुणा जादा मुकाबलो करणी पड्यो घर नुकसाण बी उठावणी पडियो। बी रें केई सिपाइयां रा हाथ तसवार चलावतां थकड्या हा। घायला री अंझ गिणती बी नी व्हे सकी। नी वारें उपचार री ई पुरो साधन व्हे सकियो। ये पांणी पाणी करता हा, हार रा सारा सगण सामा निजर धावता थकां बी, मुसतान, आखरी दाव अजमायां पंता पाछो मुडण ने स्यार नी हो। तपोट री घोरा धरती सोई वो'र छक व्हिषोटी हो। पण ई धरती माथें जीतरा पन रोण सारु सगण बाळा यवन, वागह भर लण तिरस सूं हारग्या। धरती माथें बिसर्योटी सोई बी नीचें सूं आंच देवण लागी। सेंडा मोर्चा माणखण सारु मुसतान, सिपहसालार, संग भर बाराही रा सेनापतियां घर मुदरा मोटा अफसरां नें ससाह री गरज सूं मुदरे तम्बू में बुसाया। वो दूजें दिन हर हात मे गड माथें कब्जो करणी धावतो। ई सारु वो मुद हाथ

में सत्तर दठाय अमवांणी करण सारू तयार हो । प्रधान सेनापति जुद्ध रें मैदान रो नक्ती तयार कर सुलतान सार्मि पेस कियो । सबसूं मोटो अब्बाई गढ नै तोडण रो ही । ई रें एक ई पोळ हो, बाकी सैग दिसावां में खाई हो । सुलतान, लवार खातो अफसगी नै हुकम दियो कं वे खाई पार करण सारू तजबीज करे । गढ रा कियोड बी दस आंगळ जाडे लोवे सूं तयार कियोडा हा । यां किवाडां नै खोलण सारू दस हाथी मुकर हा । ईसं जाडे लोवे नै काटणी तलवारां, भासा भर घाणां रें बम रो रोग कोनी हो । किवाड दो हथणी ऊंचा घट डेढ़ हाथी चवड़ा हा । पर-कोटी बी अकदम सीधी हो । ईं वास्तं बी रें सई ऊंचाई रो अन्दाजो लगावणी असखेल रो काम नी हो । परकोट रो भीता सपाट हो । खाई डाक'र यां भीता कने पौक्या पछी बी भीता माथे चढणों । सोरो कोनी हो । ऊभी भीता चढण भर डाकण सारू खास रूप सूं तयार कियोडा सिपाई हाथ भटक दिया । वाने ईं बात रो कळपना बी नी ही कं अंढी सीधी भर ऊंचो भीता बी चुणो जा सकै ।

रात दो पोर दळ चुकी ही । सुलतान खुद सेनापतिगों नै साथे लेय मोकै रो मुमायनी कियो । अकर तो बी रो बी अकल चकरीजगी । बी, लोवारां, सिलावटां भर खातिगों नै हुकम दियो कं किरणी तरें सूं भीता माथे चढण रो सपाव करे । सिलावटां रो हुकम दियो कं वे मोटा मोटा सिरिया ठोकण सारू निसरणी माथे चढ'र भीता फोडें भर वां मे मजबूत सिरिया रोपे । यां सिरिया रें आसरे रस्ता भर निसरण्यां लटका'र सिपाई गढ रो भीता ऊपर चढ़े । पण भी काम इत्ती मोटो भर मुसबिल हो कं हजार कारीगर, भर मजूर मिली बी रातोरात नी कर सकता । सबसूं पैली मुसोबत तो खाई रो पार करण रो ही । ईं वास्तं सबसूं पैला वे लोग ईं रो अटकल काढण मे जुतग्या । दिनुमे तक बीस साम्बी साम्बी निसरण्यां तयार रहेगी । अ निसरण्यां खाई रो चवड़ाई सूं बी दस हाथ साम्बी हो । यां रो वजन इत्ती मारी रहेगी कं पचास आदमियां बिना नी ऊंचे । पैला तो वे सोची कं या नै खाई मे उतार दे भर बी पर सूं सिपाई खाई मे उतर जावे भर खाई मे सूं ई निसरण्यां गढ रो भीता रें आसरे ऊभी कर, सिरिया ठोकण रो काम सारू कियो जावे । पण अक निसरणी आधी ऊपर, धुड में दबगी । दोरा सोरा वे सेवट खाई पार करण रो जुगत जमाली । सुलतान कने समंचार पुगतां ईं वो घणी राजी ब्हियो । आज पैलड़ी बार, बी रा सिपाई, बी रें होटां ऊपर मुळकण देखी ।

(२८)

आज माटियों की दिन बीत दोरी हो । माग फूटता ई रण रा बाजा बाज सव्या । घमासाण जुद्ध ब्हियो । आज रै जुद्ध री बख्ताण स्यात सजय बी करण मे चूक जातो । वसू के आत्र मोरचा जागा जागा खुलियोड़ा हा । पूरै नगर री गळी गळी मे, सेनां माथे, घरा रै सूना डगळ्या माथे बी, मोरचा मडग्या । गढ री मांयली पठियाळी मे तेनात भाटी सिरदार अर भटियाणिया सुलतान री राय री सारी कारवाई नै या तीणा मे सूं आंक'र देखता रेंया । ईं वास्तु के शत रा ईं मट्टियां चेतावी अर या मे कद सूं तेल अर पाणी उबळ-उबळ'र बारें दुळण लाग्यो । तीरन्दाज लोग बाणा रा नुका तीक्षा कर, वां नै जैर रै घोळ मे भिजोय नै मुखावणा सरु कर दिया हा ।

गढ रै बारें, भाटी फीज सिरफ दुसमण नै उळझामोड़ी राकण सारु ईं तेनात ही । बाकी आज री दिन तो गढ रै माय तेनात भाटी सिरदारां अर भटियाणियां रै किरतव देसावण री ही ।

बारें, भाटी सिरदार दुसमण नै सूब छका-छका'र फोडिया । कदैईं वारां घोड़ा परां री छनां माथे कूद'र पीच जायता तो कदैईं उठै सूं ईं छछाय लगा'र दुसमण रै थोड़ें माथे कूद पडता । दुसमण नै जागा-जागा राखे मे ले'र मारया । पैदल सिपाईं तो घठै बीं काम रा ईं नी हा वसू के वे तो सपाटें सूं दोड़ता घोड़ा रै पगां हेटे ईं किचरोज नै चटणी बण जाता ।

दुसमण, साईं पार कर, गढ री भीती में निरिया डोरण री थ्यारी में ही । निसरणिवां रै सारें कोई पांच सो सिपाईं साईं नै पार कर परकोट री मोटी लेय सिरिया डोरण मे मदद करण लागे । नगर मे सूं पैदल सिपाईं माग-माग'र घटै पाँचणा सरु ब्हिया । सूं कर तकरीबन हजार, दो हजार सिपाईं परकोट रै मोटै माय ऊमा । श्री मोकी ठीक देस गढ रै मांय तेनात तुगाया पनाळां मे सूं उबळनी-उबळती तेल अर पाणी बूझणी सरु ब्हियो । तहातड पनाळां मोचें पड़णी सरु ब्ह्यो । अर परकोट रै सारें ऊमा सिपाईं या घल्ला, हे घल्ला, करता-कता धड़ाघट साईं मे फूटणा सरु ब्हिया । केईं पुरी नरिया बळग्या । कोई री मायो घर मूण्डो बळग्यो तो कोई रा हाथ-पग । सेण सुधबुध सोय भागणा सरु ब्हिया । पण भाग नै जायता कठे ? भागे तो साईं ही सो घबाघब साईं में बूदणा सरु ब्हिया । अर उठै पड़िया पड़िया गिगकता रेंया । वेईं निसरणी सूं साईं पार कण री मोचण लागे । दनरें मे ईं ऊगर सूं भाटी रा मोझा पड़णा सरु ब्हिया अर निबरणी समेन वों माथे जमोड़ा सिपाईं साईं मे घशाम करता पड़या । वां रा माया फाटया अर मोईं सूं

सारी देही सिनान कर चुकी ही । खाई रें दूबो कानो रा, इमदाद सारु टुकड़ियां
तेहरा नें दोड़ल, पण धों रें पाछल फोरतां ई यां माथें बाणों घर खाण्डों री बिरता
रुह रहेगी । इण नांत धायें सूं जादा ती धायल रहे, धुड़ चाटण सागा । किली री
मूंडकी खाण्डें रें सायें जमोन में गडगो ती किली री हाथ हवा में उछळग्यो । की
निपाई मरता-गुड़ता, सुकता-छिपता जाय डेरें में खबर करी । उठें सूं इमदाद सारु
दूबी टुकड़ी दोड़ती भाई पण धों रा बी समतर काम नो आया । ये जूयूं ई सांभा
प्राता, जैरीली नोक बाळा तीर बां रें सोने में आय सुभता । सुलतान री फौज में
तैलकी मचग्यो । सुलतान रा सारा सुपना चुर रहेगा । वो भेरु तरियां मूं चितबगती
रहेगी । वो धोई माथें सदांर रहे उण दिसा में जावण सागी । धों रा भफतर धो नें
समझायो, ती बी सुलतान नी भानियो । पण धोड़ो आगें बधतां ई सडासठ घाठ-दल
बाण बी रें मरीर सूं भेरु धांगल आगें सूं निचळण सागा । भेरु खाण्डो धों री पाग
उडा लेदग्यो । सुलतान उलटा पगां पाछो डेरें माथें पूगो । सुलतान बाकी बचियोड़ी
फौज री टुकड़ियां नें नगर में जोरदार धायें सारु वहीर करदी । धोड़ा काम पढ़ता
देख वो सचवर गधा बी सवारी रें काम में ले लिया । देठ-दो हजार भाटी सिपाई
सारें नगर में तैलकी मचायोड़ा हा । सुलतान रा तीन हजार सिपाई पैला सूं ई यां
सू मोरचो ले रया हा । हमें दो हजार सिपाई भरूं आय पूगा । भेरु-भेरु भाटी
सिरदार नें चार-चार यवन सिपाइयां घेर लिया । जुद् री संघ भरजादायां त्याग,
छल-कपट रें जरियें जुद् जीतण री होड लागगी ।

दिन छलण में भेरु पीर बाकी ही । पण तकरीबन सारा भाटी सिरदार
वीरगत प्राप्त रहे चुका हा । ई बास्तै दिन रें चानणी में ई जुद् खतम रहे चुकी ही ।
रीस मचाया यवन, नगर रा कागेमरी घर कोरणी कियोडा घरों नें धुड़ावण सागा ।
सारा मिन्दरा री भेरु-भेरु खण्डो छळगी कर मिन्दरां रा नांव निगाण मिटा दिया ।
पण नगर में मिन्दरां रें नैडो, बचियोड़ी दो-तीन ममीतां नें देण पांनै बधग्यो
रिह्यो ।

सुलतान जाणतो ही कैं वो आज री जुद् जीत नें बी कीं हागल नी कर
सकिणी है । बी री गड नें आज री आज फलें करण री मनगूबो माटी में मिलग्यो ।
सूं बी आज रें जुद् में सुलतान रा ई जादा सिपाई मारघा गया हा । भवै, भी नें
मुदरें पैला रा घन्दाजां री भरोमो ऊठग्यो । वो आछो तरिया जाणगी कैं भद्रूं फां
पागी है । तासो रात गयां वो नुंवी उपाय सोचती रयी । आज बी में कोई बात रा
गुप्तगुप्त नो ही । वो आज नी तो वज्र ई क्रियो, नी रोजो ई गोनिवी हो । हा, संकाम
पूट बांगी जरूर चियो ही । वो सारी रात पण्डाल में घूमती रयी घर सोचगी रयी ।
वी री आधो मूं जादा सगती, रसद घर फौज रातम रहे चुकी हो घर भद्रूं भी है

हाथ नो लागो । गढ जीतण मारु जित्ती नागत री दरकार ही, वित्ती तागत तो बीं री पूरी फौज मे बीं नो ही । पण सुलतान कर्न बीं री होसली अर दिमाग घं दो ई चीजां ती घंडी अणमोल ही जहां रं अरोमं वो पंजाब अर मुलतान फतं करिमा, अरब मे सिक्की जमायो अर भाटियानगर नै फतं करण रा मुपना देखती ही । दिमाग रं बळ सूं वो अंक बात घडी-घडी सोचण लागो कं जुद् तागत मू नो जुगत सूं जीतयो जावै । भाटियां सूं तीन दिन रं जुद् मे बीं नै केई नुंवा अनुभव बिह्या अर बीं मन ई मन भाटिया री तागत, अटकळ अर जुगत री तागीफ करण लागी ।

खाई मे पड़्या सिपाइयां रा टसका अर सिसकारा बीं रं कानां मे रं रं नै पड़ना पण बां नै बचावण मे वो लाचार ही । अठो-ठठो बिबरी पड़ो लातां नै भेळी कर बां नै बीं खाई मे शेक कानी फंक बीं माथे अंक-अंक मुठ्ठी धूढ़ सैग बचिपोड़ा सिपाई अर सुलतान खुद नांखो । ईं बिचवै वो अटकळ सोचतो रीयो । आधण बाळ काल री सडीक में, वो आस्थ्यां में ईं गत काटदो ।

(२६)

गढ रं मांय आसगी जुद् री जोरदार श्यारियां सुरू व्हेयी । दिन ठगयो पण गढ री प्रौळ बाढ ही । सुलतान री फौजां घड़ी घड़ी रण रा बाजा बजावती रीमी पण बिरथा । सुलतान री फौजां फेरूं खाई कानी बघण लागी पण घठो नै आगे बघताई बां माथे बाणां अर खाण्डा री बरसा व्हेली सुरू व्हेयी । सुलतान, फौजां नै हुकम दियो कं वे बिरथा प्राण नी गमावै अर गढ री प्रौळ तोड़ण सारु तागत लगावै । कोई दो हजार सिपाई प्रौळ तोड़ण मारु पूरी तागत अजमाई पण सारी मैनत अर अटकळ बेकार गई ।

दोपारी दळती निजर आधण लागी पण गढ री प्रौळ नी मुसकी । सेवट सुलतान सिलावटा अर दीगर कारीगरां नै हुकम दियो कं वे प्रौळ रं नाचै री फरस तोड़ै । ईं काम में सिपाइयां नै हमदाद करण सारु हुकम दियो गयो । सिलावटा धूळ सिरफ दो हाथ फरस खोद सकिया । पण गढ रं मांय घुसण सारु धूळ कोई मारग निजर नी आयो । सुलतान रा सिपाई, पांणी सारु नाही-नाही मचादो । की सिपाई मसीतां मे नमाज पढ़ण री नीत सूं गया नै बां नै, शेकाशेक याद आयो कं मसीत रं मांय कूवो व्हेली जोइज । श्री बिचार भाता ईं वे आपरं अफसरां नै बतायो । पांणी री सर्वां नै सडीक ही । ईं धारतें मसालां अर राख लेयने दो तीन सौ सिपाई अर सिलावटा पाँवग्या । वे पूरी मसीत री फरस खोद नांखो पण बठे ईं कूवो निजर नी आयो । सेवट छार सागोड़ा वे पासती ऊमी अंक कोटही नै

पुडादी । अठे वाने वेरे री अनांण ला'दी ईं भूं वांरी आसा बघी अर वे दस गज रे घेईं छेईं जमी खोदणी सुरू की । दो हाथ जमी खोदतां ईं तीन चार सिलावां निकळी । यां सिलावां माये हवींही मारतां ईं थोथ गूजण लागी । सिपाईं हडके सूं सिलावां खिमकावण लागी अर ईं रं समचे ईं जमी मांय सूं रंगहीण हवा, दळकी उवाज करतो यकी वारे निसरी । ईं हवा रे लातां ईं पाखती ऊभा सिपाईं सलाखां खाय नीचे पडणा सुरू व्हियां अर पडताईं सोघा जमलोक पूगया । यां नै नीचे पडता देख दूजा सिपाईं ज्यूं ईं यां कांनी आगें बधता अर वां री बी भाईं गत व्हेण लागी । दो--चार सिपाईं नाक अर घालिवां भाडा हाथ मेळ'र उठे सूं ऊंभा भागा पण वे बी घरणाटी खाय नीचे पडया । तीन सो सूं बघिक सिपाईं अठे मर-बुटा । मुलतान कर्न समचार पूजा सो बी अकर तो घबराव्यो पण दूज ईं छिन बो समझव्यो अर पूरी जाणकारो लेवण सारू अक मोटे अफसर नै भेजियो ।

दुजी कांनी कीं सिपाईं अक दूजी कुवो खोद काडियो । हमे यां लोगांरी खुसी री ठिकाणी नी रेंयो । वे दोडिया दोडिया गया अर टंकिया डोल अर डोरी ले माया । गिडगिडी लगा'र दो दो डोलां सूं पांणी सीच टकी भरणी सुरू की । पण अक टंकी बी पुरी नी भर सकीजी कं कुवे री पांणी खूटव्यो अर रेत बाधण लागी ।

पांणी पीवण सारू सिपाइयां री भीड लागी । संगे नै अक अक घुस्ती पांणी, पीवण सारू देवण री हुकम ह्यो । पांणी री टकी भायें घंटे मे ईं खात्री व्हेगी । अर तिरफ दो हजार सिपाईं पांणी की सकिया ज्यां नै कं जोरदार तिरता लागोडी ही । वे दो घुस्ता बी मुसकिल सूं पी सकिया । परबम बात ती आ की पांणी बीत खारी हो, दूजी बात घा कं पाणी हलक सूं नीचे पेट मे पूगया ईं अंही लागी कं पेट रं मांय कोई भाटी फंसगी ही । जका लोग अक अक गुटकी ईं तियो ही वां ग बी पेट फूलणा सुरू व्हेगा अर पेट मे जोर सूं आटा आणण लागी । वां सूं ऊंमी नी रेंयो जावे । वे छदपटावणां सुरू व्हिया । दो पार पटा मे ईं दो चार सो सिपाइयां रा प्रांण निवळया । की लोगां नै दर्ता अर उलटियो तात् व्हेगी । दिनुयें तक सात घाठ सो सिपाईं फीत घेतया । पांणी पू गोती व्हेली पूं सिपाइयां मे खळबळी मचगी ।

वे लोग हर्मे मुलतान नै संग करणु सारू व्हिया की वो पारी मुद्द जावे । वे सापो बिना रें सके पण बिना पांणी तो अक दिन बी नी रें सके । मूलातम वा नै पणो ईं समझवण री कोसीत करी पण वे लोग अिद अकया । मुलतान पी पूरी कोसीतां, सोभ अर इस्लाम री दुवाई विरथा गर्द । चापी पीअ पारी आवाज सारू घुपरा बांध लिया ।

सांभ दळतां पूनम आपरें सागें तीन सौ ऊंटां मायें पांणी री पसाला भर ल्यायी भर मां ऊंटां नै गढ़ रें पिछवाड़े कांती भेक दिया । पूनम आपरें सागें भेक भस् बेली नै ले'र सुलतान रें डेरें कांती आयी । सुलतान रा सिपाई यो नै बन्दो बणा'र सेनापति कने पेश कियो । सेनापति मां दोन्हु कांती धूर नै देखियो ।

“काई नांव है थारो ?” पूनम कांती आगळी सठावतां थका सेनापति पूछियो ।

“पूनम सिंग भाटो”

“पूनमसिंग ?” सेनापति थोड़ी गौर सू देखियो ।”

“यनै म्है सायत पैला कठै ई देखियो है । याद नी आ रेयो है ” सेनापति थोड़ी दिमाग मायें जोर देय फेरुं गौर सू पूनम कांती देखियो ।

पूनम आपरी घन्टळ सू सेनापति रें दियोढी सेनाणु निकाळ'र सामें कियो ।

“हा याद आयी नज्मी, पूनम ।”

“हुकम” पूनम थोड़ी झुक'र बोल्थी ।

“बोल ! काई सजा दी जायें यनै ?”

पैला ती म्है तीन सौ ऊंटा ऊपर मीठें पाणी री पसाला भर ल्यायी हूं, वो सू आपरें तिरमा सिपाइया री तिरस बुझावो, पछे जो दण्ड देखोला, वो भुगतण नै थार हूं ।”

“कठै है पसाला ?”

“गढ़ रें पिछवाड़े”

“वै बयूं ल्यायी ? किणु रें वास्ते ल्यायो ?”

“हजूर ल्यायो ती आप सारु ई हो ”

“ई बात री काई भरोसो कै पांणी पीवण जोगी है ?”

“हजूर !” हुकम फरमावो ती म्है खुद पी'र बतानू”

“ठीक है, थारो सेनाणु दे, सो पसाला घठे मंगई जा सकें”

“पूनम दूजी भटळ सू भेक दूजो सेनाणु काढ'र सेनापति रें सामो कियो । सेनापति रें इसारे ऊपर भेक अफतार, तुरत पांच सौ सिपाइयां नै सायें ले'र गयो । छठे जाय वो पूनम री सेनाणु बतायो । सेनाणु रें समयें तीन सौ ऊट सुलतान रें डेरें कांती ब्हीर ब्हेगा । ई रें बिच्चे सेनापति, पूनम नै आपरें तम्बू में सेढायो । सेनापति री मरजीदान सिपाई पूनम रा दोन्हु हाथ कमर रें पूठे बांध'र वीं नै तम्बू में ल्यायो ।

“हां ती पूनम ! याद है वा खजाने वाली बात ? म्है जाणतां थका नी यनै उठै सू चावण दियो आ म्हारी मलमानसत हो । म्है चावतो तो.....”

'ठिकांणी तो पूनम ई जाणै'

'गढ़ मे जावण री ओरू' कोई मारम ?'

'वहेला'

'यनं नी मालूम'

'नो हज़ूर ! म्हे मुलतान री बागिन्दो हूँ अठं पैली दफा धायो हूँ '

'यनं नी मालूम कै सुलतान री फौजा अठं जग सड़ रीयो है ?'

'मालुम है इसी वास्तं तो खजानी लूटण री सुभीतो है '

'हूँ तो लूटियो नी खजानी ?'

लूटण साहू कम सूँ कम हजार आदमो जोइजं । म्हारं दल में सिरफ पचास आदमी है ।'

'ठीक'

सेनापति हुकम दियो कै ई नै ओक दूजै तम्बू मे भारी पीर में बन्द राकियो जावै ।

यां सूँ निमत'र, सेनापति, सुलतान कर्न गयो । सारी हथियत बी नै बताई । सुलतान घर सेनापति खासी ताळ सला मसबरा करता रैया । इतरे में तीन सौ जँदा री काफलो, पांणी री पखाला ले'र आब पूणो । सुलतान रै हुकम माफिक सेनापति यां तीन सौ पखालियां नै बन्दी बणा लिया घर पखालां री पांणी यां लोगां नै पाय, तसल्ली करली कै पांणी भीठी है । ई पछै तो पांणी पीबण साहू उठै भारी भीड़ लागयो । पांणी पियां सूँ सुलतान री फौज में ओक नुं'वो जीस बावड़ियो । सुलतान रै हुकम रै माफिक पूनम घर रमजान नै सुलतान रै सामे पेश किया गया । वे दोगूँ गन्दन' भुका'र सुलतान नै सिजदी कियो ।

'पूनम घर रमजान ! म्हे सारी बात सुणली है । पण इए बात री काई सबूत कै घै बाबिया खजानं री है ?'

'सबूत तो बाबिया लागिया सूँ ई व्हे सकै सुलतान यामिनुद्दोला !' पूनम बोल्थो ।

'पण ई में रात्र री चाल बी व्हे सकै ।'

'सुलतान नै म्हारो यकीन नी व्हे तो म्हारं कर्न सूँ कुरान उठवा सकै' घबकै रमजान बोल्थो ।

यो सब ठीक है, पण म्हे खजानी जानू'

'खजानी है, घर भरपूर है, सुलतान ! ओक बात आपनं बी मानणो पड़ेला कै ओक दुसमण दूजै दुसमण साथे दगो कर सकै पण ओक लुटेरो दूजै लुटेरे साथे घोली नी कर सकै,' रमजान बोल्थो ।

‘काई मुतळव घारी ?’ सुलतान घोड़ी कटक’र मोल्यो ।

‘मुतळव भी हजूर कै भेक मुसलमान दूजें मुसलमान साथे दगो नी कर सकें ।’

‘पण काफिर ?’

‘काफिरों रो भरोसो तो म्है बी नी करूं घालमपनाह, पण.....’

‘पण काई ?’

‘खजाने रो ठिकाणो भर मारग हें काफिर नै हें भालुम है ।’

सुलतान, पूनम नै बारें सेजावण रो हुकम दियो । सिपाई पूनम नै बारें लेयायो । हमै सुलतान रमजान नै पूछियो—

‘घारी बात रो यकीन करखूं ?’

‘घालमपनाह ! यकीन साथे दुनिया टिकी है । म्है आज तक हें काफिर रो भरोसो करतो प्रायो हूं भर भी अजताई मनै कठे हें दगो नी दियो । दरमसल भी काफिर कोनी । ओ भेक मुसलमानी रें पेट खूं हें जलमियो है ।’

‘फेरूं बी.....’

‘राव, गढ मांय खूं भाग चुकी है भर गढ़ भर्व खाली पड़यो है । खजाने रो खाली खातर की सिपाई गढ़ में है ।’

‘सबूत !’

‘म्है खुद राव खूं मिळ’र पछें भठी नै जाया हा ।’

‘वो बयूं ?’

‘खजानो छूटण सारूं’

‘भरै या रो काई विचार है ?’

‘बोयो पोली में बात तै म्है सकी ।’

‘पण म्हारो इसी मोटी फीज रें सार्ने या खजानो छूट’र रो जा सकीया ?’

‘वा कूबत म्हां में है’

‘तो आज भात्रमाइस रहे जावे ।’

सुलतान, सेनापति नै हुकम दियो की वो दो हजार सिपाइया नी नि’र पूनम भर रमजान साथे खुद जावे भर गढ़ रें मांय पून’र प्रोळ सोल ये । सुलतान खजाने रो दोखूं चाबिया खुद रें कब्जे में लेली ।

रात भायो दळ चुकी ही । गढ़ मांय आज गतासां सेनग भी भरी । सेनापति, पूनम भर रमजान नै साथे से’र पूनम रें बतगोड़े मारग कीनी भावी अमला भायो । वो रें पाछें दो हजार सिपाई रातर शिमोका उड़ी गयी आल रिया हा । गुराह के मूण्डे कने पून’र, पूनम, सेनापति नी कीरी कं हें गांगरी भोरे नी हवायो जाये ।

रं हुकम सूँ पचास सिपाई तुरंत धोरो साफ करण में लागग्या । थोड़ी ताल में धोरो साफ व्हेरयो । हमें जमी साथै पड़ी तीन सिलावां नै खिसकाईं तो सुरंग में उतरण सारू पागोतिया निजर भाया । सेनापति दो सिपाइयां नै हुकम दियो कं वे मसाला लेय मांयने उतरें भर भागै रो मारग देख'र इतला करै । दो सिपाई, डरता-डरता सुरंग रें मांय उतरगिया । अं दस कदम ई भागै बघिया भर हड़बड़ा'र पाछा भाग्या । या रो मसाला बुझगो ही ।

'काई बात है ?' सेनापति कड़क'र पूछियो ।

'हज़ार भागै तो कोई मारग नी सुझै ।'

'मसाला पाछो जगबी भर मानुम करी ।'

सिपाई बापड़ा मसाला चेतन कर, पाछा सुरंग में उतरिया । ई बार भी बीस पचीस पावण्डा भागै गया भर या नै चार फाटा निजर भाया । ये दोनूय पैला तो अँक मारग कानी ई भागै बघिया पण सार्ग जाता फेल्' तीन मारग फँटता । हमें भी पाछो मुड़ण रो मतो कियो बड़ी मुसकिल सूँ भी पाछा बारें निकळ'र सेनापति नै हगीगत बताई ।

हमें सेनापति खुद दस सिपाइयां नै साथै लेय सुरंग में उतरियो । सार्ग जाता ई, यो नै चार मारग फाटता दीस्या । वो चार सिपाइयां नै साथै लेय अँक मारग कानी खुद गयो भर सारला छ्वां न दो-दो रें हिसाब सूँ सारला तीन मारगों में बघण रो हुकम दियो । सेनापति पचासक पावण्डा भागै बधाया भर बी नै तीन फाटा दीस्या । वो, दो सिपाइयां नै खुद रें साथै लिया भर सारला दो मांय सूँ अँक-अँक नै दूजा दो मारगों कानी भागै बघण रो हुकम दियो । थोड़ी ताल संग सिपाई मांय नै झठी-उठी फिरता रैया । पण या नै सार्ग जाबण रो बठेई मारग कानी साइयो । उठे तो मारग मांय सूँ मारग निकळता भर सिपाई धूम-फिर नै साथै जागा पाछो पूग जावतो । आ ई गत सेनापति रो व्हो । सेबट वो कायो व्हेग्यो भर मुसकिल सूँ पाछो बारें घायो । सारला आठ सिपाइयां रो बाबड़ नी लागी । हमें सेनापति, पूनम नै कँयो कं वो असली मारग बतावै । पूनम कँयो कं मांयने जठे वो फांटो भावै उठे हावै हाथ रें फांटे में पुस जावो । सेनापति हमें सिपाइयां नै हुकम दियो कं वे जँटा नै छोड़, संग दँ सुरंग में अँक-अँक कर उतरै । जद अँक हजार सिपाई सुरंग में उतर चुका तद सेनापति, पूनम भर रमजान नै साथै ले'र खुद सुरंग में उतरग्यो । दो सिपाई या रें साथै भर दो सारें, नागो तलवारां लियोहा पामता हा । या सारें, सारला अँक हजार सिपाइयां में सूँ, बी जँटा रो रस्ताळी सारू सुरंग रें बारें ई दकग्या भर बाकी संग सुरंग में उतरग्या । पूनम या नै सुरंग में सूब झटो सूँ उठी पुवावतो रैयो । मसाला पण्डरी बुझ चुकी हो । भागै जावतां सुरंग रो मूण्टो छोटी व्हेवो भर ऊराई वो

बम रहेगी । ई सारू भवे दो सिपाई भेकें सागे, भागे बघ सकता भर वे बी बैठे'र ।
 पण सुरग रो मारग लगेलग ऊपर कांती ले जावती । ई सून सेनापति नै भरोसी रहेगी
 के वो गढ़ में ऊपर कांती चढ़ रैयी है । सेनापति पाछें मुड़'र जोयो तो बी नै दस-पन्दरा
 सिपाई घावता निजर आया । पांच-सात भागे जावता हा । हमें घणी सांकडी जागा
 पायगी भ्रम भेक मिनस ई निक्कल सकती, भर वो बी सूय नै हाथा रें बल पर । भागे
 मारग खुलासे रो हो, भो भठे सून साफ निजर आवती । नागो तसवारां बाळा सिपाई
 तसवारा, भ्यानां मे घाल'र हाथा रें बल पर भेक-भेक कर नै भागे रंगता पका बध्या
 भर भागे जा'र ऊभा रहेगा । ई विचवै भागले सिपाई रो मसाल बुझगी रंग'र जावण
 रो मारग दस-पन्दरा पावणहां रो हो, ई वास्ते सारें सून मसालां मिलावणी बी दोरी
 ही । सारें रैयोहा पांच-सात सिपाइयां मे सून तीन रें हाथां में मसालां ही पण भ्रि बी
 मन्दी भिह्योड़ी ही । यां रें चानणै सून मारग दोसती जरूर ही । पूनम बोझी के बी रा
 हाथ खोलदें तो वो लगती मसाल भेक हाथ मे से'र भेक हाथ सून रंगती भागे बघ
 सकै । सेनापति, पूनम भर रमजान रा हाथ खोलण रो हुकम दियो । भागे गयोड़ा
 सिपाइयो नै वो सावचेत कर दिया । पूनम भेक हाथ मे लागती मसाल से'र भेक हाथ
 सून रगड़ीजती, ई खाचे नै पार कर लियो । हमें बी सारें सेनापति बी रंग नै घायगी
 भर बी सारें रमजान । भठे पूगतां ई पूनम भर रमजान भेकें मागें मसालां फूंक दे'र
 बुझाय बी । सारें रैयोड़ी भेक मसाल बी गुल बहे चुकी ही । रमजान भर पूनम,
 सेनापति भर भागे रा दो सिपाइयां रें सातां रो भचकाय भन्धारे में भागे भागया ।
 सेनापति भर सिपाई उठे जमी मागें पड़ग्या हा । पाछा ऊठ'र सम्भलें बी पैला तो
 पूनम भर रमजान घणा भागे पूग चुका हा । भागे जा'र वे याने हेली मारियो । भ्रि
 वा रो उवाज रो पोछी करता, सम्भल-सम्भल'र भन्धारे मे भागे बधता भर घापस
 में टकरीजता । सून करतां भ्रि घापस मे ई भेक-दूज नै मारणा सरू रहेगा । फेरुं बोली
 सून भोळल नै पछतावता ।

सेनापति भर घणकरा सिपाई रात भर, ई भूलभुलइया में चकरी चढ़ियोड़ा
 रैया । यां रा हलक सूखग्या । भन्धारे मे घणी रघडां खाय यां रा हाथ, पग भर
 भूण्डा खुलग्या । या में सून केई चिलकी देख बी कांती लपकता पण भागे जाय भीत
 सून भवीडी खा जावता । सेनापति मन ई मन पछतावण लागी के जे वो पूनम सून
 सोदो तै कर लेतो तो बी नै फोड़ा नी भुगतना पड़ता । हमें वो साव भेकली रैयगी
 ही । वो जोर-जोर सून फूका करण लागी भर अत्ला रें नांव रो दुवायां देवण लागी
 पण उठे बी रो कुण सुणतो ? सुलतान रा सौ सवा सौ सिपाई दोरा-सोरा गढ़ में
 पूग सकिया पण उठे पूगतां ई भाटी सिरदार बां नै ठिकाणै पूगाय दिया । बाकी रां
 में केई तो सुरग मे ई पड़िया-पड़िया टसकता हा । घणकरा सिपाई तो सुरग सून

निकळ'र खाई में फमग्या । सुरंग मांय सूं श्रेक मारग खाई में ले जावती हो । दस बीस सिपाई पाछा सुरंग रें मूण्डें तक पूग सकिया । पण अठें दो सिलावां पाछी घरीजगी ही घर बिच्चें री श्रेक सिला री ठोड़ निकळण री मारग हो । बीवली सिला कम चवढी हो । इत्ती सोकड़ी जाणा मांय सूं व्हेर बारें निकळणी बीत दोरी हो । अं लोग मांय सूं घणां ई हेला पाडिया पण अठें यां री कृण सुणती ? ऊंटां री खाला सारू बारें रेयोडा सिपाइयां नै तो पूनम रा घादमी कदका बग्दी बणाय चुका हा अर ऊंटा सयत वां नै उठें सूं भापरें सांगें लेय्या ।

(३०)

भामे-सामे री लडाई मे भाटी हार चुका हा । ईं वास्तै यानें गढ़ लाजी करणी पडियो । सुरंग रें मारग, तीन हजार भाटी सिरदार गढ़ मांय सूं बारें निकळया । स्वामी श्री, देवी री मन्दिर छोडण नै राजी नी भिठ्या । राव अर दूजा सिरदार वानें घणां ई मनाया पण स्वामी श्री री श्रेक ई पडतर हो— “मनै मां री हया नी मिळी । मां री खाला सारू म्हारा प्राण जावें तो म्हारो जीवण किरताप है । पण मनै भरोमी है के दुसमण रा पग, ई दिना में नी बय पावेला ।”

गढ़ सूनी व्हेयो । गढ़ में मां रें मन्दिर री खाला सारू श्रेक हजार सिपाई लारें रैया । इत्तै मोटै गढ़ मे एक हजार सिपाई हींग री गरज बी नी साज सकै हा । पण भड़ किवाड़ भाटी कदैई रण सूं पूठ देखावणो नो सीखिया । राव, श्रेक श्रेक हजार री तीन हुकडिया बणाई अर तीन दिसावा में सुलतान नै पाछे सूं घेरण गे निश्चै कियो ।

सुलतान री आधी फीज, सुलतान नै छोड़ पाछी व्हीर व्हेगी । बीरा चार मोटा अफसर, सुलतान री हुकम मानण सूं नटग्या, अर अं ई लोग, दूजा सिपाइयां नै पाछा जावण सारू तयार किया हा । सुलतान रा घणकरा सिपाई ती मार्या जा चुका हा की सिपाई सेनापति अर पूनम सामे खजाने री खोज मे जा चुका हा । पाछा मुड़ण वाला सिपाइयां री सबसू मोटी सिकायत रोटी-पांणी री हो । घूडो उडणें सूं रोटियां अर साग में किड़किड़ घावती । सारला दो दिनां सूं या लोग नै, नी ती मांस मिळियो नो धापमी पांणी । सुलतान री सारी कोसीसां बेकार व्हेगी । चार-पांच हजार सिपाइयां रें व्हीर व्हे जाणें सूं सुलतान री मुदगे फीज रा सिरक तीन हजार सिपाई लारें रैयग्या । यां रें इलावा डेढ-दो हजार सिपाई बाराह अर लंगा रा हा ।

रात रो पैलो पौर निकळग्यो पण सेनापति पाछी नी भाषो तो सुलतान गेरे सोच मे ह्वाय्यो । वो थापरा की भरोसबंद सिपाइया नै सेनापति नै जोगण मारु भजिया, पण वां नै ग्यां नै बी घणो देर व्हे चुकी हो । सुलतान हम्मे घणै सोच मे पड्यो । अकर तो वो खुद घोडें माथे बंठ'र जावण नै तयार व्हेओ पण बी रो निशू सलाकार, बी नै समझा-बुझ'र रोकिग्यो । अठी प्रकृति बी सुलतान सून बँर बाढण सारु तयार व्हेओ । पच्छम सून आंधियां उडण लागी भर वीं रे सागें ई घुडो, तम्बुकां में बाढण लागी । तेज तोफाण रँ कारण केई तम्बुका रा खूटा उलळग्या, फनातां फाटवी भर तम्बू फाटग्या । घोर धन्धारो व्हेओ । मसालां कद की चुक चुकी ही । आंधियां खोलतां ई, वे घुड सून बुरोज जावती ।

भाटी ईं मोकें रो फायदो उठायी भर वे सुलतान रँ डेरें माथे धावो बोल दियो । पण घंडी धन्धारो हो के हाथ सून हाथ नी सूकतो । ईं वास्ते भाटी निरदार, बोव सम्मळ-सम्मळ'र धागें अधिया । हडबडाट में यवन सिपाईं अठी-उठी भागण लागे । सुलतान ईं दुखी आफत सून धबरायग्यो । पण वो हीमत नी हारी । वो फौज नै हुकम दियो के संग गड रो दिसा मे भाग'र मोर्चा जमा सेवें । सुलतान रँ हुकम दिया पैला ईं निरा यवन सिपाईं गड कानी भाग चुका हा क्यूं के वीं दिसा मे भागण मे घी तोफाण बी वां रो मदद करतो भर लारें सून घुडो धावण रँ कारण थोड़ी-थोड़ी ताळ सून आंधियां खोल'र देखी जा सकती ।

ईं बिघे भाटी सिरदारा, सुलतान रँ खजाने रो पेटिया तक पूग चुका हा । उठे जम'र तलवारां कटकी पण यवन सिपाईं घणो ताळ नी टिक सकिया । सुलतान थोडो ताळ पैला खुद बी गड कानी भाग चुकी हो ।

पण पूनम रँ सागें गयोडा सिपाइयां माथे सून कोई पचासक यवन सिपाईं, सैलें पाणो रो निकासी रँ मारग सून गड मे घुमग्या । वे खासी ताळ अठी-उठी छिपता फिरता रँवा । गड माथिला हजार भाटी सिरदारा जाणता हा के सुलतान रो भाप बी गड नै नी तोड सकें ईं वास्ते वे निसंग दारु पो नै सूयग्या । दस-वीस सिपाईं निगराणी सारु जरूर जागता हा ।

गड में घुमियोडा अँ पचास यवन सिपाईं, चार-पांच भाटी सिरदारा माथे सैकें सागें धावो बोल'र वां नै जमसोक पोचा दिया । हमें वे अकर तो खजानो लूटण रँ सोम सून मन्दर भर मोलां कानी पग धरिया पण उठी नै धणुकरा भाटी सिपाइया नै देस मे उठे सून घुपघाण पाछा ब्हीर व्हेगा । हम्मे अँ गड रो प्रोळ खोलण रो मतो क्रिण । जद अँ प्रोळ ननै पूगा तो माथने लागोडी सांकळां देखने मममग्या के वे, पचाम थोड सी सिपाईं बी भेळा व्हे जावे ती यां सांकळां नै काटणी रोरो हे । पण केडें वो अँ सोम प्रोळ खोलण सारु खासी मायाफोड करता रँवा या रो सटखट रो

उवाजां सुग च्यार हाथी अठी-उठी सून निकळ घाया । धेकर तो धर्म हाथियां न देव
घबरायग्या । पण धर्म समझत्या कं या हाथियां रं जोर सून ई धर्म साकळां तोडी जा
सकें । च्यार-पांच जणा नें तो हाथी भावरी फेट मे जे'र ठिकाणी लगा दिया । पण
सेवट धर्म लोग हाथिया नें काबू कर लिया भर हाथियां री मदद सून साकळां लांब'र
प्रोळ रं ओक किवाड नें थोडो सोक खोल लियो । हमें या री खुतो री ठिकाणी नी
रियो । या मे सून च्यार-पांच सिपाई, सुलतान नें खबर करण साहू दौड़िया । पण
भारें तो जोर री तोफाण ही, सो यां री आंखियां बुरीजमी भर ओ ज्यूं पण भारी
बधावें ज्यूं पाछो पड़ें । काया व्हेर धर्म पाछा गड रं भांय घुसग्या । तोफाण रं तेज
वेग सून गड री धुंकाड बी धूजण लागो । तोफाण री सांय-साय रं इलावा की नी
सुणीजती । ई तोफाण सार्म हाथियां री बी ऊमो रेंवण री होमत नी व्ही । वे बी
उल्टा पण पाछा भाप'र ठायो ऊपर जाय बंटा । धीर-धीरें असमान मे हळकी सीक
आंनणी व्हेण लागी । हमें तोफाण री वेग बी की कम व्हेणी हो पण धूडी बरोबर
उडतो हो ।

हमें धर्म लोग पाछा सम्मिया । दस जणा ओके सागे गड सून भारें निकळघा
भर पडता-गुडता धर्म खासी ताळ पछें सुनतान कर्न पूगा । या सून या खबर सुणता
ई सुलतान नें जाणे गडियोडी खजानी भिळायो व्हे ज्यू वो उछळ पड़्यो । वो हुकम
दियो कें सेग गड मे घुस जावें । गड नें खूट लें, भिन्दर भर मूरतिया सोड दें भर राव
नें जीवत नें बंदो घणाय त्यावें । राव नें जीवतां नें बन्दी बणाय लावण साहू,
वो, पांच सो मिश्कळ री इनाम देवण री बी कोल रियो । सुलतान रा हारघा-धाका
सिपाइया मे, गड रं दूटण री सुण नें नुं'वो जोस बावडियो । वे भूखा-तिरसा ई,
दूणी जोस सून गड कांती लपकिया । हमें बांन सेग सुपना पूरा व्हेता सखाया । गड री
सम्मत खूटण रं जोस में, वे, सेग दुबधावां भूलग्या । तोफाण हमें की धोमी पड़्यो
हो पण सुनतान री फीजा तोफाण रं वेग सून गड मे चढण लागी ।

सुलतान रा तीन हजार सिपाई हडाकें सून गड री टेदी मेडी घाटियो
चढाया पण टेठ ऊपर पूर्ण पछें बी ओक दुबधा धर्म मारी या ऊमो । खास
गड, जठ कें मोल, भिन्दर भर मण्डार इत्याद हा, वो ओक बिसरकें परकोटें
सून घिरयोडी हो घर धी री रुखाळो साहू ओक मोटो भर मजबूत प्रोळ फाटें बी
धंद पडी हो । पैला ती धर्म प्रोळ रं मचीडा देण साहू किपा भर या पल्ला
भर बिसमिल्ला इत्याद करता रेंवा । यारें हाकें सून मायसा भाटो सिपाई बी सावचेत
व्हे चुका हा । वे कमरा कसली घर मूछा रं बट्ट देय करडालट्ट व्हे, सम्मलगा ।
जद यत्रन सिपाई मचीडां सून प्रोळ नें नी तोड सकिया तद वे सेवट सिपाई रं
यांवां ऊपर सिपाई नें ऊमो वर, मोसडां तक पूगाय दियो । सबसून ऊारलो

सिपाई जद गोखड़े में पूगग्गी तद वो ऊपर कैकिपोठै रस्सि ने गोखड़े रे घम्बे सून
बाध दिथो । हमै ई रस्सि नी मदद सून दस बारा सिपाई, दाता बिचने नाथी
तलवारा दबाय, घबाघन ऊपर चढ़या । पण अठे की भांय घुमण री मारग बन्द
हो क्यूं के घाडो भाटे री जाळियां लागोड़ो हो । कोई बस नी चालतो देख,
मै लोग जाळियां रे मचीहा देवणा सख किया । ई सून दो सिपाइया रा खोवां
दूठया घर घेर रे माथे सून भगग भगग लोई बैदणो सख जेगी । बी री
भगनाळ खुलगी हो । इजे यां नै ग्रेक दूजो उपाव सूझियो । अ नीचे सून भाटे री
ग्रेक गोळी ऊपर मयायी घर चीं सून ठोक ठोक'र, जाळी री थोड़ी सी भाग तोड़
लियो । हमै एक सिपाई मांय घुसभ्यो घर बी लारे दूजा, चार वतलै तरीर रा
सिपाई बी मांय घुमया ।

मांय घुमियो पछे मै लोग आगै बघिया । च्यालुं मेर निजरां फेरता
यकी मै सम्मल सम्मल'र आगै बघणा सख जिया । मै अजून ग्रेक खुलै डागळी ऊपर
हा । ऊठे सून याने मांयली कानो नीचे उतरण री मारग अजून कानो लावो । यां
नै ऊपर फिरता नै नीचे सून भाटी सिपाई देख लिया । वे नीचे सून ई याने लजकार्या
घर ई रे समचे ई नीचे सून दो-चार तीर घर खाण्डा ऊपर घाया पण मै लोग बी सून
फेट बचाय दूजो कानो भागया । अठे याने नीचे जावण सख ग्रेक नाळ दोसगी ।
यां मै सून ग्रेक सिपाई, नीचे ऊमा सिपाइयां नै हगोगत बताई
तो कोई तीन-चार सौ सिपाई रस्सि ऊपर चढ़'र ऊपर पूगया । हमै नीचे
जावण लागे । मै लोग बैठे बैठे मैदक चाल सून आगै बघ रिया हा,
ई वास्तै बचाया । इतरे मे भाटी सिपाई बी ऊपर जम'र तलवांगे फड़काई । यवन
सिपाई धाने सून नीचे पोंच चुका हा । जद मै प्रीळ रे मायबो कानो पूगा ती
उठे तीन भाटी सिपाइयां सून यारो भुकावली विधियो । घर वे तीनू श्री जो सरण
भिया । हमै या मे सून ग्रेक सिपाई मांय सून प्रीळ रा किवाड़ खोल दिया घर ई
रे समचे ई यवन सिपाइयां री दळ मांय घुसभ्यो । भाटी गिणतो मे बीहा रियाया
ग्रेक हजार माय सून तीन सौ सौ डागले ऊपर लड़ता हा, दो सौ देवो रे मिन्दर घर
मोला री दसाळी सख उठे मोरची लियोडा हा, बाकी अठे खुले घागणें में दुममण
रे रोखण सख जूझता हा सून कर घमासाण लड़ाई चालतो रियो घर आभा ऊपर
भाटी सिपाई मारिया जा चुका हा । बी प्रथम'विया टसकता हा जयाने चीय ने यवन
सि ई मिन्दर घर मोला कानो घाये बघ रिया हा ।

मिन्दर में स्वामी श्री, देवी री पूजा में लागोडा हा । बारी रा हाका घर
तलवांगे री कटाकट सून वे समझ चुका हा क हमै दुममण वा तक पूरण वाळी है ।
वे देवो री पूजा पूरण कर, गरभग्रह रे बारी घाय बैठया । गरभग्रह रा किवाड़
बन्द कर दिया घर स्वामी श्री, घामण माथे बैठ'र देवो री स्तुति में संगीत छेड़

उवाजा सुण च्यार हाथी घठी-उठी सू निकळ आया । अकर तो अ हाथियां न देल
 घबरायया । पण अ समझया की या हाथिया र जोर सू ई अ सांकळां तोडी जा
 सके । च्यार-पांच जणां न तो हाथी आपरी फेट ये ले'र ठिकाणे जमा दिया । पण
 सेवट अ लोग हाथिया न काबू कर लिया अर हाथियां री मदद सू सांकळां खांच'र
 प्रोळ र अक किवाड न थोडी सीक खोल लियो । हमे ण री खुसी री ठिकाणी नी
 रीयो । या मे सू च्यार-पांच सिपाई, मुलतान न खबर कण सारू दोड़िया । पण
 बारें तो जोर री तोफाण ही, सो या री आंखियां बूरीजयो अर अ जू' पण आमी
 बघावें ज्यू पाछो पडे । काया ब्हेर अ पाछा गढ र माय धुसग्या । तोफाण र तेज
 वेग सू गढ री हुंरवाड बी धुजण लागी । तोफाण री सय-साय र इनावा की नी
 सुणीजतो । ई तोफाण सामे हाथियां री बी ऊमी रेंवण री होमत नी व्ही । ये बी
 उल्टा पना पाछा पाप' ठायां ऊपर जाय बंठा । धोर'-धीरें असमान मे हलकी सीक
 खानणी व्हेण लागी । हमें तोफाण री वेग बी की कम व्हेणी ही पण धुडी बरोबर
 उडती ही ।

हमें अ लोग पाछा समझया । दस जणा अकें सांगी गढ सू बारें निकळया
 अर पडता-पुडता अं खासी ताळ पछे मुलतान कने पूगा । यां सू आ खबर सुणता
 ई मुलतान न जाणे गडियोडी खजानी मिलयो व्हे य्यू वो उछळ पडयो । वो हुकम
 दिपो की मंग गढ मे धुस जावें । गढ न लूट लें, मिन्दर अर मूरतियां तोड़ दें अर राव
 न जीवते न बन्दी गणाय ल्यावें । राव न जीवतां न बन्दी बणाय लावण सारू,
 बो, पांच सो मिशकळ री इनाम देवण री बी कील रियो । मुलतान रा हारघा-थाका
 सिपाइया मे, गढ र दूटण री सुण न तुंबो जोम बाव्हियो । ये भूखा-तिरसा ई,
 दूणी जोम सू गढ कानी लपकिया । हमें याने सेग सुपना पूरा व्हेता लखाया । गढ री
 समरत सूटण र जोम मे, वे, सेग दुबधावा भूलग्या । तोफाण हमें की धीमी पडग्यो
 ही पण मुलतान री फीजां तोफाण र वेग सू गढ मे चढण लागी ।

मुलतान ग तीन हजार सिपाई हडाकें सू गढ री टेढी मेढी घाटिया
 बडग्या पण ठेठ ऊपर पूगा पछे बी अक दुबधा वां सामो आ ऊमी । खास
 गढ, जठे क मोल, मिन्दर अर भण्डार इत्याद हा, वो अक बिसरकें परकोटे
 सू घिगयोडी हो अर वो री रुखाळी साथ अक मोटी अर मजबूत प्रोळ भठे बी
 वट पठी ही । पैला तो अ प्रोळ रें अचीडा देणा सारू किया अर या यल्ना
 अर बिमिल्ला इत्याद करता रिया । यारे हाकें सू मामला चाटी सिपाई बी सावचेत
 रहे चुका हा । ये कमरां कसनी अर मूछो रें बटु देय करडालट्ट व्हे, समनग्या ।
 जद यधन सिपाई अचीडा सू प्रोळ न नी तोड़ सकिया तद वे सेवट सिपाई रें
 ऊपर सिपाई न ऊमी अर, गोसडां तक पुणाय दियो । सबसू ऊपरलो

सिपाई जद गोखड़े में पूगयी तद वो ऊपर फेंकियोड़े रस्मे न गोखड़े रे धम्बे सूं बांध दियो । हमै ईं रस्मे री मदद सूं दस बारा सिपाई, दाता बिच्च नागी तलवारां दबाय, धबाधब ऊपर चढ़या । पण अठे बी मांय धुमण री मारण बन्द हो वपू के आडी भाटे री जालियां लागोड़ो ही । कोई बम नी चालती देख, धं लोग जालियां रे अचोहा देवणा सुरू किया । ई सू दो सिपाइया रा खांवां हूटया भर अेक रे माथे सूं भगय भगय लोई बैवणी सुरू व्हेगी । बी री भगनाळ खुलगी ही । इबे यां न अेक दूजो उपाव सूझियो । अं नीचे सूं भाटे री अेक गोळी ऊपर मगायो भर बी सूं ठोक ठोक'र, जाळो री थोडी मो भाग तोड़ लियो । हमै एक सिपाई मांय धुसग्यो भर बी लारें दूजा, चार पतलं सरीर रा सिपाई बी मांय धुसग्या ।

मांय धुसिया पछे अं लोग आगे बघिया । क्याहूं मेर निजरां फेरता यकां अे सम्मळ सम्मळ'र आगे बघणा सुरू व्हिया । अं अजूं अेक खुले डागळें ऊपर हा । ऊठे सूं याने मांयली कानी नीचे उतरण री मारण अजूं कौनी लादो । यां न ऊपर फिरतां न नीचे सूं भाटी सिपाई देल लिया । वे नीचे सूं ई याने ललकार्या भर ईं रे समचे ई नीचे सूं दो-चार तीर भर खाण्डा ऊपर आया पण अं लोग बी सूं फेट बचाम दूजो कानी भागग्या । अठे याने नीचे जावण सारू अेक नाळ दोसगी । यां मे सूं अेक सिपाई, नीचे ऊमा सिपाइयां न हगीगन बताई ती कोई तीन-चार सौ सिपाई रस्ते ऊपर चढ़'र ऊपर पूगग्या । हमै नीचे जावण लाग्या । अं लोग बैठ बैठ मँढक खाल सूं आगे बघ रया हा, ईं वास्ती बचग्या । इतरे मे भाटी सिपाई बी ऊपर जम'र तलवारां कडकाई । यवन सिपाई छाने सूं नीचे पीछ चुका हा । जद अं प्रीळ रे मायलो कानी पूगा ती उठे तीन भाटी सिपाइयो सूं यारों मुकाबलो व्हियो । भर वे तीनू श्री जो सरण व्हेगा । हमै या मे सूं अेक सिपाई मांय सूं प्रीळ रा किवाड खोल दिया भर ईं रे समचे ई यवन सिपाइयां गे दळ मांय धुसग्यो । भाटी गिणतो मे थोड़ा रयाग्या अेक हजार मांय सूं तीन सौ ती डागले ऊपर सड़ता हा, दो सौ देवी रे मिन्दर भर मौलां री हलाळी सारू उठे मोरचो लियोडा हा, बाकी अठे खुले आगर्ष में दुममण रे रोकण सारू जूमता हा थूं कर घमासाण सड़ाई चालती रयी भर आधा ऊपर भाटी सिपाई मारिया जा चुका हा । की अधमरिया टसकता हा ज्याने बीय ने यवन सि 1 ई मिन्दर भर मौलां कानी आगे बघ रया हा ।

मिन्दर मे स्वामी श्री, देवी री पूजा मे लागोडा हा । बारै रा हाका भर तलवारा री कटाकट सूं वे समझ चुका हा कं हमै दुममण वा तक पूगण वाळी है । वे देवी री पूजा पूरण कर, गरमग्रह रे बारै आय बैठग्या । गरमग्रह रा किवाड बन्द कर दिया भर स्वामी श्री, आसण माथे बैठ'र देवी री स्तुति में संगीत छेड़

दियो : दुसमण मन्दिर तक पूज चकी ही भर हूँ जे मां तन्नी भर भल्ला बिस-
मिल्ला री घुनिया माक मुणीजती ही । पण स्वामी श्री, निरलेप भाव सून सगीत
रे समदर में गोती लगावला सारू किनारे तक पूज चका । हूँ मां नें खुदरे सुरां
रे इलावा कोई घुनी जो मुणीजती ही ।

यवन सिपाई, मन्दिर मे घुसल सारू तागत लगावता रिया पण भठ भेक
भाटी सिरदार पांच री गरज साम्नी । यू कर मन्दिर रे बारें सोई री नन्दी
बैवली सरू व्हेगी । हूँ ग्रन्थारो बी पड़ चुकी ही ई वास्तें हारपोडा यवन, रात भेर
री नैकी धारिलियो ।

(३१)

राव रे पीडल रे मील सून केर मा तन्नी रे गरमग्रह ताई भेक गुप्त पारग
हो । हवेस ऊटताई राव पैला देवी रा दरसण करता पछे वारा नैण केरू की देखता ।
बां री मुख साफळई पैला देवी री स्तुति करती पछे वे किली सून बोलता । ओ राव
री नितनेम ही ।

राव नें गड दूटल री ठा पड चुकी ही । इबें भाखरी जुद व्हेली बाकी ही ।
राव घावरी सारी सगती लगा चुका हा । इबें बां नें सिरफ मा तन्नी री घामरी ही ।
भर बा नें पङ्की भरोतो ही के मां, बां री मसा पूरी करेला । ई वास्तें सारी बातें
सोच-विचार, वे घाबी रात में मां तन्नी रे मन्दिर, की गुप्त मारग सून बहीर बिया ।

क्याव मेर सुनियाइ ही । दूठोडा मीसां रा खण्डा, खुदरे सभ्य री कांणी
कैवण साह चतावला हा । कठई भळम सून तियाळिया री दरद भरपोड़ी हूक, डरवा
जावती । जामा-जामा हाडकां रा किंवा खीर दाईं लुकछिप नें भावस में बंतळ करता
हा । यां रे दन्द री टीसां सून ऊळीयोड़ी दुरासीसां, यवन नें गिन्दा बी । ई काळस री
कुळटा रात वे विघवां रे सवाग दाईं उभडियोड़ी, ई नगरी री रूप, डाकण दाईं डरा-
वणी व्हेगी ही । मसाला भर दीवडां कदकी खूट चुकी ही । कोई-कोई तारा घण
धुनर हा भर वे ई डाकण नें डरावण सारू दात कादता रता । मळवे मावे पढ़ती
वा री दीठ सून कोठ रा दागा सघड़ जावता । उभडियोड़ी बाभीची, पासियां बिनां
भूतां री डेगे व्हे ज्यू लागती ।

गरमग्रह रा किंवाइ बन्द हा । हळको सो मङ्गी दियां सून किंवाइ, राजा री
मान करण सारू छीदा पढ़या । राव विजय राज, गरमग्रह में घुसरे भेक जोत
जगाई । भेरर वे च्यारू मेर निजरां दोडाय नें सका भेटण री करी के । उटें, बां रे
इलावा दूजो बोई जीव नो है । वे देवी रे सांभी सीस झुकाय नें नैण मून्द लिया ।

अेक विधरमी ई मिन्दर नै तोड़ण मारु हजारों, मील री जातरा कर, अेय भायी है ।

मिन्दर में मघाटी चक्कर लगावती ही ई वास्ते हलकी सीक सांय सांय रै इलावा कोई उवाज नी ही । घर घा सांय सांय, सायत जाना री मूँजता रैवण री घादत रै ई कारण छै । केई दिनां पछे राव नै अेड़ी भुनियाड़ भर सान्ती मिली ही । निस री मून बी स्यात न्यूतो देतो । भूँ प्रकृति सान्त ही । अेड़ी सवावतो कै प्रकृति धिर रहेगी है, बैवतोही वगत, मुस्ताबण सागम्यो है । राव सांय सूँ किवाड बन्द कर दिया ।

वे छठै सूँ सिंगार री मोड़ी में गया भर नठै सूँ टाळर देवी रा बड़िया सूँ बड़िया आभूषण भर बेप लियो, देवी रै सिंगार री पूरी सामग्री रै साथै अन्तर पुसप, धूप दीप, इत्याद लेयनै पाछा गर्भग्रह मे आयग्या । सिंगार री मोड़ी मूरती री पूठ मे ही भर गरभग्रह रै साथ सूँ, ई मे प्रवेस करणी पड़ती । राव खुदरै हाथां सूँ देवी री पूरण मूरत री बड़ै चाव सूँ सिंगार कियो, अन्तर, धूप, भर पुसपां री भेली मैक सूँ गरभग्रह सुगन भूँ भरग्यो, राव, मूरत रै केसर भर चन्दण रचायो, भर सिन्दूर भर काजल बी जागा सर सगाया, आभूषणां सूँ सिंगार कियो भर खुडी पैरायो । अन्तर चढाय नै पुसपां री हार चढायो भर गजरा गूँथ तै देवी रै हाथां मे पैराया । घी री दिया कियो, धूप की, भर मार्थ ऊपर मुगट पैरायो । पूरी सिंगार कियो पछे वे अेक चितराम माडलियै कलाकार दाईं आपरै बणायोई चितराम नै निरलियो । देवी री मूरत जाणै सजीव रहेगी । देवी रै होटा भर नैणां सूँ फूटती हलकी सीक मुळकण मूँ, राव नै घवाणचक यसोधरा री इन्दरण रहे आयो, वे सोच्यो कै देवी री मूरत नै देख नै ई बिचाता, यसोधरा नै पड़ी है ? वे मन ई मन मे तरक कण लागे कै मोघजै सांयो यसोधरा देवी है कै देवी यसोधरा ? वे आपरी आंखियां मसल नै भरम सूँ मुगत रहेण री चेष्टा करी पण आख्यां खोलतां ई पाछी वा ई उलझण सामे ही । वा नै विचार आयो कै अेड़ी बिलिया बारी चित्त कठै ई भटकग्यो है । वा नै संताप रहेण लागो । ई पवितर काम मे बिघन देख, वे घबरायग्या । वे सोचै तो बस था ई कै बां मे घा कमजोगी कद, क्यूँ भर क्यान घुमगी ? अद्वी री जागा नेह क्यूँ उमड पड़्यो ? ओ कित्ती भारी पाप है कै देवी मार्थ कोई माणस आसक्त रह जावै ? वा री मन लिप्त रहेगो, मायो चकरावण लागो भर सरीर पसीनै सूँ तर रहेगो । बारी आख्यां भागै अंधारी छावण लागी भर पावेग मे वे खुदरी तलवार म्यान सूँ बारे काड़ती । जोवण री अेक-अेक छिन वा नै बार लागण लागी । वा री माथो नीचे झुकग्यो घर तलवार तणगी । आगल छिन मे वे, आपरी माथो काट, देवी नै अरपण करण री पड़ी तेवड़ली । कवळपूजा री आखरी चरण ओ ई ही । वा रै निश्चै रै सार्ग ई बां

रो तलवार चाळो हाथ, काठो तणायो घर हाथ न वेण देवण साक जू ई तलवार ऊपर ऊठो घर भचारणचक सुणोज्यो "मी मी" ।

हृदयहाय न राव अक दम मूण्डी ऊंचो कर च्याहू मेर निजर दोड़ाई । वां न की नो दोस्यो । देवी रो मूरत पैला दाई मुळकतो हो । राव मन मे मोविगी "घा, मन रो कमजोरो धोई जी मू कानां न भरम व्हेगी, घर मन घसू मूद नो दिव्योई हें खातर वो मोघर्जे सकळप सूं मन दिवावणो जाई" । वे घापरें निस्वें न केरू पळी कियो घर पाछो मायो मुकाय तलवार ताणलो । केरु वा ई धुती वा ई काना न वेण दिवा ।

तीजी वा, राव घापरें निस्वें न पूरण करण साक मायो मुकायो ई हो के हेंसी रो मुर, वां न केरु शोक दियो । हमें वां न लखायो के ठे, नो व्हे, कोई वम-त्कार हे के पछे देवी, वां रो परीवसा लेवे ई । वा न लागी जाणी वां रें कानां न कोई केवई "विजयराज ! मू तांघजी पूजा मान ली । इवें तेंन कवळपूजा करण रो जरुरत कोनो" । पण वा रो विवेक, वां न घा ई समझावती रीयो के मन रो कम-जोरी ई इलाफा की कोनो । समार रा जजाल भरम रें रुत मे प्रगटे घर घादमी रें सकळप न सोडण साक माया घापरा न्यारा-न्यारा खेन रचें । ई वाम्ते साबी पारल रो कडण घडी मे बी, घादमी खरो उतर सके वो ई, सकळप पूरी कर सकें । घा सोव, वे अकर केरु च्याहू मेर निजर फंकी । जाणी प्रकृति फिर व्हेगी । वा रें हाथ सू, तलवार छूटगी, अक छिन साक वा रो सांसां, निजरां, देहो, मन, विवेक इत्याद फिर व्हेगा । झंडी घडी हरेक रें जीमण मे भावे जद घा लखावे के से की अके सामें फिर व्हेगी हे, काई प्रकृति, काई जड घर काई चेतन । काई दोडी, काई मण्डी । मंग सामा हीण, मन्धारी । मन्धारी घर अवाय मन्धारी ।

"मी काई व्हेगी ? ई विळिया यसोधरा अठे वपांन घायगी ? तो काई वा यसोधरा ई तो नी हो जकी घडी-घडी मी-मी केवतो ही । के पछे कठे ई बीर दाई यसोधरा रें प्रति नेह तो नो लुक्वोडी हो जी खातर देवी हण ने अठे भेजी । अकर यसोधरा रा दरसण करण साक ई ती देवी म्हेंन नी रोक दियो ?" पण दिये रें चान्नी मे यसोधरा रें आतां ई, वां रो मी भरम कूडो पड्यो । यसोधरा भाये निजर पडतां ई राव रो अक्कल चकरायगी । वे देवो रें जको वेव घर आभूषणां मू सिएगार कियो ही सामें वो ई सिएगार यसोधरा रें कियोडी हो घेडी सूं से'र चोटो तर सिएगार मे कोई फरक कोनी हो । जठे केसर घेवडो जठे केसर, जठे चन्दण चरडियो जठे चन्दण, वो ई मोतिर्या रो हार, वे ई विळिया, वो ई वेंणो, घर वा ई समक-दमक, रत्तो रो बी कठे ई कोई फरक नी । राव गोर सूं देखियो, निजरां गाड न देखियो । देवी रो मूरत घर यसोधरा मे, कठे ई कोई फरक वां रो सीखो निजर नी सोप

सकी। वे घड़ी-घड़ी देवी घर यसोधरा नै बारी-बारी सर निरखी, पण वे कोई भेद दोनूँ में नै कर सक्या। अठैं तक के दोनूँ रै होठां गी मुळरुण, नैरां घर मुखड़े रा भाव बी साथे वे ही। वे इत्ती फुरती भू निजरा देवी घर यमोधरा रै बिचै घुमावता रया के इरा क्रम मे वे आई भूल बैठे के किसी जह मूरत है, घर कुण चेतन पूतली? वे चितरचना रहेया। हळक सूखग्यो, सासां रो वेग बधग्यो, वे हांफण लाग्या। लिलाड माथे पसीर्न रा मोती उभरग्या। दिमाण, सोचण बी अवस्था त्याग जह रहेगी। जवान, मांय री माण खीचीजणो सरु रहेगी। वा नै लखायो के वे हमें नी घरती माथे है नो आभे मे। वे घर मे भूलग्या है। कोई वां नै मार नै नाखग्यो है। वे बोलणी घर सोचणी चावता। पण खुदरी भोलखाण बी भूल बैठे। वे बघाटी खाय ज्यूँ ई घरती माथे गुड़ण लागे के यसोधरा रा कोमळ हाथ, वा नै साम्म लिया। यसोधरा आपरै आपळ सूं वां रै हवा करी घर पाखती पड़ी भारी मे सूं गगाजळ रा छाटा दिया, वा रै गळें मे गगाजळ उतार्यो। थोड़ी ताळ, राव बेसुध फंकेडियोई क्यूतर दाई, यसोधरा रै खोळें मे चिपियोडा रया। जाणे डाकण भू डरियोडी टावर सासां रोवयोडी मां री गोदी मे छिपनें, दुबक ग्यो है। जद वां नै चेतती आयो तो यसोधरा गळगी व्है, आपगी साथे पेली बाळी जागा कमी रहेगी। ये, मजतोई देवी घर यसोधरा मे कोई फरक करण मे सिमरय नी हा। वां रै मूण्डे सूं बीत ई दोरी निकळियो 'य...सो...ध...रा...'। यसोधरा घर देवी री मूरत दोनूँ मुळरुण लागी। राव कवळपूजा री बात बिसर नै इरा दुवधा मे मळूमरया के दोनूँ मे सूं किसी मां है घर किसी नेह री नाव? अेकर फेरु ई री भेद लेवण सारु, वे पलकां मूग्दी, संग इन्द्रियां नै बस मे कर, चित्त नै अेकाग्र कियो घर तीजो घालि सूं भोलखण री केरटा करी। पण वारा ग्यान, ध्यान घर तरक, संग, फीका पड़या। हाड मांस री अेक पूतली, वां रै माथे ऊपर सवार रहेगी। यसोधरा, यसोधरा, यसोधरा; वा रै हं-हं मे फुरकण लागी, वां री अेक-अेक सास मे यसोधरा घुलगी। वा री बुद्धि, वां नै घर मे लटकाय विलुमगी। विवेक जाणे कुण खोस नै लेयग्यो। पण कुळदेवी तपो सारु वा री धंदा मे कठई फरक नी आयो। ई वारत ई वा नै कम सू कम ई बात गी चिन्ता जरु रहेगी के साथे मन सू देवी रै घरपण रहेण री कामना राकतां यवां बी, वा रै मन मे ससार गी मोह कठे छिपियोडी हो? स्यात आदमी जद अणूतो मरजादावा रै निभाव मे आपरी मंसावां नै दबाव ऊपर दबाव देवतो जावै, तो अेक दिन या तो वो आदमी दूट जावै या पछे ई दबाव सू, अेक अेड़ी घमाकी व्है के सारी मरजादावां रा किरचा-किरचा व्है जावै। ससार घर समाज री मरजादावां री पखघर, खुद यां मरजादावा रै थोथेपणे नै उजागर कर, समाज नै घरपण कियोडी आपगी ममोसियोडी मंसावां री बढली लेवै। छोलियोई तीतर दाई, वो ठड़फती जरु रैवै, पण जदली लेवण री बी री भावनावां घर

उड़ण री मसावां मरै कोनी । ई भांत रै उलटै-सीधै तरकां रै जजाल सू मुगत व्हेण साहू वे घापरी भातमा नै फेरुं टटोलण री कोसिस करो, पण जद भावनावा भर पिरतल री मेळ व्हे जावें तद भातमा री दगसण, फीकी पड जावें ।

यसोधरा ! देवदासी ? यसोधरा अक श्रेष्ठ कलाकार ? यसोधरा ! नेह री नाव ? यसोधरा ! दुख री दरियाव ? यसोधरा रूप, जोवन भर कोमलता री सरूप ? यसोधरा ! जुद् री प्राग मे भुलमियोडी भर मसोसीजियोडी अक भातमा ? यसोधरा ! गंगा रै जळ सून निगमळ भर पवितर ? यसोधरा ! देवी रै रूप, दया भर माया री दरपण ? समरपण री जागती जोड, मंसावा नै मार नै विजोग री प्राग मे बळती मारवणी री भून । जाणै किसान-किसा धर्लकार भर उपमावा यसोधरा सामी फीकी पडगी । अंडी यसोधरा भर राव विजयराज री संसर्ग अक नुवें लोक नै जलम दे सकती, पण विजयराज सून भिल्लियां पैसा ई वा देवी रै चरणां मे चड चुकी ही भर देवदासी बणामी । यसोधरा प्राज जीवण री अक मातर, साच है, अक मातर ययाज्ञ । वा नै पाद घाघी कै रिपि विद्वामित्र री मंनका भायै मोहित व्हेणी समाधी नै तोडणी, भगवान मंकर री मोवणी रूप मायें दुळणी, जीवन री साच हौ । यसोधरा मे मदल्लिक्ये जोवन री चचळता ही । मरद री हिवडो छळण री चुतराई भर चपळता ही । यसोधरा रै रूप भर जोवन में देवतावां रै समय नै बी ललकाण जोग सिरमय ही । बी रै नैणां री घबळीण भर वां सून भगती नेह, किल्ली री बी मान भर गरव हुळावण जोग ही । विजयराज कनै सत्ता ही, रूप भर जोवन ही, सूरता रै साथै ई तीखी बुद्धि ही । पराक्रम रै साथै ई तेज ही, नेह रै साथै ई निष्ठा ही, आस्था भर समरपण ही, हठ भर निबळाई ही भर भोग-विलास रा संग साधन भर सुदवावां ही । वा मे सिरमय रै साथै ई सगती ही, नगर री घाघी सून जादा सुगदां वा ऊपर जोव हुळावती ।

X

X

X

पिरतल में ती यसोधरा रै हाव-भाव सून राव विजयराज साहू कोई लपाव कै सोम, कठ ई नी लसावती, पण पैलपोत राव रै सामें निरत करता हुयां जद बी बी री निजरां, राव री निजरां सून भिल्ली ती बी रै सरीर मे थडथडी छूटण लाम जायती भर सांसां री घडबळां, जांभरियां दांई अणकार करणी सरू पडे जाती । बी रै सरीर मे अक उजब उद्रेग सी भर जावती । राव बी साथत यसोधरा रै सरीर री ई उदबुद भाषा रै अक-अक घाघर री भरव समझ लेवता भर वां रै सरीर में बो, ई प्रग्य री उधेळी देवण साहू गरमास वापर जातो ।

यसोधरा रै भावां मे समरपण री व्याख्या ही, क्रिया नी प्रेम नै घरवावण री घाढी, बी रै सामें उलझ जावती भर घाढी री भरव अणुसमझी ई रै जावती ।

वी रं मन ॥ स्वामी श्री सारू प्रयाग थहा ही । राव सारू वी रं हिये मे काई ही? इ नें रं मोचणी, समझणी घर घण्ट करणी मे भवसाई ही । स्वामी श्री गे मनेह, घाचरणें घर तपस्या री तेज, यमोधरा सारू लिछमण री कार ही । देवी री घरचना, पवितरता री पांसां फेलायोही, वी माथे छंवां करती घर वी नें इस्मरण कराती रंती, कं छंवां छोड, तावड़े में गई नी, घर बळ जावेली, कुम्भळा जावेली वा देवदासी बण चुकी ही । वी री घराधना, जीवण री भोग, नेह री नागर, सिरफ देव रं घरपण व्हेली ही । वी नें देवी री घराधना ये ई जीवण री सुख सोधणी ही । समार रा मुखां सू, वा नी ती प्रणशांण हो नी विमुख वी व्हेली चावती । समय; साधना री मारण जरू ही पण ईष्ट नी । जीवण नें रूखी राकणी; वी नें पणी प्रसरती । वा मुलतान री राजकवरी वी ही, ई बात में वा बिसरी कोनी ही । ई सारू राव विजयराज कानी, वी रा संस्कार खीच नें मे जावता । समय री घांच सू वा, मांय री मांय भूमूभती । वा तिरमी ही, अतिरपत घर बिना कोई ठाये-ठिकाणी, वातनावा रं रामदर मे छोडियोही घेडो बिस्ती ही, जकी छछाळा रं समचे घाय नें किनारां सूं टकरीजती, सोफाण मे भव जाती, केरू किनारां सूं टकरावती पण वी नें, उबारण सारू बोई तिराकू, कठे ई निजर नी घावती । स्वामी श्री री मानखो, ई किस्ती नें, ई रामदर री छोळा मे छटपटावण सारू दबावती । मगदूर हे कं कीई रोवइयो कं तिराकू ईं मे बीचबचाव करे ? घा ई ती स्वामी श्री, वी नें सरूपोंत मे दीक्षा दिवी ही नी भोग-विलास री सारी सामग्री, वातावरण घर साधन व्हेतां यकां बी, वी नें उण शीकली घई दाई रंणी पड़सी जकी तिरसा सोणां ऊपर पाणी चढेलें पण रुध तिरमी ई रेवें । स्वामी श्री रं खुद रं रूप, तेज भरूयें चैरे, अणयाग र्मान घर समय सांगी यसोधरा री घबोळी कामनावा, ममोसीज नें तिसकती रंती । पण भावनावा रं पनाळा-मुखी रं फाटण री नी, वी नें बण्णी रंती । वा पयभिष्ट ती व्हेली भावती, पण जीवण री अपूरणता मे अंक खोलळेंपण री सलाध, नी नी क्षायीं आतो । वा जलम सूं राजकंवरी ही, देवदासी नी । राजकवरी सू, वेगवासी बण, भा भगती घर घराधना मे जीवण री सुख हेरण तारू निकळ पड़ी ही । गुपती री माता, नी नें मुलतान सू खीच नें तपोट तक सिघाई ।

×

×

×

राव फेरू बोसण लाग 'देवी यतोधरा ।'

'देवी नो राजन् ! दासी । देवदासी । देवता पुरख, भाटी राजा विजयराज रं चरणों री धूस ।'

'की ? की की कंवई ?'

'म्है, ठीक ई कंवू राजन् ! घाप मारेळ पाती भिन्न विमी, नीं सूं ग्हाई काई फरक पड़्यो । म्है ती मन ई मन में अंक देवता रं चढ़ चुकी ही ।'

“माँ तभी साची माता थीई ! साचै मन सून कियोड़ी पूजा घर भगतो रो माँ, परचो भवस देवेई ।”

“मा म्हे जालू राजन् ! ईं सारु ईं तो मुलतान छोड़ैर.....”

“मुलतान ?” राव चोड़े अचूम्बे सून बोल्या :

“हो, राजन् ! मुलतान सून ।”

“मुलतान रा सर्गा, सून तो मौमजा, बेरी थीई, पण देनी मसोघरा ! आप माटी राज री सत्कृति रै घरब नै बघावण मे जकी संयोग दीपीई, वो पूजनोक थीई ।”

“राजन् ! धरती री धूड़ नै माथे चढायां सून, वा, बिगो काम री नी रैवै । धूड़ जद तक धूड़ रैवै तद तक वा सौं कोई रै पग टिकावण री अघार व्हे, पण माथे चादियोड़ी धूड़ नै जेजण री सामरथ बी धरती मे ई व्हे बस धरती मे ई ।”

“देवी ! आप ओक बल्लाकार इज नी पण गुणवान भर ग्यानी बी थीई ।”

“नी राजन् ! ओ आपरी मरम है ।”

“मै मौमजी आतमा सून निकलियोडा बोल थीई, देवी मसोघरा !”

“आतमा तो दगो बी दिया करै, राजन् ! बयूं के आतमा रा पणकरा निरणी बी सरीर रै पल मे ई दिह्या करै, जो सरीर मे आतमा री वासी व्हे ।”

“ओ आपनै मरम थीई देवी ! दगो, आतमा नी, मन घर नैण दिया करै ।”

“जद म्हे चावूँला राजन् ! कै आपरी आतमा, आपनै घोली देव ।”

“देवी ! आप म्हेनै समभण मे भूल करीई ।”

“आप घड़ी-घड़ी म्हारै नांव आपनै ‘देवी’ ओडैर मनै छिछा जोग बयूं बणावी राजन् ?”

“हां, देवी ! जे म्हेनै ओ इधकार व्हेतो कै म्हे आपनै बस यसोघरा ई कैर बतला सकतो ।”

“माटी राज रा सिरे भीड़, भर लभर भर ग्यान मे मोटा व्हेणै रै कारणै ओ इधकार तो आपनै है, राजन् !”

“ओ ईं तो मौमजी दुरभाग थीई कै म्हे राजा हौं । प्रजा री पाळणहार, व्हेणै सून म्हेनै रोग माणसी, राजसी, घरम भर समाज री मरजादावां मे बन्धियोड़ी रंजणो पड़ेई । खुद रै मन री बाठ बी कियो नै बतावतां सकी भर पढो राकणो पड़ेई ।”

“ओ तो धारो त्याग है विचयराज....., राजन् ! बिमा करो । सेवट तो लुगई जात ई है । बोली भर करमां दोम्पू सून दोतोतो ।”

‘नी यमोधरा ! जोकारे अर राव रे सम्बोधण सूं म्है बीत भारी व्हे जावूं । तू कारे मे जको रस ओई, सनेह अर अपणायन ओई, वा जोकारे मे केत ?’ मंडी लागे के जीवण मे पैलडो बार, म्है धरनी माये ऊभो हूं जीव करे के ई अके तू कारे ऊपर जीवण निछरावळ कर हूं ।”

“जीवण तो बीत प्रमोल है. राजन् ! जीवण ई सबसूं मोटी साच है । जीवण ई रस है, जीवण ई चेतन अर गत है । जीवण री गत मे ई, ई री रस है । जद तक जीवण है तद तक ससार है, सं की है । ई वास्त ई राजन्, आपनै म्हारी प्रज है के इया प्रमोल जीवण नै यूं खतम करणी ठीक नी । घरम, संस्कृति, धरती, मुलक, जाती, संग जीवण वा आधार है । या माये जीवण ऊभो है । जद प्रे खतम व्हे जावै तद जीवण आप ई खतम व्हे जावै । पण जद जीवण नै ई खतम कर दिवो जावै तद प्रे सारा आधार कूड़ा पड़ जावै । जड़ व्हे जावै ।”

“अर आ क्यूं नी यमोधरा, के जीवण री आधार तामजे सरीखी अके देवी, देवदासी, कळाकार अर लुगाई जात बी ओई ।”

“म्है तो राजन् ! अके नीच अर अधम लुगाई जात हूं ।”

“म्है समझ चुकी हों के देवदासी रे रूप मे, आ अके राजकंवरी बोलई । मुलतान री राजकंवरी ।”

“राजन् ! म्है आपसूं की नी छिपावूंला । कैवूंला अर जरूर कैवूंला, राजन् ! यमोधरा आपसूं नेह राखे । यमोधरा आप माये आज सूं नी, बरसां सूं प्राण निछरावळ करण री हूस लियोडी बैठी है । आपनै याद व्हे तो मुलतान सूं म्हारी, आपसूं सपणण करण सारू, अकेर नारेळ आयो ही, जी नै आपरै पठे सूं पाछो भेज दिवो । यमोधरा तो बी दिन ई मर चुकी ही । सोभाग सूं के दुग्भाग सूं आपरी ई छनरछपा मे देवदासी बण, जीवण री जीत जीत जागती राकण री मोह, पाछी जागयो । यमोधरा तो जुहू री ‘लाय सूं’ बळती धरती री कूँल रे परस सूं ई मर चुकी ही, जद के वा मुलतान मे हजारों बेकसूर मरदां, लुगाया, टाबरा इत्याद नै मरता देख्या हा । राजन् री नेह, म्हारे जीवण री आधार बणग्यो अर पठे बी जुहू री इए प्रलंकारी अर विकराळ विनास सीला नै रोकण सारू, यमोधरा री काळजी बळती रैयो । पण वा जीव भरने, री बी नी सकी । हर घडो ओ ई डर हो के इए रोवणे-वळपणे सूं पूजा मे विघन नी पड़ जावै । घरम, संस्कृति अर धरती लागे लुगाई जात बी जीवण री आधार व्हे । पण यां नै बचावण सारू जुहू ई जरूरी व्हे, आ कम सूं कम म्है नी मांनु । जद जीवण ई खतम व्हे जावै तो आधार री रैवणो नी रैवणो, की मंत नी राके । जठे जीवण हे रठे आधार तो आप ई वनव जाती, पण सासी आधार मे, आ सगती कोनी के वो जीवण नै पैदा कर सके । वो जीवण नै

पाळ सकें, रुसाळ सकें पण पैदा नो कर सकें । यसोघरा उण जीवण री रवसा खातर रोई हो राजन् ! जद कै मारे गढ में जुद् रो झूत सवार हो । यसोघरा आपरें नेह रें जोर सून बी जुद् टाळण री उपाव करती, पण स्वामी थो री तेज घर ताप ई सताप नै दबा दियो । यसोघरा आपरें हिवई री कोर नै साण्डो कर, उडतें मन पाखी री ओक-ओक पाख खुद है, हायां सून तोड़ फंकी । बस ओक ई कामणा, जीवण री बचियोडो घघार हो कै आपरें चरणां री घूड़ बण नै नी तो कम सून कम घावरी छयां रें परस सून ई जीवण री गरमास घर मोठास सनोवती रेंवू । मा तन्नो री किरपा सून घाज घावसू मिलणी रहे ई गथो । म्हारो जीवण भाज घापसून दो बातां कर पूरण व्हेगो । हयें कोई कामणा बी मन में रेंवी कौनी । जीवण मे, जिए चीज री लगन ही घर जितो कुछ बी प्राप्त व्हेण री ओग ही बी सून घणी संजो लियो । हमें जीवण री झूळ तो हासल व्हेगो, भाज री कोई इच्छा बी नो हो, नो है । ई वास्तै जे आपनै कवळपूजा करणी ई है राजन् ! तो ल्यो, म्हारो माथो हाज्ज है, देवी नै घरपण करदी । ई सून बडो सनमान तो आप मनै महाराणी बणा नै बी कद ई सकता हा ? आपनै झजूं घणी जीवणी है राजन् ! राजा घरतो री कृताळ व्हे । मुलतान री राजा तो मिाट व्हे चुको है । यवन, पञ्जाब नै बी तेंस-नैस कर छटै रें गरब नै गाळ दियो है । आप घोर ओधा हो । बुद्बिान, राजनीतिक, कुतळ राजा घर दयालु दाता हो । ई वास्तै, ई मुसक मे आप ई ओक जागती ओत हो, जी सून ससार सै चन्नण है ।

यसोघरा, आपरें चरणां री घूड़ मार्ये ऊपर चढाली है । आपरी नेह बी नै मिलियो । भर बी नै काई ओइर्ज ? सुरग तो बी नै छटै ई प्राप्त व्हे चुको ।”

“देवी यसोघरा ! आप म्हैनें मीमजा बचना री पाळण करण सून रोकनै, ठीक नो करीई ।”

‘म्हारा देवता ! काई आप घा चावो कै आपरें बलिदान पछै यवन, मळेंछ घर बाराड, ई घरती मायें बिनास करण सारू बब जावै । आपरी यसोघरा री मीळ भंग कर नै, यवन बी री जीवण बरबाद कर दै ?”

“देवी यसोघरा !” राव विजयराज री माथो पाछी चकरावणी सरू छेवो घर वे नुंवी उलमण में झळूमण ।”

“हा राजन् ! सारा हिन्दू राजा आपस रा राग-द्वेष घर कुळ नी पोधी मरजादावा सारें यवनां री इमदाद करै है । ये ई यवन, यां सोगां री इमदाद सून घापो रें धरम, सत्त्वति घर सुतन्तरता मायें धाडो पाट्टे घर भापां नै छूटै । इतो वास्तै मुसक कमजोर व्हेयो है । जीवण री मोल कौडो सून बी गथी-बीती व्हेयो है । ओक-ओक जुद् में, हजारों मड़द-मुगायां मरै, सूटीजै, यां री मरजादावां सूटीजै, धरम

मष्ट म्हे घर इतियास पोडियो री जीवण बरबाद करण सारु, यां पादायां सूं रगीज जावं । इणो जुद् में संग, वाराह घर दूजा रात्रपूत सोम, घापरें गिताफ भेक विधरमी घर विदेसो गुलतान री पय तियो । बी री इमदाद करी । घासिर क्यूं ? क्यूं नो घटे री ई कोई राजा यां लोगां नें येक डोर में बांध मर्क ? विदेसो घर विधरमी सूं तो जादा नजोक गी गिस्तो घटे रा रेवासियो, घटे रें धरम, सत्कृति, घरजादायां घर घरती री है । घाव में ऊजळो तेज, पराकरम, बुद्धि, राजनोतिक पोठ, मानवी घर समदर सूं बी गेंरो हिहदी है । घाव यां नें येक डोर में बांध नें जीवण री, घापरी सारथकता री परघो दे सकी ।”

‘देवी यसोपरा ! जे घाव साचांणी मोमजी हेताळू घोंई, ती घाव येक मद्ध री भावनायां नें घाछी तरिया पैचाण सकोंई, खास कर नें बी मद्ध री, जकी खुद घापरें मेह री बग्दी घोंई ।’ राव नेंणां में उग्माद भर बोल्या ।

“राजन ! म्हे घापरी भावनायां नें सिर-भास्यां ऊपर राकूं घर यां री धुरी सनमान करूं, पण म्हारें कुळ री मरजादा री उल्लयण करण मे, म्हे बी सिमरयहीण हूं । संग घापरा दूसमण है । म्हे संग री कवरी हूं । काई घाव समस्यो कें घापसू व्याव कर नें, म्हे सुखी रें सकूंसा । म्हे राजपूत कन्या हूं । व्याव सूं पैसा समरपण करण नें रघार कोनी ।”

उसटो पासो फंकता मका राव विजयराज घोडा कठोर सुर मे बोल्या “ती पछें झूठी ई मेह री नाटक क्यूं रचा राखी है ? काई सूं बी थारें कुळ घर जात रें लोगां दाई पिरणा जोग घर झूठी नी घोंई ? म्हे सूं प्रेम री झूठी नाटक कर नें मारग सूं भटकावण सारु ई तो तूं येव नी भाई ? जाणूं ? विजयराज नें बी रें संकळप सूं डिगावण री सगती, देवतायां मे बी कोनी ।”

“जाणूं राजन ! आ मगती देवां मे कोनी । पण मिनसजण री, हाड-मांस री, भेक पूतळी मे जरूर है । पण म्हे घापने संकळप सूं डिगावण री नीत सूं नी, घापसूं भीख मांगण नें भाई हूं ।”

“कई भीख ? येक विखकन्या म्हे नें मने डसण री भीख मांग रीही है ?”

“म्हे, देवी तग्री री भीख मांगण नें भाई हूं राजन ! मुलक, देस, सत्कृति, धरम, समाज, जलमभोम री रक्सा री भीख । म्हे नी ती पय सूं विळग हुई हूं, नी घापने ई करणी चारूं । पण घाव खुद मारग सूं भटक रीया हो । घापने याद है ? घाव घटे, इणी ठोड़ येक दिन देस, धरम, संस्कृति घर मिन्दरां री रक्सा करण री प्रतिग्या ली ही ।”

‘हां ! उण प्रतिग्या नें पूरी करण रें साथ म्हे भी संकळप बी कियो हो कें यां री रुखाळी म्हियां, म्हे कंवळपूजा करूंसा ।’

“रुखाळी कठिं हुई राजन ! गढ हूट चुकी है । दुसमण आपरें मँलां तक पूग चुकी है । किणी पळ, वो घठें बी पूगण बाळी है । आपरी सेजा बिखरगी है । गढ मे बबियोडा भाटी सिरदार, जद आपनै नी देखेना, ती वा मे वा सरदा, हीमन भर भगती कद रै सकैला कै वे ईं मिन्दर री भर मां री मूरत री रुखाळ कर सकै ? ईं बिळिया कंवळ-पूजा करणी अचरम है. कायरता है. अणसमझो है हीमन हारणी है ।”

“बस, यसोधरा, हमें की मत कै । मौमजी भायो चकरावई । म्हैनें की नी सूझई ।”

राव नै फेरुं चक्कर आवण लाग़ा भर वे जमीं माथे खुटका लाग़ा । पण यसोधरा, वा नै आपरी नरम कळाइयां रै सारें सूं थाम नै आपरी गोदी मे वां री भायो धर, आंचळ री हवा करी । वा फेरुं बोलणी सरु व्ही—

“राजन ! बस आप भर आप मे ईं वा सगती है कै या सँगां सू भिड सकी भर दुसमण नै मात दे सकी । आप मे वा बुद्धि है कै आप जुद् नै टाळ बी सकी । आपनै जीवतो रैवणी है राजन । यसोधरा सारु नी सही, आवण बाळी पीडिया सारु कै वे जुद् री भाळ सूं नी मुळसै । प्रेम री संभार बसावै, भर दुसमी नै मनेह सूं जीतण री सामर्थ्य सपना सकै । राजन ! थोक बात थरुं बता दूँ कै सबळ थिह्यां ईं सनेह री जीत व्ही । सबळ सूं सँग डरै । ईं वास्ती सुलै करण री गरज, वा नै रैवै । समळ व्हेणी ईं जुद् टाळण री उपाव है, समरपण तो आत्महिंसा है । आपरी भी बलिदान आत्महिंसा ईं नी पण सँगां री भेळी हिंसा री परपाव है । अणजलमी पीडियां री बी हिंसा री अपराध ।”

“यसोधरा ! तूँ म्हैनें आज मात देदी है । म्हैनें धरम-सकट मे पटक दियो है । म्हैनें काई करणी जोइजै, काई नी, आ सोबण-समझण री सिमरण बी तूँ छोस ली । म्है गजनी रै सुलतान सामे नी पण तांघजै सामे हार कबूल करुं । इण रै पैला तूँ सिरफ मौमज मन पर मोह नै जीत सकी ही, पण आज तूँ, म्हैनें पूरण मरद नै जीत लियोई । बुद्धि, तरक, विवेक, आत्मबळ सँग तांघजै सामे सस्तर पटक नै, हार मानली ओई । अवे तूँ ईं म्हैनें मारग बता । तूँ ईं बांनणी कार ।”

“राजन ! इतो भारी बँम पाळनें म्है जीवतो नी रै सकूँला । म्है काई हूँ ? आ म्है खुद भाखी तरिया जाणू । स्वामी भी तूँ म्है ओ ईं गुण हासल कियो है कै खुदने ओळख मळू । देवी तप्री री धा ईं मसा है, कै आप जीवता रैवो । संग देवी राजावां सूं धार येळ करी । वाराह धर लवां नै बेलो बणावो धर हमेस सारु विदेशी रा, इण मुत्तक नै जीतण रा मनसूबा माथे पांणी केरदो । आप आपरी तागत पडावो, कुमळ राजनीत सूं भौम पाडोसिया सूं भाइयो करी भर जुद् री हमेम-हमेस सारु बाळी मुण्डी करी ।”

“पण मोमजी संकळप ?”

“हां, आपरो संकळप, लो ! ई नै फेरुं मजबूत करो ।”

आ कैर यसोधरा आपरें चूडें मांय सूं भेक चूड उतार नै राव विजयराज रें हाथां मे खुद रें हाथां सूं पैराई भर बोली “इण चूड नै अंगोकार करो राजन् ! भाज सूं आप चूडाला । आ चूड म्हारी सवाग है, आ चूड छिन्टी रो भादि-भत है, आ चूड जीवण रो परघे है. आ चूड सारी मण्डळ है, आ चूड ई गत है, आ चूड ई चेतन है । चूड ई चमण्ड भर चूड ई घरती रो रूप है । चूड, बळ घर सनेह, मर-जादा घर सनमान, गरब घर समरण है । म्हारी तपस्या घर सतीपणी आपरो खाली करेला । आ चूड आपनं मस्टपीर आपरें संकळप रो ध्यान दिरावती रेंवला भर ई रें सार्गे ई, कदैई जे दासी रो बी ध्यान आजावें तो नाराज मत व्हिया । बी नै सिमा कर दीजी ”

“देवी यसोधरा !”

“राजन् ! आप फेरुं मर्न देवी.....”

“हां यसोधरा ! तूं यसोधरा नी, देवी भौई । मां ! तांअजा काई-काई रूप भौई ? मा, तूं घट-घट मे बिराजै । मां, म्है रैनं की-की नांवा सूं पुकारुं ? तन्नोट राय ? यसोधरा ? यसोधरा ? तन्नोट राय ?”

राव, पूरा भावुक रहे चुका हा । यसोधरा रें नेणां सूं इत्ती देर रुक्योड़ी मांसुवां रो मोटी, पलका रा बान तोडेर बैवणी सरु व्हेय्यी । थोड़ी ताळ, दोन्यू बिर्खे सुनियाड वापरणी । मून रो मालर तोडती यसोधरा बोली—“राजन् ! आप पघारो, ठूणो जोस भर होमत सूं दुसमण नै मार भगावो । आप जद जीत नै पघारोला, बी दिन, यसोधरा आप सूं ब्याव रचावैला । बी दिन, म्हारी सवाग रात व्हेला, बी रात आप कवळपूजा करीला भर म्है सती व्हेला । म्है उमर भर आपरो बाट जोडूंला राजन् ! उमर ई नी, जलम-जलम तक जोडूंला ।”

“देवी यसोधरा ! म्है आपनै. मा रें रूप मे देखी भौई । मा रें रूप मे ई आप म्हैनं ग्यान दिया, मोमजें ह्रिदई रा किदाइ खोल दिया । म्है इवै नी डिगूं नी डिगूं । इवै तूं मां भौई । मा...मां...मां...”

गरमग्रह मे मां-मां रो लखां घुनिया भूजला लागयो । राव, तलवार सूं आपरें अंगोठें मार्थे चीरो लगायो । लोई रो धार फूटण लागी । राव बीं लोई भरथे अंगोठें सूं यसोधरा रें तिलक लगायो भर माथो निवाय, सारी भगती उठेळ दी । देवी तन्नो रो मूरत सूं मुळकण रा फूल भरण लागी ।

पांखी स्पात स्तुती मारु आपरो संगीत छेड दिया । दूजा मन्दरा रा टिकोरु

शेक सागे, तन्नी राय रे मिन्दर रा टिकोरा सार्ग सुर मिळाय बाजण। सरु व्हेगा ।
गाया घर बाछड़ा रम्भावणा सरु व्हेगा ।

पूरब मे भाग फूटी घर सोने रो मिरगी, बन्वणा तुढाय भाग छूटी । च्याहूँ
मेर हवा मे सुगन बापरगी । राव विजयराज न परम आनन्द सविदानन्द रो अनुभव
विहयो । वे नैण मून्द न बी आनन्द रस मे ह्वयोडा हा । जद भाक्ष्या खोली तो देवी
रो मूरत नी ही ।



(३२)

राव, ज्यूँ ई गरभग्रह रो किवाड़ खोलियो घर शेक कटियोडो मापी, माय
नै उछळ'र घायी । सार्ग ऊभी सिपाई, बी माय नै ठोकर लगाय उछाळघी ही ।
कपाट खुलता ई चार सिपाई राव कांती अपटिया । श्री सारी इतो वंग मे विहयो क
राव, इचरज मे पढ़या । वा रे हाथ मे लागी तलवार धजूँ ही, वे शेक-दो बार तो
बचाया घर पछे भूछे सेर दाई, यां च्याहूँ सिपाइया मायें दूट पढ़या । यमोधरा
शेकांती ऊभी, घग-घग घूजती ही । वा भीत रो सारी सेवण ज्यूँ ई हाथ, भीत रे
नैड़ी लेजावण लागी घर शेक तलवार बी रो बांव नै चीरती निकळगी । बी रे शेक
बोव रो लोयी, बच करतो भांगण पड़ियो घर बांव, लटकगी । लोई सून बी रो सारी
देही भरीजगी । वा बकराय नै नीवें पढ़ी । ई बिच्वे दो धूँडकिपां सिर चुकी ही ।
सारला दो सिपाइयां रा सरीर बी जागा-जागा सून घूवण लाग्या हा । राव रे
सरीर मायें बी पाच-सात घाव व्हेया हा । शेक हाथ सून, वे सीने सून नैवत लोई रे
हाची दियी घर दूर्जे हाथ सून तलवार चलाता रैया । राव रो तलवार रो तीखी घर
घर पलटमी मार सार्ग, सारला दोन्यूँ सिपाई बी नी टिक सकिया । वे जीव बचाय,
उठे सून भागण लाग । पण राव रो तलवार सून शेक रो सरीर फाडो व्हे ज्यूँ
व्हेयो घर दूर्जोई रो टांगा लटकगी । वे दोन्यूँ देवी रे भागणें लुटया । हमे राव
गरभग्रह रे माय पडिये-मायें नै हाथ मे उठाय, ओळखाण करी । स्वामी श्री रो घड
बार पड़ियो ही । राव शेक छिन सारु नैण मून्द स्वामी श्री रो इमरण क्रियो । वा
रे नैण सून मोत्री सिरम्यो । इत्ते मे निरा सारा भाटी सिरदार भाय पूग । राव, वां
में सून दो सिरदारां नै स्वामी श्री रे सरीर रो रुखाळी रो मार सून दियो । गरभग्रह
माय सून टसकरु रो उवाज सुण, राव माय नै गया । राव रे हुकम सून प्रथमरी
यमोधरा रो उपचार, तीन सिरदारां नै सून दियो गयो । स्वामी श्री सारी मोह त्याज'र
राव, मारला भाटी सिरदारां नै साथ सेव, मिन्दर सून बार नीतरपा । जे मां तप्री
रा बोव घूजण लाग । राव घर भाटी मिरदार, गड में घुसियोडा यवन निपाइयां सून

जुझता रँया । भाटी सिरदार, राव नँ उपचार भर आताम करण सारु ताकीद की पण राव बिणी री नी मानी ।

सुलतान बड़े चाव भर उमाव सूँ गढ़ में घुसियो पण गढ़ तो खानी पड़्यो हो । सेनापति भर पूनम री कोई बावड़ नो हो । सुलतान मौल में घुसण सारु मौल री भीतां बो धुडवा दी । पण उठे बी नँ नी तो खजानो ई मिलियो, नी राव ।

सुलतान नै हण बात री थणी अफसोस भिह्यो कँ इत्ती मुसीबता नठायां पछे बी, बी रँ की हाथे नो लागी । राजा सूँ बी बी री मुकाबली नो रहे सकियो । सुलतान रा सारा सुपना चूर रहेगा । बी रा सिपाई बी, किले रँ खाली दूँडां मू भचीडा खाय प्राया, पण वा रँ हाथे की नी लागी । पैला रँ छूट्योइँ घन-माल में सूँ पाँती करण सारु, वे सिपाई, सुलतान नँ ताकीद करी । वे लोग दूजै ई दिन उठे सूँ जावण री भैलाण कर चुका हा ।

रात सुलतान री फौज रा तीन चौथाई सिपाई गढ़ सूँ बारै जावण सारु नीचे उतरया । प्रौळ माथे घूमता ई जोर री मार-काट मचगी । केई सिपाई मारघा गया भर केई भाग छूटा । की सिपाई हड़बड़ावता सा पाछा भाग नँ ऊपर प्राया भर सुलतान नँ खबर की ।

सुलतान नै आपरै डेर में पड़्यो खजाने री ख्याल प्रायो भर बी री काळजी, आ सोच नै बैठयो कँ जरूर लंग भर बाराह खजानो छूट लियो रहेला । वो फुरती सूँ खबर लेवण सारु अफमरां नँ दीड़ाया । पण वे तो सुलतान नै लाय नै कोई दूजी रक्की ई दियो । गजनी सूँ समंचार, लेय नै हलकारा प्राया हा । गजनी माथे, काशगर री तुरक राजा इलेक खा, हमली कर दियो हो । गजनबी नै घोरां मे फँस्योड़ी जाण, इलेक खां गजनी माथे बढ प्रायो । जीत नँ पक्की करण सारु वो चीन रँ कादर खां री इमदाद ली । वो जेहून (आक्सस) नदो नै पार कर, तोफाण रँ बेग सूँ प्रागे बघ रँयो हो । वो पुगांणै बैर री, बदळो लेवण सारु मोकँ री ताक में ई हो ।

गजनी माथे इलेक खां रँ हमले री खबर सुण नै, सुलतान रँ पगां हेटली धरती खिसकगी । वो समझ्यो कँ हमें बी रँ छोटा दिन घामग्या है । वो अफमरां नँ हुकम दियो कँ फुरती सूँ कूच करण री तयारी की जावै । ई समंचार सूँ बचिया-खुचिया भाटी सिरदारां री हीसली बघ्यो । भाटी सावचेत रहेगा । वे पैला तो सोच्यो कँ किले मे ई जग करू करदे पण पछे, वां, तँ करी कँ गढ़ सूँ बारै निकळिया पछे ई सुलतान माथे हमसी कियो जावै । गढ़ री प्रौळ सूँ सुलतान री बारै निकळणी मुसकिल रहेगी । चार घटां री भ्रमसाण रँ पछे, दो किले सूँ बारै निकळ सकियो ।

ध्यातु मेर मार-काट मच्योही ही । मुनतान नं तो गजनी जावण री उतावळ लागोही हो ई वास्तं वो कियो तरें सू भेस बदळ नं उठें सू जान बचा नं भागी । वो रं पना तो भागण वाळा नं भाटी नो छोडिया पण घोड़ी ताळ सू ई वां नं पत्ती लागी कं सुलतान बी भेस बदळ नं मागयो है, तद वे वो री पीछो करता घली दूर तक सारें गया । माग्य म सुलतान री जिकी बी सिपाई धकें पडियो, बी नं वे घरती मायें बिछावता गया सुलतान री सारी फौज एतम व्हेगी । पण की प्रफमरा घर सिपाइया साथें मुनतान, जीवती भागण मे कामयाब व्हेगी हासाकें मुनतान मारग मे फोडा पाया । केई तकलीफां उठाई । कठें ई पाळो, कठें ई ऊंट मार्थे, कठें ई घोडें मार्थे, वो भूखी-तिरसो दिन-रात सफर तै करतो, सेवट भाटी राज री सोब सू जीवती भाग निवळण में कामयाब व्हेगी । बी रं साथ रा बी केई प्रफसर भूज, तिरस, गरमी घर सू सू मर खूटा । इतें भारी लत्कर नं सुलतान लेप नं पायो हो, पण जावती बिळिया वो, साव अंकली हो घर प्राणां री रक्मा दातर, बी कनै सिरफ अंक कटार ही ।

X

X

X

ई बिच्चें पूनम, राव रं मौल मे राव नं खुदरी जुगन रा समचार देवण सारु गयो तो मौल तैस-नैस व्हियोही खाली पडियो हो । जागा-जागा कटियोडा, हाथ-वर्गा रा किरबा, चीघ्योडा चढ़ घर कान कटियोडा माथा रुळना हा । जागा-जागा मांस रा लोधा घर लोई रा चिगदा हा । वो राव रं बी मौल मे पूगी जेत वो राव रं साथें दाख पियो हो घर वा सू बतळ करी । मौल रा किवाड माय सू जुडियोडा हा । वो किवाडा रं लात री मचकाई घर मांय सू जुडियोडी आगळ दूटयो । वो मौल में घुसियो । मांय नं सारी चीजां साथें ठोड ही । बी नं कद सू तिरस लागोही हो । वो दाख पीवण सारु इलमारी रा कपाट खोलिया तो बी नं मांय उतरता पागोतिया मुडायो । घेय ई राव री पीढण री मौल हो । वो मांय घुसियो । राव री पसरलियां ओष पड़ी हो । पूनम रं सरीर मे घोड़ी लो भरणाटी चाल्यो । अंक वंस बी रं मन में घुसयो । बी री माथो चकरावण लागो । वो राव रं पिलग ऊपर पड्यो । खासी ताळ गयां, बी नं चेतो घायो । पूनम भीत मायें खुदरी छयां देख चबरायग्यो । वो भीत मायें अंक मुझी मझियो । भीत खिसकगी । बी नं लागी कं वो, भीत रं मांय घुसग्यो है । वो चालतो रंयो । सेवट, वो बी मारग सू देवी रं मन्दर मांय पुग्यो । ओष, अंक लोष ऊपर राती मुगटो घोढायोही हो घर वो सिरदार, हाथ मे नागी तलवारां लियोडा, मून्डा लटकायोडा ऊमा हा । वो देख्यो, अंकांनी अंक चुगाई पड़ी-

पड़ी टसकती हो। बी रै पाखतो बैठा दो सिरदार हुवा करता हा। लुगाई रै सरीर सूं लोई मैवती हो। मोय सेगा रै जेरां भायै उदासी भर काळस देल, पूनम री काळजी धक-धक करण लागी। आणे कुण बी रै कान मे कैयो 'राव...हवै...नी...' बो नी...नी...नी... कर जोर सू बोबाड़ा किया। वो रीग गावा फाड़ लिपा। बेसां नै खांच-खांच ने गुच्छा रा गुच्छा तोड़ लिया भर हाथां रै जाया-जागा डाचा भरनै मांस रा लोया, बारै लटका दिया। मायै नै गरभग्रह रै तणखस सूं मचीड़ा वे वेनै भगनाळ खोल ली। ओक सिरदार बी नै समझायी पण वो भणवैत ही। थोड़ी जाल सूं जद बी नै चेतो भायो तो मन्दिर सूनो ही। दो पोताम्बर भागणे मे छीदा हा। वो दोनू पीताम्बर नै उपाड़ा किया। ओक पोताम्बर हेटै यसोधरा री लोय पड़ी ही। वो री ओक बोबी कट चुकी हो भर बी जागा बोय व्हेगी ही। पूनम जोर-जोर सू कूका करण लागी 'यसोधरा...', 'यसोधरा....' 'यसोधरा...'

"पूनम !"

"कुण मोई ? यसोधरा ?"

"यसोधरा नी, काला, म्है चम्पा हौं चम्पा।"

"है ?"

"हवै, चम्पा, हूँ, चम्पा मोई"

"तो यसोधरा ?"

"यसोधरा तो काला, कद की मरी।"

"हूँ ?"

"हवै।"

"पूनम !"

"हवै"

"का....ळ...."

"की ? केत ?"

"बो...बो...सांघे...दे खुणे...बीं खुणे...चीकेल'। हूँ, बीवाई।"

"काली व्हेगी, काई ?"

"काली म्है नी, तं व्हीई पया।"

"मो....म्हैनी की नी सूझ !"

पूनम भाखियां फाड़ नै च्चारां मेर खोजण लागी। बी नै की नी सूझतो, बी री भाखियां फाटी री फाटी रैबी। चम्पा बी री हाथ पकड़ र बोली—

"हड़ी करी...हड़ी...बी भावई।"

"की ?"

“काळ”

“म्हेने, को नो सूझे !”

“हाँ, पूनम ! ओ काळ नी चक्कर ओढीई दिहपा करे । ओ वातां में बितमाय ने मिनस ने खुद ने गिट जावे । हो को मिट जावे । पगल्यां रा संनाए बी । घासग रो ओळव मिटादे, ओ काळ !”

‘पूनमी !’

“पूनम ! म्हे इवें नो ठेर सकूं । मीमजो वादी पूरो दिहयो । इवें म्हे मेक थड़ी तो ठेर सका । तूं जा...तूं...जा...भागजा....!”

घर पूनम ने जद चेतो घायो तद तक बी रो ओवली प्राधी मरोर, धूड़ मे दब चुकी हो । दो हाथां ने बारें निकालण रो करतो पण बी रें चौकेरुं घुड जमा रहेण लायगो । बतुळियो, बावळो विहयोड़ी गोळ-गोळ घूमनी, पड्डें दाई । काळ रें चक्कर दाई । जद तक बी रें बाकें ने धूड़ नो दूर दियो तद तक बी सगोलग होट हिलावती रंयो । मेक घुनीविहीण बोव—

‘हूं काळ सूं को बीवांनी ।’

फस-फस कर, होठां सूं निकळण लागो । बी ने खुरै पगल्यां रा संनाए मिटता दीसण लागा ।

